ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता

जनवरी-फरवरी 2022, वर्ष 5, अंक 11

M.: 9999379393
9999614657
0120-4295518

CNS
Network Services

CompuNet Solution

COMPUTER MAINTENANCE
AMC
DOORSTEP SUPPORT
DESKTOP / LAPTOP
COMPUTER PERIPHERALS
PRINTER
TONER RIFLING

GF-38, COMPUTER MARKET (CENTRAL MARKET)
NEAR OLD BUS STAND GHAZIABAD - 201001

S.R Group

Shri Ram
Associates

बुकिंग मात्र
11000 में
पक्की रजि० दाखिल खारिज के साथ

K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559

FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू

2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू

FREE HOLD PLOTS
VILLAS | FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा

Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.

Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution

CNS
Network Services

Service
AMC

Email: support@compunetsolution.in | web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला
अशोक श्रीवास्तव (गाजियाबाद)
अनामिका वर्मा (भोपाल)

प्रकाशक आ संपादक

जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक

डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय
(दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)

सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
कुलदीप श्रीवास्तव (मुंबई)

तकनीकी एडिटिंग–कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र सहयोग

आशीष पी मिश्रा (मुंबई)

प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)
गुलरेज़ शहज़ाद (दक्षिण बिहार)
डी के सिंह (पटना)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्यगण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची), डॉ. हरेश्वर राय (सतना)

♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

• संपादकीय

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /5

धरोहर /6

• कहानी/लघुकथा/ रम्य रचना

अन्हरिया में अंजोरिया–डॉ शिप्रा मिश्रा पाण्डेय/7–8
दू गो लघुकथा– डॉ अशोक मिश्रा/8
मंडप–अंकुश्री /11
बड़हन बानर हिरोइनची–बिम्मी कुँवर/15
झगड़ा–जियाउल हक/15
सारधवा–डॉ सुशीला ओझा/16–17
पहिला प्यार–सौरव कुमार/18–19
महुआपर ठनका–जितेंद्र कुमार/20–23
टीस–मीना धर द्विवेदी/41–44

• कविता/गीत/गजल

नून तेल लकड़ी में फँस गइल जनता–
डॉ राम बचन यादव/9
मम्मी रे हमहूँ ईस्कूल जाइब– बिमल कुमार/9
हमार जोहार– सारिका भूषण/10
पान थूक के– योगेन्द्र शर्मा 'योगी'/10
नदी के लास बेहतर बा गुरुजी– सन्नी भारद्वाज/12
बचपन के दिन–नुरैन अंसारी/12
जीवन आउर मौत–कुमार मंगलम रणवीर/12
सबके पिया द सं पानी–आकाश महेशपुरी/13
बबुनवाँ बड़ नीक लागे हो–
जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/13
शुभकामना बा सबके–दीपक तिवारी/14
वसंत अइले नियरा–केशव मोहन पाण्डेय/14
नया साल–डॉ हरेश्वर राय/14
कहानी का सुनाई–मनोकामना शुक्ल 'पथिक'/29
चुनाव–ममता सिंह/36
बसंत–फागुन–डॉ अशोक द्विवेदी /39
गीत–सूर्य प्रकाश उपाध्याय/40

• जन्मतिथि विशेष

जुबान पर चढ़े आ दिल में उतरे वाला
कवि हईं कैलास गौतम–मनोज भावुक/31–33

• जन्मशती विशेष

एगो भोजपुरिया क्रांतिकारी सन्यासीः
डंडी स्वामी विमलानन्द सरस्वती–रवि
प्रकाश'सूरज/33–36

• अनूदित बाल लोककथा

सेनुरिया–शशि रंजन मिश्र/45–48

• अनूदित साहित्य

दुरजन पंथ–दिनेश पाण्डेय/28–29
महागलप–डॉ मुनि देवेन्द्र सिंह/37–39
चिरई जनम–कनक किशोर/40

• पुस्तक समीक्षा-चर्चा

भोजपुरी भाषा के पहिलका उपन्यास, बिंदिया–
विजय कुमार तिवारी/24–28

• उचरत हरिनंदी के पीर

अहम के आन्हर सोवारथ में सउनाइल–
जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/30

आपन बात

साहित्य अपना में समाज का संगे सभे के हित समाहित राखेला आ हरमेसा बढ़न्ति का ओर गति बनवले राखे के उपक्रम विद्वान साहित्यकार लोग करत रहेलें। अइसने कुछ साहित्य जगत के मान्यतो ह। बाकि हर बेर ई सही ना होखे। कई बेर एकरा से उलट होत लउकेला। जान–बूझ के भा इरखा बस कवनो नीमन चीजु के अनदेखी कइल, उहो अइसन लोगन द्वारा जेकरा के हद तक मानक मानल जात होखे, ढेर बाउर लागेला। अइसन भइलका मन के गहिराह टीस दे जाला। कई बेर उ टीस मन के उचाट क देवेले। मन के उचाट होखला के मतलब गति के मंद पड़ल मानल जाला। एकर असर हाली ओरात नाही। कतों ना कतों मन के कोने–अँतरे अटकल रहेला। बाकि संगही एगो अउर स्थिति जिनगी के लेके होले। काहें से कि जिनगी के चलती के नाँव कहल गइल बा। जिनगी बा त गति देर सबेर अइबे करी, रहतो बनाई आ ओपर आगु बढ़बो करी। मन टीस के भुलइबो करी आ फेरु उछाह का संगे अपना उधातम में लागियो जाई। पछिला कुछ समय अइसने अझुराइल बातिन के बीचे से होके गुजरल ह। एकरा चलते गति बना के राखे में सफलता ना मिल पवलस। भाषा के नेह मनई के अपना से दूर ना होखे देवेले, एही से फेरु डगर धरे के परयास हो रहल बा।

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

'**विष कुंभम, पयो मुखम**' वाली स्थिति मने मीठ बोलवा वाला हाल सभे के बेहाल क देवेला। कुछ नीमन करे के परयास धरासाही हो जाला आ उछाह मरि जाला। एकरा से बेहतर त ई बात होखत कि सोझे केहु पल्ला झार लेत। आस दे के सांस घोंटल ढेर बाउर होला। हो सकेला कि इहे एह समाज के रीत होखे। समाज में होखला के मतलब समाज के जीयल, समाज के संगे जीयल आ ओहमें होखे वाला उंच–नीच से दू–चार होखल एगो सोझ प्रक्रिया ह। एकरा से होके कबों ना कबों सभे के गुजरे के पड़ेला, त भोजपुरी साहित्य सरिता कइसे बाच जाई।हमनियों के एह प्रक्रिया से गुजरनी सन आ ढेर कुछ समुझे–बूझे के भेंटइबो कइल। समुझ के दायरा बढ़ल आ आगु के रहता अंजोर भइल।

भोजपुरी साहित्य सरिता सम्पादन टीम एह अंक के संगे न्याय त ना क पावले बा बाकि हतास नइखे। उमेद बा कि अगिला अंक अपना पुरनका वैभव का संगे रउवा सभे के सोझा परोसे में हमनी के सफल होखब जा। अइसन कुछ बिसवास हमनी के रउवा सभे के नेह–छोह से भेंटाला। उमेद बा कि रउवा सभे आपन नेह बनवले राखब।

उछाह भरल बिसवास आ शुभकामना के संगे–

संपादक

भोर हो गइल

खोल द दुआर, भोर हो गइल।

किरिन उतर आइल,
आ खिड़की के फाँक से धीरे से झाँक गइल,
जइसे कुछ आँक गइल,
भीतर से बन्द बा केंवाड़ी त
बाहर के साँकल के पुरवाई झुन से बजा गइल,
आँगन के हरसिंगार, दुउरा के महुआ जस,
चू–चू के माटी पर अलपना सजा गइल,
ललमुनियाँ चहक उठल,
बंसी के तान थोर हो गइल।।

रोज के उठवना जस, ऊठ, अब जाग त
किरिन–किरिन जूड़ा में खोंस ल,
झुनुक–झुनुक साँकल से पुरवाई बोलल जे,
पायल में पोसल
अँचरा से महुआ के गंध झरल
हरसिंगार गंध साँस–साँस में भरल,
अँगना तूँ चहक ललमुनिया अस,
दुअरा हम बंसी बजाईं
कि मन मोर हो गइल।
खोल द दुआर, भोर हो गइल।।

■■

पाण्डेय कपिल

जन्म : 24 सितंबर 1930

मृत्यु : 2 नवंबर 2017

जन्म–स्थान
शीतलपुर, बरेजा, सारन, बिहार

अन्हरिया में अंजोरिया

डॉ शिप्रा मिश्रा पांडेय

केतना दिन जमाना के बाद आज ए पेड़ा से सुरसती के जाए के मउका मिलल बा।बगईचा के झिहिर–झिहिर बेयार बड़ा सोहावन लागत रहे।बरियारी गडि्ावान के रोकवाए के मन रहे।बाकिर अन्हार हो जाइत त बाटे ना बुझाईत।लइकाई के सगरी बात मन परे लागल।अमवारी के झुलुआ..भईंस के सवारी..पतहर झोंक के मछरी पकावल..डडे्र पर के दउराई..गड़ही में गरई मछरी के पकडा्ई..पुअरा के पूंज पर के चढ़ाई..फेन धब–धब गिराई.. लरिकाईं के एकह गो बात मन के छापे लागल।उहो का दिन रहे।मन के राजा रहनी सन।

जइसही बैलगाड़ी सतरोहन भईया के दुआरी पर चहुंपल रोअना– पिटना सुरु हो गईल।भउजी के मुंह पर के त रोहानिये ओरा गई रहे। केतना सुनर रहली जबे उतरल रहली तब।सुरसती से तनिके उमिरगर होखिहें।भउजी दोंगा क के अईली आ सुरसती के बियाह–गौना भईल।एक लेखा से सखियारो रहे दुनू में।ना भउजी पढ़ल–लिखल रहली ना सुरसती।बाकिर सनेह एतना रहे कि बे कहले एक दोसरा के मन के बात बूझ लेत रहे लोगिन।

सुरसती के उतरते भउजी भर– पांजा अंकवारी में ध लेहली।"बबी हो बबी आ भउजी हो भउजी" कुछ देर तक गांव–जवार के लोगिन के लोर से भेवें लागल।जब हिक भर लोर उझिल गईल त भउजी बड़की पतोह से कठरा में पानी मंगवईली आ सुरसती के गोड़ धोए लगली।सुरसती के बेर–बेर मने कईला पर भी भउजी ना मानस–"बड़ा भाग से नु बहिन–बेटी के,भगिना–बाभन के गोंड़ धोए के मउका मिलेला।"अंचरा से गोड़ पोंछाईल..भहरा के गोड़ लगली।तब जा के सानत भईली।

पतोहिया से मिसरी पानी मंगवईली। गांव–जवार के बात बिखिन चले लागल।सतरोहन भईया के मरला के हुको रहे।बाकिर सुरसती जानत रहली कि भईया के तीसरको मेहरारू ई भऊजी रहली।पहिलका देह से त बाले–बच्चा ना रहे।दोसरको से एगो बेटी रहे।दुनू जाने मर–बिला गईल लोग त ई भउजी उतरली। गांव–जवार टोन मारे– कईसन अभागल कुटुम के बाडी्..अईसन बूढ़ मरद से बियहले बाड़न स।

मने सुरसती निमन से जानतारी कि भऊजी के पैरा परल केतना सुभ रहे।13–14 बरस के लुकझुक कनिया केतना महीनी से सबकर निरवाह कई देहली।जे घरी ऊ नया नया आईल रहली,ई घर लोगिन से भरल रहत रहे।किरिन उगला से पहिलहीं भऊजी के छम–छम सुरु हो जात रहे।बड़का–बड़का फुलहा बटुलोही उतारत देरिये ना लागे।धान उसीनला से लेके पनपियाव बनईला ले– सब भऊजी के कपारे।दुअरा पर गाय–गोहार अलगे..माल–जाल के पखेव बनाव..दूध औंट.. ।जेठ–बईसाख..भरल भादो भऊजी के कपारे कबहूं रेघारी ना आईल।

ढेर दिन पर भेंट भईल रहे।राति बतियावते बीत गईल।भोरे नहा सोना के घामा में तरई बिछल।सुरसती के तनी फिकिर भईल–एगो पतोहिया त आगु–पाछू लागल बिया बाकिर छोटकी त लउकबे ना कईल–"का हो भऊजी!! तोहार छोटकी पतोहिया नईखे लउकत?"

"अरे का कहबू बबी!अठान–कठान लगवले बीया। तोहार भईया पढ़ल–लिखल पतोह उतरल. ।कहलें–पढ़निहार पतोह निमन होली सन।बाकिर सबमें बहेंगवा उहे बीया..बड़का अंगरेजी छांटेले।"ठठा के भऊजी हंसे लगली। नन्हका के सुरसती पेठवली–जो रे छवडा !!छोटकी के बोला ले आव त।कह फुआ बोलावतारी।

तनिका देरी के बाद रमत–झमत पढ़लको

पतोह उतरतारी–"परनाम फुआ!कएसी हएं फुआ?ईहां गांव–देहात में हमरा मन नहीं लगता है।हम सहर के हएं।हम पढ़ल–लिखल हएं।ई लोग के कुछु बुझाता हए?कहते हएं हमको अलगा क दीजिए।हमरा से ई चूल्हा नहीं झोंकाएगा।हम माटी–झेंटी का कार नहीं नूं किये हएं।ईंहां तो कोई बुझबे नहीं करता हए।आप आईं हए तो आपही समझाईए ना।"

सुरसती के त काठी मार देहलस।का हो भईया कईसन पतोह उतरले बाड़।एकरा त देह के सहूरे नईखे।ना मुडी पर आंचर,ना कवनो अदब,ई त सलवार–फराक पहिन के नचनिया बनल बीया।अईसन धीर–गंभीर भऊजी के अईसन बेलूरा पतोह।बड़का हूक के बात बा।

पनरे दिन कईसे बीत गईल,पते ना चल.ल।सभे से मेलजोल,सबका ईंहां पुरनका लोग जे रहे बड़ा मान–आदर कईल।सुरसती के करेजा जुड़ा गईल।अब बेर–बेर बेटवा के फोन आवे लागल।

बडा निहोरा–पांती पर भऊजीओ चले के तईयार भईली।सुरसती केतना समझवली–बडा देह खटवलू..तोहरा अब आराम के जरुरत बा..अब ई जाल छोड़..धन–बीत रहे चाहे बिलाए..ई लोग बूझे..जिनगी भर तूहीं देखबू..राखी लोग त भोगी लोग..ना राखी लोग त भीख मांगी लोग..तू अब चएन से जीय।

एही बीच छोटको बेटा–पतोह अलगा हो गईल लोग।भऊजी खातिर निमने भईल।दिन भर उनकर चूल्हे तर बीत जात रहे।बड़की होसियार रहे।संघे लाग के करवावत रहे।ओकरे के समझा–बुझा के भऊजी चले के तईयार भईली। खोईंछा भराईल..दुआरी पर कलसा रखाईल.. गांव–जवार के पुरनका लोग सुरसती के अंकवारी भर–भर के बिदा कईल लोग।भऊजी जेतरे–जेतरे समझवली बड़की पतोहिया सब कईलस।बड़की पतोहिया ओतना पढ़ल ना रहे बाकिर अछर चिन्हत रहे।

रस्ता–पेडा में बरहम बाबा,सीतला माई के अंचरा उठा–उठा के ननद–भऊजाई गोहरवलस ला.ग। सुरसती के समझ में ना आईल कि लोग पढ़–लिख के होसियार होला आकि बेपढ़ले।आ अगर निरछरे ढेर होसियार होला त फेर पढ़ला के का जरुरत। बैलगाड़ी के हेव–हेव में सुरसती के बातो भोर परा गईल। ❑❑

दू गो लघुकथा

अशोक मिश्र

1 बेटी के बियाह

बेटी के बियाह खातिर चिन्तित महतारी अपना पतिदेव से कहली– एजी! रउरा बेटी के बियाह के कवनो चिन्ता बा की ना ? बेटी पढ़ि –लिख के पांच बरीस से नोकरीयो करऽ तिया, पैंतीस बरीस के उमीरो हो गईल। समय से शादी–बियाह कईल हमनीं के जिम्मेवारी बा बाकिर रउरा त कवनो फिकीरे नईखे।

मेहरारू के बात सुनि के पतिदेव जी कहनीं– बेवकुफी मत करऽ।

बबुआ इंजिनियरी पढऽ ता, दूसरा साल ह। अबहीं बियाह के बात टारऽ, काहां से आई हर महीना पच्चीस हजार रुपीया आ हमनीयों के आपन जिनगी बा। एहि बिचे बेटी प्रेम बियाह क के अपना दुलहा के संगे अशीरबाद खातिर माई–बाप के सोझा खड़ा रहे,माई–बाप के त मूंह खूलल के खूलले रहि गईल।

२.बड़हन अपराध कवन ?

टीवी पर चल रहल खबर देख के सात बरिस के लईका अपना बाबूजी से पूछलस– बाबूजी! बेअदबी का कहाला ?

बाबूजी– कवनो धरम के अदब ना कईल बेअदबी कहाला।

लईका फेरु पूछलस– बेअदबी आ हत्या में बड़हन अपराध कवन बा?

लईका के बाबूजी बात अनसुना कर के झट से चैनल बदल दिहले।

❑❑

❍कटनी, म प्र

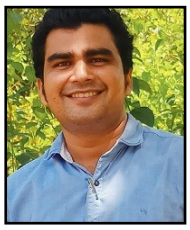

नून–तेल–लकड़ी मे फंसि गइल जनता

राम बचन यादव

नून–तेल–लकड़ी मे फंसि गइल जनता
नाहीं त तखता पलटि देत जनता!

ओके लगेला की होत बा सब अच्छा
नइखे मालूम के बा झूठा के बाद सच्चा
भेड़ियन के बीच में भइल नंगी जनता
नाहीं त तखता पलटि देत जनता!

धरम–करम में उ बा गइल अझुराई
जात–पात ऊंच–नीच के रोग लगाई
भरम मे भागल जाले कांवर लेके जनता
नाहीं त तखता पलटि देत जनता!

बरध जइसे रात–दिन बहावे पसीना
पेट जिआवे फारि धरती के सीना
किसमत पे रोवै बइठ करे कुछ ना जनता
नाहीं त तखता पलटि देत जनता!

मेहनत से दूर जवन काटैं मलाई
हक अधिकार गइल जनता भुलाई
घोड़ा बेच अबहूं सोअत बा जनता
नाहीं त तखता पलटि देत जनता!

ग्यान के आंधी एक दिन भरम उड़ाई
बुद्ध कबीर के तब सपना पुराई
फूले, बाबा, भगत के भुलाइल बा जनता
नाहीं त तखता पलटि देत जनता!

❍ आदित्य नारायण राजकीय इंटर कॉलेज
चकिया, चंदौली

विमल कुमार

मम्मी रे हमहूं इसकूल जाइब

मम्मी रे पापा से कह के
ड्रेस एगो बनवा दे।
हमहूं रोज इसकूल जाइब
भइया के बतला दे।

जूता मोजा कलम पेनसिल
कापी किताब टाई।
जेंटल मएन बनके जाइब
जइसे जाला भाई।

हरमेस हाथ पकड़ि के चलबि
पीठ प लादि के बसता।
इयाद पारि के रोजे रखिहे
मम्मी ओ में नासता।

मम्मी कान पकड़त बानी
छोड़ देब सैतानी ।
सभ केहु के मान राखबि हम
बोलबि गुर जस बानी।

ना खाइब अब चिप्स कुरकुरा
चाट अउरी समोसा।
ए ममता के मूरत मम्मी
अब त क ले भरोसा।

सभ लइकन से आगे रहबि
होइ खेल भा पढ़ाई।
रोज सबासी के सर जी से
मिली हमरा मिठाई ।

दोस्त बनाइब सभ लइकन के
बाँटि–चोट करबि नसता ।
मान देब हम हर चीजुवे के
दामी रहि भा ससता।

घर परिवार के मान राखबि
सभकर करबि भलाई।
नाम अमर हो जाई मम्मी
भले देह मिट जाई।

❍ जमुआँव भोजपुर बिहार

हमार जोहार

सारिका भूषण

तारणहार
हमार जोहार
पसरल बा सगरो अन्धार
तोहरे पर टिकल बानी
आऊर दूसर हम न जानी ।

तारणहार
कबहुँ न टूटी आस हमार
तोहरे से त इह संसार
सुख – दुःख सब खेला
तोहरे लीला , तोहरे मेला ।

मोह
(1)

गोड़ थक जाला
हिम्मत जवाब दे जाला
झुक जाला देह
पर कतना ढीट बा
ई आदम जात
ढकचत – ढकचत भी
आपन गठरिया
भारी करत जाला ।

(२)

अरे !
कब तक माथा पे धरबै
जहान भर के पीर
गलत बा शरीर
उड़ल जाला नींद
बढल जा ता अंधार
फिर काहे ओढ़ तरै
मोह के जंजाल ।

❍ राँची , झारखंड

पान थूक के

योगेन्द्र शर्मा "योगी"

पढ़े लिखे में जी ना लागे
बनि के घुमत हवा नमुन्ना
पिता जी पूछलन पूत से अपने
रगड़त खैनी संगे चुन्ना।

तब बबुली झार अदा से अगबै
पान थूक के बोलस मुन्ना
सुना हे बाऊ नेता बनबै
कइ देब दऊलत पल में दुन्ना।

का घबड़ाला झूठमूठ क
अँगुरी पर बस दिनवा गीन्ना
लड़ब बिधइकी जल्दी हनहुँ
फिर बुझबा हम हई नगिन्ना।

जिला जवारी जानी हमके
निक निक लोगवा छोड़ि पसिन्ना
तोहरो नाम ऊँचाई छुई
नाची सब डेहरी पर धिन्ना।

खड़ा सफारी दुअरे होई
मनी महोत्सव साथ रबिन्ना
मय बखरी ए सी लगवाईब
जेठ भी लागी शीत महिन्ना।

डिगरी ले कुछ हाँथ न आई
कइहैं लोग करम के हिन्ना
पाँव धरीं ना कलम थमावा
बिन कुरता मोर देह जंची ना।

पान थूक के बोलस मुन्ना
पान थूक के बोलस मुन्ना।।

❍ भीषमपुर,चकिया,
चन्दौली (उ.प्र.)

मंडप

अंकुश्री

''ई घर पूर्वज के बनावल मंडप ह! मंडप!! बंटाई ना।'' मंझिला भाई ई बात छोट भाई आ उनकर मेहरारू के सुनावत कहलन, ''भइयो एह मंडप के बंटवारा नइखन चहले।'' बड़ भाई बिआह के बादे से अपना परिवार लेके बाहरे रच–बस गइल रहस। मंझिला भाई आ छोट भाई के परिवार गांवे में रहत रहे। दूनो परिवार आपन बनावत रहे, आपन खात रहे। बाकिर मंझिला भाई के पूरा परिवार छोट भाई के परिवार के उदबास लगवले रहत रहे। मंझला भाई के बड़का बेटा जादहीं खुरापाती रहस। उनका के रोकल त दूर, उल्टे बाप–मतारी सह देके आउरो बिगड़ देले रहस।

माथ–मालिक के विचार से बाल–बच्चा के सोभाव आ संस्कार बनेला। मंझिला भाई के बड़का बेटा के मनमानी अतना बढ़ल कि ऊ अपना चाचा–चाची के घर से निकाल देलन। दिन भर नौ. टंकी आउर हो–हल्ला भइल। मार–पीट के डर से छोटका भाई परिवार सहित रातहीं में घर छोड़ दिहलन। घनघोर अंधेरिया रात, परिवार यकायक जाओ त कहंवा ? तत्काल ऊ लोग दलान में शरण ले लेलस। बाकिर दोसरे दिन से छोटका भाई उपाय में लाग गइलन। दलान के पूरब सड़क के ओह पार रंगू लाल के खाली जमीन रहे। बात तय भ गइल आ छोटका भाई ओह जमीन पर मकान बना के रहे लगलन।

मंझिला भाई जइसन चाहत रहस, पुस्तैनी घर पर उनकर एकक्षत्र राज हो गइल। समय भइला पर उनकर चारो बेटा आउर चारो बेटी के बिआह भ गइल। दुसरका बेटा के छोड़ के पूरा परिवार बाहर रहे लागल। दुसरका बेटा कुछ करत ना रहस। बाबूजी के पेंषन से उनकर खर्चा चलत रहे। बाबूजी का मुअला के बाद उनका खर्चा मिलल बंद हो गइल। खेत–बघार रहे ना आ अनाज से दुस्मनी। भूखमरी के नौबत आ गइल। सबसे खुरापाती बड़का बेटा पिये–खाये में अझुराइल रहस। दरोगा से रिटायर होके बाहरे किराया के मकान में जिनिगी बितावे लगलन। छोटका दुनो बेटा अपना–अपना बाल–बच्चा में लागल रहस। अइसन में घर के देखरेख सफा बंद भ गइल।

बुढ़इला पर आदमी पहिले बिछवना पकड़ेला आ ओकरा बाद दुनिया छोड़ जाला। तीनों भाई आउर उनकर मेहरारुओ के समय बीतत गइल। समय बीतल त घरवो पर बुढ़ापा के परकोप आ गइल आ ऊ गिरे लागल। एक बरसात में एक कोना के दीवार गिरल आ दोसरका बरसात में दूसरका कोना के। पहिले दलान गिरल, ओकरा बाद पूरा मकान बइठ गइल।

ऊ घर गांव के मुख्य रस्ता पर रहे। उंहवा के रौनक और बइठकी पुरान लोग के अबहिंओ इयाद रहे। जे ओह रस्ता से जाये, कुछ देर ठमक के ओने देखे जरूर। एक दिन गांव के दू गो बुढ़ऊ लोग जात खानी ओहिजा ठार होके बतिआत रहस, ''एह लोग के छपरा वाला गोतिआ के चार गो बेटा रहस। समय पर बंटवारा भ गइला से चारो भाई के मकान उंहवा बुलंद बा। इंहवा मंडप ना बांटे के नाम पर मंछिला भाई दुनो भाई के हिस्सा पचावे के चहलन। बाकिर उनकर बाल–बच्चा एकरा के भोग ना पाइल आ घर खंडहर बन के रह गइल।''

''तीनो भाई के हिस्सा लाग गइल रहित त एको–दुगो भाई के घर बन जाइत आ ई समिलात घर खंडहर भइला से बच जाइत।''

''ई कहावत झूठ नइखे कि गोतिआ से हड़पल धन बारहे बरिस भोगाला, ओकरा बाद कवनो बहाने ऊ हाथ से निकल जाला। खंडहर भ गइला पर आज ई केहू के काम नइखे आवत। कोई चहबो करी त तीन भाई के हिस्सा में के आउर केने से हाथ लगाई ?'' दुनो बुढ़ऊ बतिआवत आगे बढ़ गइलन।

❑❑

8, प्रेस कॉलोनी, सिदरौल,नामकुम, रांची
(झारखण्ड)–834 010
मो0 8809972549

नदी के लाश बेहतर बा गुरूजी

सन्नी भारद्वाज

बहत हर आदमी धारा में लेकिन
किनारा पा सकल ना आज तक भी ,
सहारा अब कहां पाईं, भेटाई
इशारा कर रहल इतिहास तक भी ।
खुदी के हाथ पर विसवास राखी
ओही के आखिरी पतवार बुझी।
नदी के लाश बेहतर बा गुरूजी।
नदी के लाश,,,,,,,,, ।

नियम कानून कऊनो ना बनल ह
कि कऊने रास्ता से केई जाई ,
उहा दरबान भी मिलीहे न तोहके
कि बढ़ी के बोल दे एहरे से आईं ।
तोहार इमान ही बलवान ओहिजा
भरल जिनगी जवन तोहसे अबुझी,
नदी के लाश बेहतर बा गुरूजी ।
नदी के लाश,,, ।

समय के शाह भी सिकुडल बा अंदर
फसल पुरजोर अनयासे भंयकर ।
तनिक पन्ना पटल के देख ले सब ,
उ पोरष होय या होवै सिकंदर।
भला ओहमे भी तु चाडक्य खोजा,
त कहबा इ तरिका बा सही जी
नदी के लाश बेहतर बा गुरूजी ।
नदी के लाश,,,,, ।।

❑❑

❍ भभुआ

बचपन के दिन

नूरैन अन्सारी

बड़ा मन परे बचपन के दिन मितवा !!
नाचे अखियाँ के आगे हर सीन मितवा !!

छूट गईल गाँवे में सूंदर सपनवा.
दूर भईल हमनी से खेत–खलिहनवा.
डहकेला हमनी के खातिर अँगनवा.
हेरा गइलेंन शहर में आके ललनवा .

भूललो से भूले नाही, बतिया पुरनका .
बिसर गईल जिनगी से दिनवा नीमनका.

आदमीं हो गईल बंधुआ मशीन मितवा !!
बड़ा मन परे, बचपन के दिन मितवा !!

शहर में लोग के मेला हो गईल .
गाँव के घर अकेला हो गईल .
जिनगी में टेंशन झमेला हो गईल .
साँप छुछुनर के खेला हो गईल .

मोह अपना माटी के ना मन से ओरात बा .
तनी तनी बात पर,अब अखियाँ लोरात बा .

सोना बेच के हम माटी लेहनी किन मितवा
बड़ा मन परे बचपन के दिन मितवा

❑❑

❍ गोपालगंज,बिहार

जीवन आउर मौत

कुमार मंगलम रणवीर

जीवन आउर मौत बीच
चलेला इंसानी पसली पर
नियति के हथौड़ा....
न उफ! न चीख!
जमाने के सोझे खिलल चेहरा
लम्बी चिक्कार बीच भेल
प्रकट जिये के हौसला!
सत्ता के माथे फूलन के बरसा!
जवान लइकन रोजी–रोटी ला तरसा...!
सत्ता के पांव नीचे मखमली चादर
जनता के जमीन बंजरय भेल
निरादर...
पक्ष–विपक्ष में मीडिया के दावेदारी
दुनो भूंजे अलग तरकारी।

❑❑

❍ पटना

सबके पिया दे सं पानी

आकाश महेशपुरी

सुति उठी सबके पिया दे सं पानी,
जइसन पतोहि सास, ओइसन जेठानी।

छोटकी पतोहिया हऽ बड़की जवाबी,
ससुई चला देले चप्पल गुलाबी।
तनिको ना भावेला रोजो के हाला,
येकनी के झगरा ना कहियो ओराला।
लइका कमासुत खटावे जवानी–
जइसन पतोहि सास, ओइसन जेठानी।

बड़की पतोहियो हऽ असली लड़ाकू,
ओकर जुबान चले जइसे कि चाकू।
गारी के शब्दन से रचेले गाना,
टिकें ना आस पास एक मरदाना।
हरदिन के बाटे बस इहे कहानी–
जइसन पतोहि सास, ओइसन जेठानी।

बेङन खाँ टर टर सावन भा भादो,
लड़ले बिना चौन आवे ना का दो!
येतनो तऽ ठीक नाहीं हवे ढीठाई,
लोग भइल पागल ई देखत लड़ाई।
छोड़ाहूँ जे जाला ऊ पावे निशानी–
जइसन पतोहि सास, ओइसन जेठानी।

सुति उठी सबके पिया दे सं पानी,
जइसन पतोहि सास, ओइसन जेठानी।

❑❑

❍ कुशीनगर, उत्तर प्रदेश

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

बबुनवाँ बऽ नीक लागे हो

ठुनुकत घरवाँ अंगनवाँ,
बबुनवाँ बड़ नीक लागे हो।
अरे हो बिहँसत माई के परनवाँ,
बबुनवाँ बड़ नीक लागे हो।

मुँहवा लपेटले मखनवाँ
बबुनवाँ बड़ नीक लागे हो।
अरे हो उचकि उतारत अयनवाँ,
बबुनवाँ बड़ नीक लागे हो।

हुलसत गरवा लगावेली
अरे हो भरले लोरवा नयनवाँ ,
बबुनवाँ बड़ नीक लागे हो।

रोआँ पुलकि जिया हरसेला
अरे हो कुंहुकेला मन अस मयनवाँ,
बबुनवाँ बड़ नीक लागे हो।।

❑❑

❍बरहुआं, चकिया, चंदौली

शुभकामना बा सबके

दीपक तिवारी

कबो फीका ना परे चमक भाल के,
शुभकामना बा सबके नया साल के।

हरियाली पसरे घना चहूँओरी,
इहे त हमार बाटे विचार।
हर घरी दिन महीना आ सालों,
साल रहे हरदम बरकरार।।
रहे किरीपा बनल देव महाकाल के..
शुभकामना बा सबके नया साल के।

खुशी के पहरा रहे आठोपहर,
जिनगी में सबका आसे पास हो।
दूर होखे अवगुन सदगुन आवे,
होखे दया प्रेम के विकास हो।।
महत्व होखे कबो ना कम गुलाल के..
शुभकामना बा सबके नया साल के।

❑❑

❍ श्रीकरपुर,सिवान

नया साल

हरेश्वर राय

नया साल प दियाइ दीं, पिया जी चुनरी
नया साल प।
चुनरी दियाइ दीं, किनवाइ दीं पियरी
नया साल प।

पिछिलका बरीसवा रहल ह बड़ी भारी
कारी कारी बदरिन के रहल सोर जारी
अब जाके फटली, बलम जी बदरी
नया साल प।

मईहर आ मथुरा बिन्हाचल घुमवाई दीं
बाबा बिस्वनाथ जी के दर्शन कराई दीं
तब जाके पपवा, बलम जी उतरी।
नया साल प।

❍ सतना

वसंत अइले नियरा

केशव मोहन पाण्डेय

हरसेला हहरत हियरा हो रामा,
वसंत अइले नियरा।।

मन में मदन, तन ले ला अंगड़ाई,
अलसी के फूल देख आलस पराई,
पीपर–पात लागल तेज सरसे,
अमवा मोजरीया से मकरंद बरसे,
पिहू–पिहू गावेला पपीहरा हो रामा,
वसंत अइले नियरा।।

मटरा के छिमिया के बढ़ल रखवारी,
गेहूँआ के पाँव भइल बलीया से भारी,
नखरा नजर आवे नजरी के कोर में,
मन करे हमहूँ बन्हाई प्रेम–डोर में,
जोहेला जोगिनीया जियरा हो रामा,
वसंत अइले नियरा।।

पिया से पिरितिया के रीतिया निभाएब,
कवनो बिपत आयी तबो मुस्कुराएब,
पोरे–पोर रंग लेब नेहिया के रंग में,
कलपत करेजवा जुड़ाई उनके संग में,
हियरा में बारि लेहनी दीयरा हो रामा,
वसंत अइले नियरा।।

❍ राजपुरी,नई दिल्ली

बड़हन बानर हिरोइनची

बिम्मी कुँवर

ओह घरी पश्चिमी बिहार में हिरोइनचिअन के आंतक बहुत बेसी हो गइल रहुए, जदि भुला के बल्टी, तसला, रसरी, कुरसी, टेबुल भा सइकिल घर के बहरी भा बिना ओहारे अंगना में छूट जाए त दस पनरह रोपया खातिर मारल मारल फीरत हिरोइनि चअन के लाटरी लगले जइसन खुशी मिलत रहे। कसहूं चोरा के बेच खोच के दस पनरह रोपया में हीरोइन पी के रात भर टुन्न रह+सन।

एगो साहूकार आ बाबाजी पड़ोस में रहत रहुअन जा ,साहूकार के पांच गो छौड़ी आ बाबा जी के दू गौ छौड़ा रहे। साहूकार के छोटकी छौड़ी आ बाबाजी के नन्हका बेटा के उमिर के डढ़ाड खतरे के निसान प रहे...

माने कि आमावस भी पूरनमासी लागे
आ जेठ के दुपहरिआ मधुमासी लागे,

एगो अगहन उठान के रात रहे बाबा जी के बड़का बेटा पेसाब करे के उठलन त का देखत बाड़े जे छोटका भाई आंगन के चहरदीवारी प बइठल बा... उ चिचिअइले, अतना ठंडा में चहरदीवारी प का कर तार+ हो बबुआ?

बबुआ आंव देखले ना तांव एकदम हांफते बोले लगले जे भइया केहूं बइठल रहल ह चहरदीवारी प जब हम लखेदनी ह त धांय देनी खोरी में कूद के भाग गइल ह, हो ना हो कवनो हिरोइनची ही होखी। बड़का भाई कहले अच्छा चल सूत रह , ढेर रात हो गइल , आ ले भी जाई त का ले जाई एक दू गो बल्टी भा करवाइन (मीट–मछरी) के आठ दस गो बरतने नू अऊर का अंगना में रखल बा।

पांच दस दिन प छोटका बबुआ कबो छत प त कबो चहरदीवारी प बड़कू भैय्या के भेटाइए जास आ ऊहे भुलवना लेखा बात कि बुला हिरोइनचिअन के आहट होत रहे त लखेदनी ह।

दूसरका दिन शनिचर के दुपहरिया में सब केहू खिचड़ी चोखा खात रहे त बाबा जी बो अपना संवाग से बोलली जे जानत बानी साहूकार बो बोलत रहली जे उनकर सास जब रात के पानी भा शौच खातिर उठे ली त अक्सर हा हमनी के चहरदीवारी प केहूं बानर लेखा बइठल मिलेला, उ कहत रहली जे कबो कबो चहरदीवारी फान के उ उनकरा छतो प चल जाला, बड़ा फिकिर करत रहली जे इ कइसन बानर ह जवन हतना ठंडा में मध्य रात के चहरदीवारी आ छत फानत बा। बुला उनकर मय छौड़ी छते वाला कोठरी में रहेली सन । तले इ कुल बात बतकही सुनत सुनत बाबा जी के छोटका बेटवा के गोड़ पर तातले खिचड़ी गिर गइल, बड़का देख के मुस्किअइले आ गते से छोटका के कान में बोलले

'बचवां ई हिनोइनची तसला बल्टी चोर ना ह , इ त बड़हन बानर हिरोइनची बा हो...

❑❑

❍ चेन्नई

जियाउल हक

झगड़ा

एगो घर के दू सदस्य के आपस में खाना खाए खातिर झगड़ा भइल रहे, तू ज्यादा लेला त तू ज्यादा लेला। झगड़ा एतना बढ़ गइल कि एक आदमी आपा खो बइठल और भरल बर्तन के खाना लेके दुआर पर फेंक देहलस फिर दुनो आदमी मुंह फुला के बइठ गइल। कुछ देर बाद एगो कुत्ता आइल और फेंकल खाना के भर हिक खाके निकल गइल फिर एगो कौवा उड़त उड़त आइल और बचल कुछ खाना के खाके उड़ गइल फिर कुछ देर बाद पांच सात गौरैया आके बचल खुचल खाना के चुंग–चांग के निकल लेलीसन फिर ऊ घर के एगो बुजुर्ग सदस्य आके ऊ दुनो झगाड़ालू आदमी के सबक सिखाके चल गइलन कि ''कुछ सिख लालो पशु पक्षी से कि ओतने खाना में कुत्ता कौवा गौरैया सब बिना झगड़ा के खाके उड़ गइले।

❑❑

❍छपरा बिहार

सरधवा

डॉ सुशीला ओझा

मरछिया अपने त सात गो लइका के मार कै भइल रहै .. जनमते महतारी घुरा पर फेकवा दिहली ..कौदो दे कै किनली ..बड़ा टोटरम पर .मरछिया जिएल ..मरछिया धीरे–धीरे सेयान होखे लागल .. जवानी उफान मारत रहे ..''इजवानी केकरा कस में बा ..मरछिया एकदम गोर भभुका रहे रहे ..आओठ लाल–लाल ..नकिया सुग्गा के ठोर अइसन चोख .. अँखियांमें बुझाए काजर कईल बा ..केसिया टेढ़ टैढ़ घुंघराला बुझाए करिया घाटा ह..माने छाछाते देवी कै मूरत ..देह के उतार चढ़ाव गजब के .. चाल मस तानी ..चोटिया नागिन खनिया अँखिया बुझाए दारु पियले बिया .. इजवानी के रंग लोगन के सांसत में डाल देलै बा ''बिना बाप के बेटी ..फेकुआ त मरछिया तीन महीना के गरभ में रहे ..पंचायत चुनाव में गईल रहे ..चुनाव होला कि लोगन कै जान के शतुर होला .।फेकुआ गई ल तबसे लउटल ना ..कवलेज में चपरासी रहे ..ओहि पर मरछिया के माई के अनुकंपा पर हो गईल नोकरिया ..कुछ पी..एफ से पइसामिलल रहे .रोज –रोज के ओरहन से ..मरछिया के महतरिया बाज आ गईल रहे।

...कबो मरछिया भईस चरावे जाए ..कबो भिनसरिया में गेड़ ले आवे जाए ..गांव के छवारिक से बाजना –बजनी होखै लागे ..राड़ केबेटी के सब लूटे के चाह स ..क बेर मरछिया के महतरिया पोखरा के आटे–आटे दउर के ..मरछिया के मारे खतिरा पीछै–पीछे रगेदे ..''आव मुँहझौसी ..रंडिया हमरा बापवा के जामल महतरिया ..तोरा जवानी कै जोस चढ़ल बा .. इयार लोग के नसा लागल बा ..क हाँ बाड़े ईयरऊ '' ''आवतहरा के ललका पानी से दरसन करावतानी '' सोगहीहमार जियल हराम कईले बिया . .आव भतरु से दरसन करावतानी ..!

...छवारिक से मेल मोहब्बतमें रोज कहिओ गोस कहियो मछरी आवे .. कबो राति खा सुतहु के वैवस था होखे ..परैम के फल का भईल कि मरछिया पेट से रह गईल ..पहिले त ना नुकुर भईल .''चमईन से पेटछिपैला '' अब त कवनो छवारिक बियाह करेके ना चाह सन ..माने मरछिया के महतरिया के लगे ..पीएफ के पईसवारहे ..''बियाह भईल कौलेज एगो चपरसिया से ।.औकर नाम रहै पियारे .. अब कवलेजिया लईकिया सन ओकरा के ऐ पियारै .ए पियारे कहसन .. मरछिया रोज झागड़ा करे ..राख लेले बा कवलेजियन वेसवा ..रंडिया के ..!!रात दिन महाभारत ..इहाँ पेटो छिपावेकेरहे ..छव महीना में बेटी भईल ..विष

नु भगवती से मांगल –चांगल रहे ..बड़ी सरधा मन में बेटी खतिरा रहे ..''लोग पुछै लोग बेटा मांगेला बिसनुभगवतीसे ते काहे धिया मांगतारे''मरछिया कहे–''ए काकी धिया के जनमनले पवितर होला कोखिया सरग में होला अंजोर'' काकी के मरछिया के बात में कवनो हुलास ना दिखे ..कईसनते मुरुख बाड़े कहल जाला ''अगिते मे जनती कि धिया एक जमेहे पियती मे मरीचि झरार मरीचि के झाके झुके धिया मरि जईती ..सतरु के धिया जनि होखे '' मरतछिया के खुशी के ठेकाना ना रहे ..धरती पर गोड़ ना पड़े ..अलटरा साउनड जबसे करवले रहे .. बिसनु भगवती के गोहरावे ..ए माई जौड़ा खस्सी चढ़ाईब ..जोड़ा कबूतर चढ़ाईब ..जोड़ा पियरी चढ़ाइब ..जोड़ा कोसिया भरवाईब ..हथिया पर हउदा कसाईब घोड़वा के रे लहास ..हमरा के रुनुकिया ..झुनुकिया ए गो धिअवा दी ..हम एककोस भुई पारब .. एतना भाखला पृ सरधवा के जलम भईल ..अब ऊ जमाना नईखे की बेटी लोग गोड़ के नीचौ रही लोग ..जूठ काठ सै पोसाई लोग .. फुलेसरा काकी अलगे माथा पिटस ..आइ हो दादा .. बेटी के मनबढ़ु बनावतिया ..खिस्सा कहल बा ''आटा सनले बेटी जात कड़ले''बेटी दाब के रखल जाला .. पचिस्ठा ना रही ..गांव घर के बेटी होला .।बेटी के साथे गांव जवार के पचिसठा होला ..मरछिया कहे''ए काकी अब मोदी सरकार में बेटी के बड़ा मान समान मिलता ।कहतारे ''बेटी बचाव बेटी पढ़ाव'' जलम लैला पर कन्यानिधि में पईसा जाता ..गोद भराई होता ..ओकरा खाए –पिए सबकर वेवसथा त सरकार करतिया .साईकिल मिलता .. पढ़ाई के खरचा मिलता पचास हजार रुपया कम नानु होला ..हमरापेटेमें से,सरधा बा बेटी के ..छठी मईया हमार गोहरावल सुनली ..सरधवा जलम लेलेस ''हम त गावे लगनी हमरा तभईले बेटिया ए घरवा सोहावन लागे बाजी पाजेबवा ''''मरछिया मुँहकुड़िया भहराइल बिया विसनु भगवती ओकर मनसा पुरवले बाड़ी ..सरधवा के आँगनबाड़ी में विटामिन ..दूध पुसटईमिले लागल मरछिया के सब काम पूरा होखे लागल ..सरधवा के सरकारी

इसकुल में नाम लिखा गईल ..अब सरधवा के भाखा बदल गईल ..हैं मैं ..उरदु फारसी अगरेजीछाटतिया .. अगरेजी में टाटा ..बांय बांय करतिया .. ए चिउटी हट हट माने झोपड़ी कहतिया ..एपुल माने सेव कहतिया .. हमरा के सबरे उठ के कहले "गुड़ मोरिन "राति खा 'गुड़ नाई"स
कूल से साईकिल मिलल बा ..चला जाले स्कूल .।हमर बड़ा सरधा रहल हा ए गो बेटीहोईत त हमहुं ओकरा के पढ़इत ..गांव के लोग हमरा बेटी के रंडी बेसवा बनवलस ..बेटा बियाईल बाड़ी ..मन बढ़ावतारी बेटी के .. एक दिन मुँह करिया करि उढ़ढ जाई ..बाप रेबाप बेटवन के साथे साईकिल में रेस लगावयिया ।।रेफ राईट करतिया "मन के बढ़ल निमन ना होला धन बढेला त जमीन में गाड़ दियाला मन बढ़ला के कवन उपायबा" मरछिया ओ सब बात के धियान ना देले ..सरधवा के पढ़ाई में मन लाग गईल बा ..घर के कामों करेले .।माई के सेवा करेलै .।दवाई के वेवसथा करेले .. जिला में सरधवा टांप कइले बिया ..ओकरा पचास हजार रुपया मिलल बा ..आज उहे मंत्री ओकरा के चेक देले बाड़े .. जे कहिओ छवारिक रहले आ मरछिया से बरिआई कईले रहले .।मरछिया उनका के चिनीहि लिहलस ..ऊहो सरधवा के देखकेमोहित हो गईले ..आपन संतान देखके उनका मोह हो गई ल ..सरधवा पढ़ाकुरहे .।जवना विसय में मन लगावे ओहिमें टांपहो जाए ..मंत्री जी के बुझाईल इ त बड़ा जीनियस बिया .." होनहार विरवान के होत चिकनेपात "देखकर उनके मनमेंसरधवा के प्रति प्यार उमड़े लागल "उन्होंनै "सरधवा को बुलाया माँ का नाम पुछा ..सरधवा ने कहा मरछिया ..अब त मंत्री के खून सूख गई ल देह के सहुर ना रहे ..आजबीस बरस के पहिले के बात आँखि पर सिनेमा के रिल खनिया नाचे लागल ..मंत्री जी के वियाह भईल रहे संतान ना रहे .. उनकामन में तड़प रहे संतान खतिरा ..आ सरधवा अवैध ा संतान रहे .।समाज से स
वीकीरति ना रहे .।समाज के भीतर झांकेले ..कवनों झंझावात ना रहे ..आजकल त लड़की आउर पढ़ाई के समाज में पचिस्ठा बा ..मंत्री जी सरधवा के नाम ,श्रद्धा"र ख देले ..श्रद्धा .की पढाई –लिखाई का प्रबंध कराया . .सरधवा का एम बी.बीएस में नाम लिखा गईल ..ओकर पढ़ाई पुरा हो गई ल ..पीएम सी एचमें बहाली हो गईल .।सरधवा के पराईवेट किँनिक बा खूब पईसा कमा तिया माई के ले गईल बिया अपना हाँस्पीटल के नाम "मरछिया हाँस्पीटल "रखले बिया ..माई गांवमें सड़की पर जात रहली हा ....मोदी जी टाँयलेट बनवले बाड़े माने का जाने काहें लोगवा ..एक लाइन से बईठल रहेला सड़की के किनारे .।छोटका बचवा संन के कहेले सन आरे चिकनकेमें अब त पोटी कहाता मरछिया हाँट पाँट के पोटी कहेले ....पोटी में रोटी रखेलै ...सरधवा आपना विसाल बँगला में माई के ले गईल बिया ..गादा पर ओकरा नीन नईखे लागत ..टाँयलेटमें फल्स चलेला त चिलाले कहेले ।.आई हो दादा ई दईत खनिया कथि बोलता .।कमोड को कुरसी ह .. ईत हमारा कबज हो जाई .. नहाए खतिरा गिजर लागल बा ..हमनी के चापाकल के गरम पानी से नहानी जा ...ई अदहन खनिया पानी से हमरा देह में फफोला हो जाता ..गांव के लोग मरछिया के भाग देखिके जरता .. पईसाझरता एकरे के कहल जाला भगवान देले त छप्पर फाड़ के .. मरछिया के आपन गांव नीक लागेला ..बाग –बगीचा ..सब लोग मरछिया के "मैडम "कहता मरछिया के बुझाता गारी देता ..मरकिलगौना सन हमराके "चमरा के बुढ़िया बनवले बाड़े सन"मरीज सब के मेला लागल रहता सरधवा के हाँस्पीटल में .. बड़काबेल्डिंग कसाईल बा ..बड़का तख्ती पर लिखल बा "डॉ श्रद्धा मलहोत्रा" समाज से लड़के आजु मरछिया बेटी मंगलस साचो इ बेटी छाछात बिसनु भगवती बाड़ी ..जे लोग हँसले रहे उहे अचकचा के बेल्डिंग निहारता ओकरा माथा ऊँचा करेके पड़ता ..ईहे कहाला भाग काजाने कवना के जामल हिय सरधवा आज दुउरा पर लछमी बरसत बानी "आदमी जलमसे ना अपना करम से बड़ होला "भाग कुछु ना ह पहिले "क अछरिया करतप सि खावेली"तब ख अछरिया खाए के सिखावेली ।

❑❑

❍ **बेतिया,प.चम्पारण**

पहिला प्यार

सौरव कुमार

पहिला प्यार अक्सर दर्द देबे वाला ही होला ! भले लोग कुछो क हो। उ पाहिले प्यार ह जवन कबो ना मिले । कहे के ता बहुँत लोग कहे ला की हमार माई ! ता हमार बाबुजी ! भाई पहिलका प्यार ह लोग बाकिर ई बात पर हमरा विस्वाश ना होला । माई बाबु भाई बहिन इ सब से स्नेह दुलार होला प्रेम ना ....? बाकिर जहवाँ बात आवे ला प्रेम के ता उ होला अपना से उल्टा लिंक के तरफ रूझान के । जवन एगो चेहरा खासो में खाश हो जाला ।जवना के देखते चेहरा पर मुश्कान आ जाला । उ सामने पड़ते धड़कन के रफ्तार तेज हो जाला । पहिला प्यार के बेरा इ पता ना रहे की आगे वाला कईसन बा का बा । ना कवनो छल कपट ना कवनो उमिर आ उच्च नीच के बंधन ।

हम बात करत बानी पहिला प्यार के जवन उ चेहरा सामने पड़ते । अतीत में लेके चल जाला । उ मजबुर कर देला आपन याद में डूबे पर । जवन भूल के भी केहु भूला ना पावे । हमरा आशा ना पूरा विश्वाश बा ई पहिला प्यार हर इंसान के जीवन में एक ना एक बेर जरूर भईल बा केहु के चहले केहु के बिना चहले ।

हा भाई जी जब हम कहते बानी की इ पहिला प्यार हर केहु के जीवन में एक बेर जरूर भईल बा । त हमरो भईल बाकिर जब भईल पते ना चलल । हम आठवीं कक्षा में पढ़त रहनी । गाँव ध्शहर कस्बा में एके गो सरकारी स्कूल रहे जवना के कारन हर वर्ग के लईका लईकी के ओ ही में पढ़े के पड़े ।

ओ समय लईका लईकी मे बात चित साथै खेले कूदे में कवनो रोक ना रहे । रामु रहीम राज राजा शीमा मीरा रीना सब केहु एके साथ हँसल बोलल खेल खेलल होत रहे ।

एक दिन स्कूल में ईगो मोटर कार आईल । सब केहु के निगाह ओ मोटर गाड़ी पर अड़ गईल । इ मोटर रहे ओ इलाका के सबसे ज्यादा पैसा वाला झबरू मियां के । उनके साथ उनकर छोटकी बेटी जेकर नाम शाबाना रहे नीचे उतरली ।शायद उहो स्कुल में दाखिला खातीर आइल बाड़ी । उनकर दाखिला हम रे कक्षा में भा गईल । देखे में बहुत खूबसूरत रहली । तीन महीना हो गईल रहे बाकिर हमरा उनकरा के नजदीक से देखे के कवनो मौके ना मिले । एक दिन बारिश में मौषम रहे आ हम भीजत स्कूल आ गईनी । बारिष के चलते हमार साथी लोग ना आईल रहे लोग । भा ई कही पूरा स्कूल खाली रहे । ओ दिन पढ़ाई के नाम पर संगीत आ कहानी मास्टर साहेब सुननी आ सुनावनी । आ ओ ही दिने हम देखली सबाना के नीला आँख गोल सफेद चेहरा मोती नीयन चमकत दाँत, अनार के दाना बाराबर हँसी पर गाल में पड़त गाडा चुमुक जइसे लोहा के खिंचे ला उनकर गोल गाल चेहरा केहु के देखे पर मजबूर करे खतीर बहुँते रहे । जीनत अमान भी अगर देख लेती ता उहो लाजा जईती ।

हमनी के उनकरा के आपन भाषा में जहर के पुडिया कही जा । पढ़े में तेज रहली जवना के नतीजा रहल की हमार उनकरा से पढ़ाई में सामना होखे लागल। कक्षा में पहिला आ दूसरा स्थान खतीर होड़ लाग गईल । हमनी के एक दूसरा के कापी किताब के लेन देन शूरू हो गईल । एक दूसरा के साथ बोलल बतियावल अच्छा लागे लागल । बाकिर इ प्यार कवन चिरई रहे ना मालूम रहे ।

एक दिन छुटी के बाद सब केहु के साथै हम आ शाबाना घरे जात रही सन । तब तक अचानके सबाना के सामने साँप पड़ गईल हम उनकरा के धक्का दे देहनी जवना से उ दुर हो गईली बाकीर सांप हमरा के काट दिहलस । आगे कुछ याद ना रहल की का भईल ।

जब आँख खुलल ता अपना के अस्पताल के बेड पर सुतल पवनी । माई बाबु डॉ के धन्यबाद देत रहे लोग । तब डॉ साहेब कहनी धन्यबाद ता बेटी शाबाना के करी जेकरा हिम्मत आ हुशियारी से जहर ज्यादा ना फाइल पावल । सबाना आपन रीबन से घाव के ऊपर बाँधा देले रहली आ आपन हेयर बैंड के तुड़ के घाव के काट देहली जवना के चलते जहर बाहरी गिर गईल रहे ।

हम बच्चपन में बहुँत अच्छा नाचवैया आउर गवइया रहनी । जब भी अपना के अकेले पाई सुरु हो जाई । सबाना के सबसे पसंदीदा गाना रहे

सुन सायबा सुन प्यार की धुंन मैंने तुझे चुन लिया ..... । हम बड़ा ही खूबसूरत अंदाज से इ गीत सुनाई सबाना के । हमरा आवाज में जादु बा इ उनकर कहनाम रहे । एक दूसरा के बारे में सुनल बतियावाल अच्छा लागत रहे । समय पंख लगा के कब तेजी से उड़ गईल मालुम ना चलल । हमनी के बारहवी में प्रवेश कर गईल रहनी सन । आज 15 अगस्त के कार्यक्रम के त्यारी जोर

शोर से होत रहे । सबाना हमार डांस में पार्टनर बनली । पहिला बेर साथ में हमनी के फोटो खिचाएल । अपना शबाना के एके फ्रेम में देखे के मौका मिलल । दस दिन बाद ...

अचानक कुछ लोग के भीड़ हमारा पर पागल कुत्ता नीयन टूट पड़ल .... आ हमरा के लात जूता से मार के अधमारा कर देहलश । एक बेर फेर हम अस्पताल में भर्ती भैनी बाकिर तब आ अब में बहुँत अंतर रहे । हम कुछ ना समझ पवनी की हमरा साथे अईसन काहे भईल । बस माई खाली रोवत रहे । केहु कुछो ना कहत रहे । कुछ दिन बाद हम ठीक होके जब घर आइनी तब हमरा के माई आपन किरीया देके कहलस की तू शाबाना से बात मत कारिहा मत ओकरा तरफ देखिहा हम माई से बहुँत पूछनी बाकीर उ किरीया के शीवा कुछो आउर बात बतावे के त्यार ना भईल । अगिला दिने स्कुल में शाबाना हमरा सामने मिल गईली। सोचनी की बात का बा पूछी ! बाकिर माई के किरीया याद करी के कुछ ना कह पवनी । शाबाना भी बहुत कोशिस काइली बोले के बाकिर कुछ बोल ना पावली । एके छत के नीचे हमनी के अजनबी बन गईनी सन । बारहवी के पेपर के बाद हम आपन दूर के रिस्तेदार के लगे चल आइनी । कुछ दिन बाद ....

गाँवे रहनी तब अचानक से एगो छोट लड़िका हमरा के कागज में समेटल कुछ दिहलश । हम छुपा के रख लिहनी । रात के इंतजार करे लगनी की अकेला में खोल के पढम भा देखम । जब खोलनी तब उ शाबाना आ हमार पँद्रह अगस्त वाला फोटो आ एगो चिठ्ठी रहे जवना में लिखल रहे ....

हमरा जीवन के श्यामः चितचोर

हो सके ता हमरा के माफ कर दिहा। तू निर्दोष बाड़ा जवन भी तहरा साथै भईल ओ सबके हम जिमेदार बानी । हम तहरा से मन ही मन प्यार करे लगनी । तहार फोटो भा नाम लिख के चूमे लगनी रात रात भर । तहरा नाम के रोज एगो चिठ्ठी लिखी । बाकिर हिम्मत ना भईल आ हम तहरा के कबो दे ना पवेनी आ नाही कबो सामने से बोल पवनी । एक दी अम्मी फोटो आ चिठ्ठी देख लिहली आ आबू से कह देहली। जवना के कारन तोहरा के मार पड़ल आ घर में हमरा के । बाकिर तू ता अंजान रहला इ सब से गुनाह त हम कइले रहनी । बाकिर हमरा गुनाह के सजा तोहरा मिलल । हमरा के माफ कर दिहा । बाकिर तू हमार पि. हला प्यार हउवा आ रहबा जब ले इ सास रही तन में । हमरा मन मंदिर के देवता बन चुकल बाड़ा तु । ईगो वादा करा अगिला हप्ता में हमार निकाह बा तु जरुर अइहा हम निमंत्रण भेजवाएम । अगर तु आईबा त हमहुँ समझेंम की हमहुँ तहार पहिलका प्यार रहनी .....

तहार हो के भी ना होखे वाली
तहरा मन मंदिर के मूर्ति ....
शाबाना तहार दुबाइन ।।

हमहुँ शादी के दिन सज धज के गईनी । कुछ देर इजाजत लेके के मिलनी आ उनकर सबसे पसंदीदा गाना स्टेज पर सुना दिहनी –
सुन सायबा सुन... प्यार की धुंन...
मैंने तुझे चुन लिया ....
तू भी मुझे चुन.... आ संदेश दे दिहनी की तु हूँ हमार पहिलका प्यार बाड़ू आउर आखरी । तहरो जगह केहु ना ले पाई जहाँ रहा खुश रहा ....

हमार ना भइलो पर शाया नीयन हमरा साथे रहे वाली हमार दुबाइन।।

❑❑

❍ डवइ

खूब पढ़ीं आ तनी सा लिखीं
ए तरे बढ़िया भोजपुरी सीखीं।

महुआ पर ठनका

जितेन्द्र कुमार

ठहअ–ठहअ बुन्नी परत रहे। आसमान खूब गरजत–तड़कत रहे। बधर में छूटि के रोपनी कबरीया लागल रहलन। चारो ओरि करीआ अन्हार। बीच–बीच में बिजुरी अइसन चमके जे बुझाये कि इनर भगवान आस्मान के कटहर लेखा तरूआर से दू पफरा क दीहें। तरूआर के धर लेखा बिजुरी रहि–रहि के दमके। बिजुरी चमके आ बादर अइसन गरजेऋ जइसे हजार शेर एक साथे गरजत होखसँ। बड़ा भयावन लागत रहे। लागे जे आजु कुछ हो के रही। बाबू आ अयोध्या चाचा बधर में धन रोपवावे गइल रहलन। आजु दू बीघा खेत रोपाये के रहे। आठ गो रोपनहारीन के जोगाड़ रहे। हमार आ अयोध्या चाचा के खेती अलगे–अलगे बाऋ बाकी चाचा बिजड़ा कबारे में बाबू जी के मदद करेले आ ओइसहीं बाबूजी चाचा के मदद क देले। आजु चाचा के खेत में रोपनी लागल रहे। धन के बिजड़ा दूनों जने कबारत रहे लोऋ एकदमी पानीये में ठेहनुआइल रहे लो। उफ लो बिजड़ा कबरबो करत रहे आ बिजड़ा के अँटिया रोपनीहारीन लगे पहुँचावतो रहे। अयोध्या चाचा पानी पीये खातिर महुआ गाछ लगे गइलनऋ बुन्नी तनी एसा थथमल रहेऋ रोपनहारीन रोपत रही सँऋ बाबू जी खेत में बिजड़ा कबारत रहलन कि बिजुरी अइसन चमकल जे एकाएक भक दे अँजोर हो गइलऋ पाँच सेकंड बादे भयानक तोप के गोला लेखा छूटल कि लागल जे करेजा पफार देलख। बाबू जी खेते में ढिमिला गइलनऋ दू तीन रोपनीहारिन गच्च से बइठि गइली सँ...। बधर में हल्ला मचि गइल... महुआ पर ठनका गिरल हो...महुआ पर ठनका गिरल हो ...आहो, महुआ तर के रहे हो??? महुआ तर अयोध्या भाई रहलन हो!!! चारू ओरि से किसान महुआ गाछ ओरि दउरलन...अयोध्या भाई! अयोध्या चाचा!! महुआ तर गिरल बाड़न हो!!

आध किलोमीटर दूर गाँव बा। गाँव के गलियन में सनसनी पैफल गइल – अयोध्या भाई। अयोध्या चाचा महुआ तर गिरल बाड़न। ई आवाज उनुका आँगन में बाजे लागल! हम अपना घरे से दउरल चाचा के अँगना में पहुँचनी। अँगना में मरद–मेहरारू के भीड़ लागल बा। चाची एगो घर में से निकलि के बधर का ओरि जाये खातिर दउरली कि बेहोश होके गिर पड़ली। माई आ मालती दीदी चाची के टांग–टुंग के ओसारा में ले गइल लोऋ एगो चउकी पर उनुका के पार दिहल लोऋ बेना हंकाये लागल। चाची के दाँत लागि गइल बा। मुँह पर पानी के छींटा मराइल। नाक बन करे से मुँह खुलि गइल। सभे रोवे लागल। दिने में अन्हार छा गइल...।

खेत में रोपनी के काम तीन चउथाई हो गइल रहे। रोपनहारिन रोपनी छोड़ि के महुआ गाछ तर आ गइली सँ। अब का रोपनी होईत।

दू अदमी संवाद दिहल जे अयोध्या जी के खटिया पर बधरी से दुआर पर ले आवे के होईऋ उफ एकदम झुलसि गइल बाड़ें!

एगो खटिया लेके धवा–धई बधर में महुआ तर गइलीं जाऋ ओहिजा पहिलहीं से गाँव के बहुत लो जुटलऋ सभके चेहरा बहुत उदास रहेऋ हमार बाबू जी ;राम प्रतापद्ध बहुत रोवत रहले। हम पहिला बेर बाबूजी के रोवत दे खलीं। अयोध्या चाचा के खटिया पर उठा के दुआर पर ले अईनीं जा। ई हमरो बुझा गइल जे चाचा अब जियत नइखन। हमरा बाबू जी के कठेया मरले बाऋ कब्बो चुप्पा जात बाड़न, कब्बो पफपफक–पफपफक के रोवे लागत बाड़न। चाचा के अंतिम यात्राा के तइयारी हो रहल बाऋ सोनू बहुत रोवता। हमार दिल–दिमाग बार–बार चाचा के अतीत में झाँके लागत बा...

अयोध्या चाचा के अजब पिफतरत रहेऋ सोनू खातिर भा अउरू कवनो काम से उनुका घ ारे जाईं त उनुका के कवनो–ना–कवनो काम में बाझल देखीं। उनुकर आ हमार घर अगले–बगल बा। हमरा घर के पीछे पुरान इनार बा। हरदम इनार से पानी भरात रहेला, एही से एकर पानी प्रेफश बा। एक दिन सबेरे गइलीं इनार पर पानी भरे त हाथ से बालटी के रस्सी छूट गइलऋ बालटी इनार में गिर गइलऋ पानी अब कइसे भराई। माई बड़ा उदार बाड़ीऋ हमरा के डँटली नाऋ कहली : जो अजोध्या चाचा लगे झग्गर बा, जो माँग ले आव।

चाच के दुआर पर गइलीं त उफ गाय दुहत रहलन, – हम कहलीं जे इनार में बालटी गिर गइल चाचा, – माई झग्गर मंगली ह।

उफ कहलन कि गाय दूह के

झग्गर देति बानीॠ बाकी देखिहे झग्गरवा मत गिरा दीहे इनार मेंॠ राम प्रताप भइया से कहिहे कि तू बालटी निकाल।

बालटी इनार से बाबूजी निकाल दिहले। हम झग्गर लवटावे गइलीं त देखलीं कि अजोध्या चाचा अपना खंड़ी में बर–बिरवाई पटावे में लागल बाड़न।

पाँच कट्ठा के खंड़ी में उफ कवन पौध–गाछ नइखन लगवले। गजबे कर्मशील बाड़ें। सर–सब्जी, पफल–पफलहरी उनुका किने के ना परे। एने दिल्ली रहे लागल रहन बाकी साल में तीन–चार बार अइहेंॠ पनरहियन रहिहेंॠ सब संगोर के तब दिल्ली वापस जइहें।

तीनि बरिस पहिले आम्रपाली के दू गो पौध नर्सरी से किन ले अइलेंॠ खंड़ी के दू कोना में दूनो के घोरान मारि के रोप दिहलें। अब दूनों आम्रपाली तीनि बरिस में जवान पेड़ हो गइल सँॠ अब पफरे लगले सँ।

खंड़ी के देवार के जरी–जरी चारू ओर ओल के कली रोप देले बाड़न। दू बरीस के बाद एक–एक पसेरी के ओल जमीन में तइयार बा। खड़ी में किनारे–किनारे केला आ पपीता लगवले बाड़न। खंड़ी में एक कोना एगो आँवरा बा आ दोसरा कोना कटहर। एकरा बादो खंड़ी का बीच में कोबी, बैगन, मूरई, मरचाई, धनिया, करइला, लउका, नेनुआ लगावे के पर्याप्त जगह बा। चाचा ना रहसु त चाची, सानू आ मालती हमेशा लागल रहेला लो।

अजोध्या चाचा के उमिर चौंतीस–पैंतीस बरीस से बेसी ना होई। सिर पर छोट–छोट केस राखसुॠ छोट–छोट कतरल पातर मोंछॠ बिअपेफ–शनिचर के नोह–दाढ़ी ना काटत रहन। नाउफ अइलन दुआर पर त ठीक बा, ना त चाचा के सेफ्रटी रेजर कहाँ जाई! आपन हाथ जगरनाथ। पराधीन सपने सुख नाहीं। महीना डेढ़ महीना पर माथा के बार जरूर छोट करइहें।

एक दिन सोनू कहलन जे पापा दिल्ली से आइल बाड़नॠ त प्रनाम करे गइलीं उनुका दुआर पर। उल्टी बेरा रहे। पता चलल जे अँगना में बाड़न। दे खलीं कि चाचा–चाची के सामने अढ़ाई–तीन किलो आंवरा बरहगुना में राखल बाॠ उफ लोग दूनो प्राणी आंवरा में भोंकनी से खभ–खभ छेद करत बा। पूछलीं कि इ का होता? चाचा बोललन : सबेरे आँवरा के पेंफड़ से आंवरा तूरलीं हाँॠ इ दू अढ़ाई किलो मोरब्बा लाग जाईॠ कुछ चटनी बनी आ बाकी बेंच दिआई।

अइसहीं देखले बानीं, चाची आम के अंचार, कूंचा, खंटाई बना बना बोईआम में रा खलीॠ मूरई, नीम्मू, मरचाई के अँचार, पूफल कोबी के सुखौता, अदउरी–तिसउरी–पूफलउरी पार के राखली। ग़शबे होसियार बा लो।

चाचा घरे सब्जी अपना खंड़ी में पफरल–उपजल तरकारी से बनेॠ बाजार से तेल–मसाला, हरदी, जीरा, गोलकी, मंगरइल, जवा. ईन, तेजपत्ता, सरसो आदि खरीदाये। उफ बाजार पर कामे भर निर्भर रहल चाहत रहलन। तबो बे बाजार के खेती–गिरहथी कइसे चली। कपड़ा–लता किनहीं के बा। हर–बैल के जमाना गइलॠ खेत–ट्रैक्टर से जोताए लागलॠ बाकी बे कुदारी–खनती के खेती अध्रे बा। ट्रैक्टर से खेत जोतला के बाद खेत के चारो कोन कुदारी से कोड़ाईॠ आर–पगार में गोहट कुदारी से मारल जाई।

गाँव में कइगो ध्नी किसान लगे ट्रैक्टर बाॠ भाड़ा पर ट्रैक्टर–ड्राइवर मिल जाला। वोइसे अयोध्या चाचा ट्रैक्टर चलावे जानत रहलन। उफ ट्रैक्टर से खेत जोतवा लिहेंॠ खेत के चारो कोन कुदारी से कोड़ लिहेंॠ आरी–पगारी में अपने गोहट मार लिहेंॠ तीन बिघा खेत के मुरादे कतना।

धन–गहुँम के बीआ घरहीं तइयार क लिहें। खाद किने परत रहे बलैक में। एह सभी में बड़ा परेशान रहस।

एने चाचा जादे परेशान आ चिंतित रहस। कोरोना संक्रमण में इसकूल बन्न हो गइली सँ। हम आ सोनू गाँव ही मिडिल इसकूल में पढ़ीलीजा। प्राइवेट इसकूलन में ऑनलाईन पढ़ाई शुरू भइल बाॠ बाकी एन्ड्रोवॉयड मोबाइल भा लैपटॉप हमरा लगे ना सोनू लगेॠ छह महीना पढ़ाई छूटला हो गइल। सोनू अपना खंड़ी वाली जमीन में कुछ करेलन आ चाचा दिल्ली चलि जइहें तो खनती लेके खेत घूमि आवेले। एगो गाय लगहर बिआ, एगो गाभीन बिआ। पाँच किलो गाय के दूध् एमबीसी ;मिल्क बल्क सेंटरद्ध में सोनू चाहे चाचा दे आवेलन। सोनू के पढ़ाई स्थगित भइला से चाचा बहुत दुखी रहत रहलन।

परसाल से चाचा मोसकिल में रहत बाड़न। पिछला साल सोनू के मियादी बुखार लाग गइल। अयोध्या चाचा के दिल्ली से आवे के परल। सोनू के बुखार एक सई दू डिग्री – तीन डिग्री से नीचे उतरबे ना करेऋ कपार के बाथा छोड़बे ना करे। चाचा चाची एकदम घबरा गइलन। चाचा सोनू के आरे ले गइलनऋ डॉ. शुक्ला के क्लिनीक में भर्ती करवलनऋ डॉक्टर नाना प्रकार के जाँच करवलनऋ सात दिन के बाद बुखार उतरल। दवाई आ जाँच में जतना पइसा लागल ओसे बेसी क्लिनिक के भाड़ा लाग गइल। सरकारी अस्पताल में ना डॉक्टर बा ना दवाई आ प्राइवेट अस्पतालन में लूट बा। किसान क्रेडिट कार्ड पास बुक के पइसा सोनू के बेमारी में खरच हो गइल। दस–बीस मन चाउर–गेहुँम रहे घर में तवन सस्ते बेचे परल चाचा केऋ साहूकार से कुछ करजो–पइंचा करे परलऋ काहे जे होली–दिवाली, तीज–त्योहार, कपड़ा–लाता, हित–नाता, लगन–पताई कुल्हि करे के रहे एही में। सोनू घर के भविष्य हवें, उफहे ना बचिहें त का होई खेत आ बाड़ी। अयोध्या चाचा एने बेसी चिंतित रहनऋ कइसे पार लागी जिनिगी के नाव।

माई कहत रही कि अयोध्या अपने खानदान के हवनऋ सबसे निकट के गोतिया–देआद। आजादी के समय दादा लोग माने हमार दादा आ सोनू के दादा के एके परिवार रहे। दूनो दादा सहोदर भाई रहे लोग। राम सवारथ आ राम पदारथ। चौबीस बीघा के खेती रहे। दुआर पर पाँच–छव गो गाय, पाँच–छव गो भईंसऋ ओकनी के बाछा–बाछीऋ पाड़ा–पाड़ीऋ चार गो धकड़ बैल रह सँ। दुआर रवनगर लागे आ परिवार सँवगगर। गाँव के उत्तर बाग बगइचा रहेऋ सोन के अरार पर आम, जामुन, कटहर, बड़हर, नीम, पीपर–बर के कुल्हि पेंफड़ रहल। मवेशीन खातिर इपफरात चरी आ चारागाह रहे। गाँव–जवार में परिवार के मान–सम्मान रहे।

राम सवारथ दादा के दू लइका आ चार बेटी। बेटी लो के निमने विआह भइलऋ सभे अपना–अपना घरे गइल। छोटका दादा राम पदारथ के बेटी एको ना बाकी बेटा आठ जने भइलन। राम सवारथ दादा के दूना लइका लो के विआह हो गइलऋ वंश लता बढ़े लागल। छोटका दादा के बड़कू बेटा के विआह में दिक्कत ना भइल, बाकी माझिल–सांझिल के अगुवे ना आवेऋ का त गहंडी में लइकिन के सुख ना होई। अगुवा हिस्सा पर खेत जोरे लगलनऋ बारह बीघा में आठ भाईऋ एक भाई के डेढ़ बीघा। का खाई आ का बचाईऋ का लेके परदेस जाई। परिवार पफाट गइल। बहुत दिन आपुस में बोलचाल बन्न रहल।

राम पदारथ दादा के बड़कू लइका गणेश जी रहलेऋ सबसे छोटकु रमेश जी। रमेश जी आ गणेश जी के विआह भइलऋ बीच में छह जना के विआह के उमिर पार हो गइल। दू जना सुधुआ के गाँव छोड़ि दिहलेंऋ दू जने हारी बेमारी में ओरिया गइले। आजादी का बीसो बरिस ना बीतल होई कि गणेशा बाबा आ रमेश बाबा के बँटवारा हो गइलऋ एगो कुँआर भाई रमेश बाबा देने आ दोसर कुँआर भाई गणेश बाबा देने रहि गइले। छव–छव बीघा के हलुक किसान हो गइल।

गणेश बाबा के चार बेटाऋ सभकर मति–गति अलग–अलग। एह लोग के इ एहसास सतावे लागल जे छव बीघा में मात्रा डेढ़ बीघा के अवकात बा। एक जना दिल्ली भगलनऋ ओहिजे कवनो से विआह क लिहलन। दोसर जना बी. ए. पास क लेलनऋ शिक्षक बहाल हो गइलन। दू जना खेती में बाड़न। सबके चूल्हा अलगे।

रमेश बाबा के तीन बेटा। मझिलू मउगाह रहलेऋ उफ किन्नरन संगे कहीं चलि गइले। उनुक नावँ अब केहू ना पुकारे–धरे। बड़कू सिंचाई विभाग में क्लर्क बहाल हो गइलन। सरकारी आमदनी बाऋ गाँव के तीन बीघा खेत नगदी लागल बा। अयोध्या चाचा सबसे छोटकू रहन जिनका पर ठनका गिर गइल।

अयोध्या चाचा के अंतिम जात्राा के तइयारी हो रहल बा। कपफन–उपफन आ गइल बा। टिकठी पर उनुका के सुतावल जात बा। चाची बड़ी रोअत बाड़ीऋ छाती पीट–पीट रोअत बाड़ीऋ सोनू से कहत बाड़ी कि कइसे तोहरा के पोसबि ए बबुआ...

हमरा माई के बात इयाद आवत बा जे अयोध्या चाचा निकट के गोतिया–देआद हवन। माई चाची के देह धके रोअत बाड़ी। हमार करेजा पफाटत बा...। सोनू टुअर हो गइलन एकाएक...

माई के बात पेफर इयाद आवे लागल...हमनी के राम सवारथ दादा के वंशावली में बानी जा आ सोनू राम पदारथ बाबा के वंशावली में बाड़न। अब दादा लो के वंशावली में आपस में ओतना खटास नइखे। समय के मरहम घाव भर देले बा। उफपरे बतवले बानीं नूँ कि राम सवारथ दादा के दू बेटा रहन। एक जना के नावँ रहे रामकृष्ण माने राम किशुन आ दोसर जना के नावँ रहे देवकृष्ण। सभे उनुका के देव किशुन

पुकारे। हम राक किशुन जी के वंश में बानीं। हम माने शेखर। राम किशुन बाबा के दू बेटा – राम प्र. ताप आ कृष्णा प्रताप। कृष्ण प्रताप जी हमार चाचा हईं। उफहाँ के हैदराबाद में मैकेनिकल इंजीनियर बानीं। उफहाँ के हैदराबाद में फ्रलैट खरीद लेले बान. ीं। उफहाँ के दूनो बेटा लो इंजीनियर बाऋ एक जना सिंगापुर में आ एक जना अमेरिका में। कृष्णा प्रताप चाचा आपन हिस्सा खेत बेंच देले बाड़न। अयोध्या चाचा के असामयिक निध्न के समाचार उनुका मिली कि ना पता ना। जे सिंगापुर–अमेरिका में बा उफ लोग हमार आ सोनू के नाम जाने ना चिन्हे।

हमार पिता जी राम प्रताप बाबू अठारह बरिस सेना में नोकरी कइलीं आ जवानीये में रिटायर होके आ गइलीं। गाँव में बढ़िया मकान बन्न गइल बाऋ उफहाँ के पेंशनों ठीक मिलेलाऋ बाकी उफहाँ के रसरंजन बिना मन ना लागेऋ साँझ के एकदम मस्त आ पस्त रहिला। हम तीन बहिन आ एगो भाई बानीं। हिस्सा पर तीन बीघा खेत बा। दो बहिन के विआह हो गइल बाऋ एक जानी बाकी बाड़ी।

अयोध्या चाचा पढ़ाई में औसत रहले बाकी खेलकूद में बहुत आगे रहले। क्रिकेट उनुकर प्रिय खेल रहे। क्रिकेट के जिला स्तरीय टीम में रहले। बिहार में क्रिकेट खेल के बढ़िया सिस्टम नइखे आ दोसर बात घर के आर्थिक परिस्थिति से लाचार हो गइलन। तबो स्नातक पास क गइलन। नोकरी खातिर बहुत चेष कइलन, बाकी सपफलता ना मिलल। उनुकर बड़कू भाई शिवजी सिंचाई विभाग में क्लर्क हो गइलन त रमेश बाबा बहुत खुश भइले बाकी मझिलू गोपाल चाचा किन्नरन संगे चलि गइले त बाबा बहुत दुःखी रहले। अयोध्या चाचा के नोकरी ना मिलल त खेती – बाड़ी आ पशुपालन में लाग गइलन। चार – पाँच बरिस के बाद खेती से मन उफबल त भागि के दिल्ली चलि गइले। प्राइवेट कंपनी में गार्ड बहाल हो गइलन। ओही आधर पर उनुकर विआहो हो गइल। दस बरिस से दिल्लीये कमात रहलेऋ खेती – बारी के समय आवसु।

एही बीचे दिल्ली में कोविड–19 के संक्रमण तेजी से पैफले लागल। प्रधनमंत्री एकाएक एकइस दिन के लॉकडाउन के घोषणा क दिहले। ट्रेन सेवा बन्न हो गइल। सोशल डिस्टेंसिंग के नावँ पर कल–कारखाना बंद होखे लगली सँ। अयोध्या चाचा के कंपनी में ताला लाग गइल। अबहीं सोरह मार्च के होली के बाद दिल्ली गइल रहे। हाथ पर पइसा ना रहे। बहुत कष भइल। बड़ी हल्ला–गुल्ला के बाद राजधनी से पटना तक के स्पेशन ट्रेन खुलल त ओही से अयोध्या चाचा गाँवे अइलन। अबहीं ले कंपनी बंद बिआ। छह महीना से एको पइसा के आमदनी ना। लॉकडाउन में ट्रेन कुल्हि बन्नऋ जासु त कहाँ जासु। खेतीये सहारा बाँचल।

आजु रोपनी करावे महुआ तर वाला खेत पर गइल रहलन। दू पहर के बाद मौसम के रंग बदल गइल। करीया बदरी आसमान में छा गइल। एकदम अन्हार हो गइल।

हमरा कान में आवाज गूँजत बा...कड़..कड़.. कड़..कड़ाक्!! तड़..तड़..तड़..तड़ाक!!! अयोध्या चाच अड़ान लेवे महुआ तर जात बाड़न। बिजुरी चमकल आ महुआ गाछ पर ठनका गिरल। अयोध्या चाचा के देह झुलस गइल...अयोध्या चाचा के घर जरि गइल...चाची के करेजा पफाट गइल...सोनू मूर्छा खा के गिर पड़लन...

तब ले बड़ी कठोर आ उदास स्वर गूँजल... चल लो उठाव मंजिल...राम नाम सत्य है!...

तालाबंदी में नोकरी गइलऋ खेती में ठनका गिरल। अयोध्या चाचा के प्राण खेते में हेरा गइल। बारह बरिस के सोनू पढ़िहें कि खेती करिहें!

❑❑

❍ मदनजी का हाता
जीविका कार्यालय के पास
आरा – 802301)

भोजपुरी के मान बढ़ाईं, भोजपुरी साहित्य सरिता के सदस्य बनीं
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं भा लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com
भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाज़ियाबाद, उ.प्र.

भोजपुरी भाषा के पहिलका उपन्यास,बिंदिया

विजय कुमार तिवारी

हमरा समीक्षा के भूमिका

सबसे पहिले इ स्वीकार करे में कवनो संकोच नइखे कि भोजपुरी जइसन समृद्ध भाषा में साहित्य अभी ओतना नइखे लिखाइल, जेतना लिखा जाये के चाहत रहे। एकर माने इहो ना समुझल जाव कि अब तकले कुछ भइले नइखे। बहुत भइल बा, आ अब त जोर–शोर से लागल बा लोग। खूब लिखाता, आ छापा. ता। हमार भाव इहे बा कि औरु होखे के चाहत रहे। अभी थोड़हीं दिन पहिले श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी जी एगो लेख भेजले रहनी ''भोजपुरी उपन्यास के इतिहास–पुरुष रामनाथ पाण्डेय''। इहो संजोगे नु कहाई कि सितम्बर महीना में हमरा आरा–प्रवास में इतिहास–पुरुष रामनाथ पाण्डेय जी के सुपुत्र श्री वि. मलेन्दु भूषण पाण्डेय जी का हमरा से प्रेम जागल,आ उहाँ का आपना अखबार 'ग्राम टूडे' के संपादक श्री गनपति सिंह जी के साथे छपरा से अटट दुपहरिया में हांकासल–पियासल पहुँचि गइनी। हमार बड़का सौभाग्य रहे कि भोजपुरी के एतना बड़का रचनाकार–उपन्यासकार के दुगो उपन्यास–महेन्दर मिसिर आ बिंदिया, श्रद्धापूर्वक भेंट कइल लो। निश्चित रुप से ईश्वर के इ कवनो व्यवस्था रहे, ना त केहू अतना दूर से एगो अदना आदमी से मिले आ उपन्यास भेंट करे आई? हमरा बुझा गइल कि भगवान चाहतारे कि हमहूँ भोजपुरी भाषा में आपन सेवा–सहयोग करीं। एह संकेत पर मन गदगदा गइल, आ मन ही मन तय कर लिहनी कि ई काम जरूर होई।

एह क्रम में आपन एगो संस्मरण सुनावल चाहतानी। पटना में हमार तबादला धनबाद से 1982 में भइल। ओह घरी नाया–नाया लेखन के जोश रहे, बाकिर ना कवनो अखबार से परिचय रहे, ना कवनो पत्रिका से। संयोग से कहीं से पैदले लौटत रहनी, त पटना आकाशवाणी के गेट खुलल दिखाई दिहल। उत्सुकता बस भीतर गइनी। कुछु बुझात ना रहे कि केने जाई। एगो भद्र आदमी कहीं से निकलले। हमरा के तनी ध्यान से देखत,पूछले,''कुछ लिखते हैं क्या? आइये।'' हम उनका पीछे–पीछे एगो कमरा में पहुँचि गइनी। बइठे के कहलन आ पूछले कि भोजपुरी में कविता,कहानी,लेख लिखत होईं त हमरा के आपन रचना दे देबि। रचना अच्छा होई त रवुँआ के बोलावल जाई। उहाँ के नाम रहे, श्री राम जी यादव। ओकरा बाद हमार रचना,कहानी,कविता आ लेख प्रसारित होखे लागल। पटना में रहला के एगो लाभ इहो भइल कि जब दूर–दराज से कवनो साहित्यकार समय पर ना पहुँचि पावत रहे लोग, त हमार बुलाहट हो जात रहे। ओह घरी सीधे प्रसारण होत रहे। हमरा गाँव में घंटा भर पहिलहीं से घर–गाँव के लोग दुआर पर ट्राञ्जिस्टर खोल के बइठ जात रहे । हमनी का श्री जब्बार साहब के संपादन में भोजपुरी पत्रिका कलँगी निकालत रहनी जा। हमरो दू–तीन गो कहानी छपल रहे। कवनो विदेशी कविता के भोजपुरी में अनुवाद कइले रहनी। हिन्दुस्तान अखबार में हमार भोजपुरी कहानी छपल रहे।

अइसे त इ मानल जाला कि भोजपुरी भाषा सांतवी सदी में आपन रुप–स्वरुप धारण कइ लेले रहे, आ लोग लिखे–पढ़े लागल रहे। ध धीरे–धीरे जन मानस में भोजपुरी के मिठास रचत–बसत गइल, आ आजु दुनिया के अनेक देशन में खूब आदर–सम्मान के साथे बोलल, समझल जाता। आजु भोजपुरी भाषा के साहित्य समृद्ध होत जा रहल बा,आ निश्चित रुप से कहल जा सकता कि एह भाषा के भविष्य उज्वल बा।

विस्तृत समीक्षा

सारण जिला के नवतन गाँव के रहे वाला रामनाथ पाण्डेय जी के जनम भइल रहे 8 जून 1924 के, आ आपन 82 बरिस के आयु पूरा कइके उहाँ का 16 जून 2006 में एह दुनिया से बिदा ले लिहनी। शुरुवे से उहाँ के लेखन में रुचि रहे। भगवती प्रसाद द्विवेदी जी लिखले बानी–''पाण्डेय जी के लेखन के सिरीगनेस हिन्दी में भइल रहे आ उहांके 'वह वेश्या थी','फूल झड़ गयाःभौंरा रो पड़ा','नई जिन्दगीःनया जमाना','मचलती जवानी' वगैरह एक दर्जन उपन्यास लिखनीं.बाकिर मह. ापंडित राहुल सांकृत्यायन के नेक सलाह पर एकाएक उहांके आंतर मातृभाषा के सेवा खातिर तड़पि उठल रहे आ ओही घरी से ठानि लेले रहनीं कि उहांके अब भोजपुरी आ सिरिफ भोजपुरिए के विकास–बढ़न्ती खातिर तन–मन– धन से लवसान रहबि.''

उपन्यास के पहिलका संस्करण 1956 में छपल, आ ओह घरी पाण्डेय जी मात्र 32 बरिस के रहनी। आपना एह उपन्यास 'बिंदिया' के उहाँ का महापंडित आ बहु भाषाविद् राहुल सांकृत्यायन जी के आदर के साथ समर्पित कइले बानी। मसूरी से 22 फरवरी 1957 के राहुल सांकृत्यायन जी रामनाथ जी के चिट्ठी लिखनी–

प्रिय रामनाथ जी.

आपकी 'बिंदिया' मिली। भोजपुरी में उपन्यास लिखकर आपने बहुत उपयोगी काम किया है। भाषा की शुद्धता का आपने जितना ख्याल रखा है,वह भी स्तुत्य है। लघु उपन्यास होने से यद्यपि पाठक पुस्तक समाप्त करते समय अतृप्त ही रह जायेगा,पर उसके स्वाद की दाद तो हर एक पाठक देगा। आपकी लेखनी की उत्तरोत्तर सफलता चाहता हूँ।

राजेन्द्र कालेज,छपरा के प्रिंसिपल श्री मनोरंजन जी के वक्तव्य उद्धृत ना कइल जाव,त अन्याय होई। उहाँ का कम शब्दन में सटीक बात कहले बानी,''पांडेजी के भासा बड़ा सुन्दर बा,जीअत–जागत,चमकत–झमकत, फुदकत–नाचत। गाँव के खेतन के अउरी पवधन के बड़ा सुन्दर बरनन बा। कथानक अउरी चरित्र चित्रणी सुन्दर भइल बा। उनका कलम के तेज से पात्र सजीव हो उठल ह। कोदई,बुधराम,झमना,मंगरा,भगत,पुरोहित,पूजेरी अउरी बिंदिया सभे जीअत–जागत बा। कहीं ढेर बढ़–चढ़ के नइखे लिखल गइल। सामने किसान जीवन के चित्र आ जाता। बिंदिया त बिंदिए ह। कोदई अउरी बुधरामो के बहुत आछा तसवीर आइल ह।''

हमरा मन के बात, पाण्डेय जी ''आपन बात'' में खुदे लिखले बानी,''भोजपुरी के बढ़न्ती के जवन आस हमरा रहे ऊ पूरा ना भइल। बीया धरती से उपर उठल, अँकुराइल,मोलायम–मोलायम मखमल नीयर पत्ता निकसल, बाकिर अबले पवधा के जड़ मोटाइल ह ना,सोर पाताले ना ठेकल ह। अबले भोजपुरी के पेड़ के छाँह भोजपुरी जव. ानन के हरला–थकला के बाद सुसताये लायक ना बन पवलस। थकान मेटावे लायक ना भइल।''

इहे बात हमरो मन में उभकत–चुभकत रहेला। हमहीं ना,बहुते भोजपुरी के प्रबुद्ध जन लोग बा,जे एह दिशा में चिन्तन–मनन करत बा। आजु लोग सजग भइल बा,त एक ना एक दिन सुखद परिणाम मिलबे करी। केकरा के दोष दिहल जाव? ऊ एगो दौर रहे, बहुत कुछ अनर्गल, हमनी का साहित्य में, कवनो साजिश के तौर पर घुसावल गइल। हिन्दी सिनेमा में जवन गड़बड़ी कइल गइल,उहे गड़बड़ी भोजपुरियो सिनेमा आ साहित्य में भइल बा। हमनी के कलाकार लो समझिये ना पावल,तबले खेला हो गइल। ओतना फुहड़पन ना होखे के चाहीं,जेतना आजुओ परोसल जा रहल बा।

पाण्डेय जी भोजपुरियन के बड़ा सुन्दर चित्रण कइले बानी,''हाथ में लाठी,मोंछ पर ताव,आँख में करे–मरे के भाव, हिरदया में दुलार के लहरत हिलकोर,आ कंठ में विरह–वेदना के गीत।'' उहाँ का आगे लिखले बानी,''अब लागता, भोजपुरी केकरो नजर में हीन ना रही। ओकरा आदर मिली,साहित्य में आपन जगह बनाइये के रही।'' उहाँ के इ सपना देखला पैंसठ बरिस हो गइल, हमनी सब का विचार करे के चाहीं कि केतना काम पूरा भइल,आ केतना अभी बाकी बा। पाण्डेय जी एगो अउर बात कहले बानी,''अब केहू ना कहि सकेला कि भोजपुरी में कहानी नइखे, उपन्यास नइखे,नाटक आ लेख नइखे लिखात। लिखात खूबे बा, नीमन–नीमन लिखाता बाकिर छापे के जोगाड़ नइखे लागत। छपतो बा,त ओकर परचार जइसन होखे के चाहीं,नइखे हो खत।'' इ समस्या त आजुओ बा। एहू पर हमनी का विचार करे के चाहीं।

श्री विमलेन्दु भूषण पाण्डेय,उहाँ के जेठ बेटा, बड़ा आछा बात लिखले बानी,'सब धन से बेसी साहित्यिक धन हमनी के बपौती मिलल। एह बात के मने–मन गुमानो होत रहे, आ भोजपुरी खातिर श्रद्धो बढ़त रहे।'' पाण्डेय जी के बड़ पतोहू,मीना पाण्डेय जी उहाँ के बारे में बहुत बड़ बात कहले बानी,''जवन उहाँ का 'बिंदिया' में रचले बानी,स्त्री के महत्व के,ओकरा अधिकार के बात कइले बानी,ओपर जोर देले बानी,असलियो जिनगी में उहाँ के ऊहे कइनी।''

भोजपुरी के पहिलका उपन्यास के गौरव से विभूषित 'बिंदिया' उपन्यास 13 खण्ड में लिखाइल बा। उपन्यास देखे में,पढ़े में भले छोट,लघु लागता बाकिर कथ्य–कथानक बेजोड़ बा। एहके नारी–विमर्श के उपन्यास कहल जाव, त कवनो गलत ना मानल जाई। ई कम बात नइखे कि कवनो रचना अपना सृजन काल से ही जन–मानस में रचल–बसल बा।

श्री केशव मोहन पाण्डेय जी,समन्वयक,सर्व भाषा ट्रस्ट,आपना लेख ''वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भोजपुरी के पहिलका उपन्यास बिंदिया'' में अद्भुत विवेचना कइले बानी। एकरा बाद कहे खातिर कुछो अउर के जरूरत नइखे। बहू मीना जी के प्रसंग में स्वर्गीय रामनाथ पाण्डेय

जी के व्यक्तित्व के झलक मिलता। कवनो कोना बाकी नइखे जेने श्री केशव मोहन जी के ध्यान ना गइल होखे। ओइसहीं श्री प्रमोद कुमार तिवारी जी के लेख बा, हर तरह से विद्वतापूर्ण विवेचना के साथ। इ कहे में हमरा बहुते खुशी होता कि आजु से पैंसठ– सत्तर बरिस पहिले के सामाजिक ताना–बाना बेहतरीन ढंग से बुनि के,स्त्री–विमर्श पर चर्चा कइके, स्वर्गीय पाण्डेय जी भोजपुरी साहित्य में अमर हो गइल बानी।

जवना शुद्ध,आ परिपक्व भाषा के संकेत राहुल सांकृत्यायन जी कइले रहनी,पूरा उपन्यास के श्रेष्ठ बनावे में ओकर बहुत योगदान बा। साथहीं भोजपुरिया लेखन शैली के विस्तार देके पाण्डेय जी परवर्ती भोजपुरिया लेखक लो के राह आसान कई देले बानी। दुखद इहो बा कि बहुत लो एह परम्परा से आपना के, आ आपना लेखन के ना जोड़ि पावल। भोजपुरिया सिनेमा के चकाचौंध लोगन के ले डूबल। उहाँ के भोजपुरिया ग्रामीण जीवन के जवन जीवन्त बरनन कइले बानी,बेमिसाल बा। प्रकृति चित्रण के सौन्दर्य त पहिलके पंक्ति से देखल जाव–''सड़क के किनारे फूस के एगो झोपड़ी रहे। जवना पर लउकी के लतर फइल के कचमच–कचमच करत रहे। ऊजर–ऊजर फूल के साथे–साथे छोट–बड़ बतियो लागल रहे।''

इ अहसास देखीं–फसल लहलहात रहे,बयार बहला पर झूम–झूम के लोटे लागस,आ झुके लागस। अइसन बुझात रहे जइसे हमार अगवानी करतारन स। ओइसहीं, तनी इहो बिम्ब देखीं–''गेहूँ के बालिन पर ढेरका सा सोना–चानी छितरा गइल रहे।'' तनी हई उपमा देखीं–''अपना कोखी के लइका लेखा किसानन के मेहर लोग कहीं कबो पवधन के अपना कोरा में ले के चूमे लागत रहे। दुलार से आपन हाथ उनकरा पर फेरे लागे लोग।''

जे लोग गाँव में,खेत–खलिहान में रहल होई, उ एह सुख के अनुभूति कर सकेला। आजु त किसान खातिर,किसान के नाम पर बवंडर मचवले बा लोग। संघर्ष बिना कहीं कुछू न होला। किसानन के सुख बनल रहे,एकरा खातिर सबका प्रयास करे के चाहीं। प्रकृति, गीत गावत मेहरारु लो के जीवन में रस घोलि देले,सब कुछ जीवन्त हो जाला आ केहू के इयादि आवे लागला। एकर बानगी देखीं–''केराव, तीसी,मटर आ सरसो के आसमानी,उजर,बैगनी आ पीअर फूल खेत में छिंटाइल रहे। आम के बगइचा में से मोजर के गमक आवत रहे। कोइल के मीठ–मीठ बोली करेजा में तीर खानी लाग के केहू के इयाद करावत रहे।'' ''कोदई के अपना जवानी के दिन इयाद पड गइल।''

रामनाथ पाण्डेय जी जाड़ा,गरमी, बरसात,बसंत, शिशिर, हेमन्त हर मौसम में कोदई के जोस, जवानी,रुमानियत,सोच–विचार आ चिन्तन सब कुछ बेजोड़ लिखले बानी। गरमी के मौसम में अपना बैलन के चिन्ता रहत रहे,आ छाँह में प्रेम से बान्हि देसु। खाये के गठरी लेले आपना मेहरारु के आवत देखि के कोदई के मनोविज्ञान जागि जाये,मन हरियरा जाये,खड़ा हो जासु आ दोगिना जोस से काम में जुटि जासु ताकि उनकर मेहरारु इ ना समझसु कि कोदई अबर आ कमजोर होके थाकि जातारे। कवनो मरद आपना मेहरारु का सोझा कमजोर भइल ना चाहेला,आ मेहरारु लो भी इहे चाहेली कि हमार मरद हमेशा जवान आ मजबूत रहसु। पाण्डेय जी लिखतानी–''उनकर मेहरो कम ना रहली। ––मेहरारु सभन के लजाइल बड़ा सुघर लागला। ––उनकरो लजाइल बड़ा नीमन लागत रहे।'' एही ख्याल में मुनिया के इयादि आइल आ कोदई मन मसोसे लगले।

उहे मुनिया उनका के गाँव भर में सबसे अधिका चाहत रहे। परेम करत रहे। आ उहो त ओकरा पर आपन जान देत रहले। दूनो खूब आनन्द उठावत रहे। उहे कोदई आजु लाचार बाड़न आ कुछुओ नईखन करि सकत। पवधन के उदासी उनका से देखल नईखे जात।

दोसरका खण्ड में रामनाथ पाण्डेय जी कोदई से झमना के पूरा बतिआवल लिखले बानी। झमना कोदई के लइकी बिंदिया पर लट्टू हो गइल रहे बाकिर उ ओकरा के सटहीं ना दिहलस। आजु झमना कोदई के खूब कान भरता आ बिंदिया के कहानी नमक–मरिचा मिलाके सुनावता। खूब आगि लागावता। कोदई ओकरा बात में अझुराईल जातारे,दुखी होके कहले,''राम हो राम! ऊ हरामजादी अइसन हो गइल बिया?''

कोदई दुखी बाड़े कि अबले बिंदिया के बियाह ना कइके आछा ना कइनी। झमना से बोलले,''बेटा ते आज हमरा आँखि के पटर खोल देले। आ काल्ह से ते बिंदिया के खेत में ना पइबे।'' झमना पहिले धक से रहि गइल बाकिर बुद्धि लगा के कहलस कि एके बार रोकब, उहो निकस गइल त मुँह में करिखा पोता जाई। झमना आपना उद्देस में सफल होके मुसकात लवटि गइल।

कोदई दुखी मन से बिंदिया के बियाह खातिर सोचे लगलन आ उहापोह में

उभकत–चुभकत रहले। अंत में मने–मने तनी जोर से कहले,''ओकर इन्तजाम करे के पड़ी।'' बिंदिया सुन लेलस आ पूछलस,''बाबू! बुझाता तू खिसिआइल बाड़? केकर जोगाड़ करे के बात सोचत बाड़?''
एकरा बाद बाप–बेटी के बातचीत विस्तार से लिखले बानी। केहू पढ़ी त, एह चित्रन से गदगद हो जाई। कोदई के कहला पर बिंदिया ढेंढ़ी लेके पुरोहित जी के देबे चलि गइल।

कहानी आगे बढ़ल। भगत जी अइले आ कोदई का सोझा,घुमा–फिरा के बिंदिया खातिर झमनवा के पैरवी करे लगलन। कोदई का तनी चिंता रहे कि लोग कही कि घरे में घरौंदा कई लिहलन स। भगत जी कहले कि ऊ हमार बेटा ना ह,हम त ओकरा के गोद लेले बानी। गाँव के लोग जवन कही त कही। हमनी का आपन धरम निभाई जा। भगवान त सब देखते बाड़े,उनुका से केहू कुछु ना छिपा सकेला।
भगत जी साफे झूठ बोलल शुरु कर दिहले,''गाँव भर ओकर चाल जान गइल बा। मँगरा से फँसल वाली बतिया सभकरा जबान पर बा। सनिचरी कहत रहे,दे खतानी कइसे ओकर बियाह होखेला।'' भगत जी कोदई के खूब डूबावे लगलन आ उहो उनकर गोड़ छान लिहले,''अब हमार लाज अपने के ही गोड़ तरे बा।''

बिंदिया आ गइल आ दूनो लोगन के बात सुने लागल। भगत जी कहले,''तनी ओकरो से आह ले लीं,ऊ का चाहतीया? आजुकल के छँवडा–छौउड़िअन के कवन ठेकान। मँगरा जोरे उ भागियो सकेले।''

बिंदिया क्रोध के मारे काँपे लागल। घर के भीतर चलि गइल। ओने ओकर सिसकी शुरु रहे। कोदई में तनिको दम ना रहे,चुपचाप ओकर रोअल सुनत रहले। गते–गते उनकर करेजा मोम खानी पिघ ाले लागल। ओने सूरज डूबे–डूबे भइल रहले। रामनाथ पाण्डेय जी ओह घरी के प्रकृति के बदलत रंग के बेजोड़ वर्णन कइले बानी । कोदई इयादि कइले कि थाकल–हारल अइला पर मुस्कात दू गो आँखिन के देखिके हरियर हो जात रहले। बाकिर सब खतम हो गइल बा। ओने बिंदिया का करेजा में लुत्ती लागल रहे।

खेत से बुधराम अइले त मालिक का चेहरा तनिका खुश लागल। दूनो बतिआवे लगले। बुधराम खुश ना भइले कि बिंदिया के बियाह झमना अइसन बदनाम लइका से होखेवाला बा। कहलन,''अपने के जब पसन बा त हमरा भला कइसे ना होखी?''
बिंदिया कहलस,''ना बाबू,हम तोहरा के छोड़ के एको घड़ी कतहूँ ना जायेब। आपन जान दे देब बाकिर तोहरा से अलग ना हटब।''

बुधराम उपरोहित के बोला ले अइले। उहाँ का गनना देखि के पाँचवाँ दिने बियाह के दिन तय कर देनी। इहँवो पुरोहित आ कोदई के बीच के बातचीत खूब रोचक लिखाइल बा। लोगन के मनो. विज्ञान आ सभकर दाँव–पेंच सुनिके केहू समझ जाई कि रुपया–पइसा खातिर सभे बुद्धि लागाव. ला।

बुधराम पूछले.'मालिक एतना जल्दी रानी बिटिया के बियाह काहें करल चाहतानी?'' थोड़ा देर के चुप्पी का बाद कोदई कहले,''लोग कहता, बिंदिया मँगरा से फँस गइल बिया।''

बुधराम कहले,''बिटिया पर ई अछरंग लगावल सही नइखे। हम रातदिन ओकरा संगे रहिला,हमरा आँखिन का कबो धोखा ना हो सकेला।

झमन बबुआ अपने गुमान में बाड़न। मने–मने खूब पकावतारे, आ इतरात बाड़े। आकाश में चाँद देखि के झमना आपन दोस्त रमेसवा संगे खूब रस लेके बतिआवता। जब मालूम भइल कि झमना के बियाह बिंदिया से होखे वाला बा तो ओकरा नीक ना लागल। भगवान से मनावे लागल कि एकर बियाह ओकरा से ना होखे। ना त बिंदिया के आपन मेहर बना,ई गाँव भर के करेजा पर मूंग दरी। पाण्डेय जी गाँव के लोगन के नस–नस से परिचित बाड़न कि केहू,केहू का खुशी में खुश ना होला। ओने दुनो दोस्त कुछ–कुछ बतिआ के हँसत रहलन स। पूजेरी जी रमेसवा के घरे भेजि के सब राम कहानी सुना दिहले कि कइसे चउधरी बिंदिया के बियाह खातिर राजी हो गइले। झमना उनकर गोड़ पर मुड़ी राखि दिहल. सि।

दूनो लोगन के बीचे बहुत बात होखे लागल। झमना साबित करे लागल कि बिंदिया आछा लइकी बिया,केहू संगे हँसला,बोलला से केहू खराब न हो जाला। आज केकर मेहर,बेटी नइखे हँसत,बोलत? त सभे का भटिये गइल बा?
''ना रे! बिंदिया अइसन गाँव के के कहो,जवार भर में नीमन एको लइकी नइखे।''

झमना के धियान गेहूँ के खेत में चलि गइल रहे। ओकरा चारो अलँग सरसो, मटर आ तीसी झूमत रहे। लाल,पीयर,उज्जर आ आसमानी रंग के फूलन के बीच में धानी रंग के लूगा पेन्हले

बिंदिया घास गढ़त रहे। ओकरा हाथ के चूड़ी के झनझनइला से जवन राग इकसत रहे,ओकरा आगारी रामायन के राग फीका पड़ गइल रहे। पाण्डेय जी प्रकृति के चित्रण में खूब माहिर बानी आ अइसना में कवनो सयान लइकी के सौन्दर्य वर्णन बेजोड़ कइले बानी। झमना खूब खयाली पुलाव पकावे लागल।

ओने बिंदिया का सोझा अन्हार हो गइल। नींद लागत नइखे। खूब नीमन आ हँसोड़ लइकी जे गाँव भर के अँजोर कइले रहत रहे,अब ओकर चेहरा झँवरा गइल। उठि के बाप के गोनतारी खड़ा हो गईल, आ कहलस, ''हम झमना से बियाह ना करब।'' बाप खूब ि खसिअइले आ भोरहीं भेजि देबे के ठानि लिहले। बिंदिया सोचलसि कि झूठे जब मँगरा संगे बदनाम बानी त काहें ना ओकरे संगे बियाह कर लीं। राते–राति मँगरा का घरे गइल आ ओकरा के तैयार कइलसि। बुध ाराम काका मदद कइलन आ गाँव का बहरी तक ले पहुँचा अइले। गाँव में खूब थू थू होखे लागल, सब लो झमन आ भगत के धूसत रहे। उ दूनो खूब चाल चललन स, बाकिर गाँव के लोग ओकनी के साथ ना दिहल। कोदई का बाद में सच्चाई बुझाईल आ बुधराम का समझवला पर मानि गइले। बुधराम त सब जानते रहले,जा के बिंदिया–मँगरा के ले अइले। कोदई माफ कई दिहले। कोदई गिरे लगले त बिंदिया लपक के सम्हार लिहलसि आ मुड़ी राखि के रोवे लागल।

''चुप रह बेटी,''कोदई आपन हाथ ओकरा माथा पर ध के कहलन,''भगवान तोर सोहाग चान सुरुज अइसन अमर राखसु। ''

जवना काल–खण्ड में ई भोजपुरी के पहिलका उपन्यास लिखाइल,ओह घरी इ सब बहुत बड़ घटना रहल। राम नाथ पाण्डेय जी के इ एगो निमन आ नूतन सोच रहे। प्रचलित समाज व्यवस्था पर आक्रमण रहे। आपना से कमजोर के साथ बियाह कइल आ घर से भागल बहुत बड़ बात रहे। बिंदिया हिम्मत कइलस आ अंत में ओकरा हिम्मत के समाजो स्वीकार कई लिहल। नारी– विमर्श आ सुखान्त कहानी लिखि के रामनाथ पाण्डेय जी अमर हो गइनी।

समीक्षित उपन्यास– बिंदिया
उपन्यासकार – रामनाथ पाण्डेय
मूल्य – रु 200/–
प्रकाशक – सर्व भाषा ट्रस्ट,नई दिल्ली

❑❑

○ भुवनेश्वर, उड़ीसा

दिनेश पाण्डेय

दुरजन पंथ

(1)
अकरुणत्वमकारणविग्रहः,
परधने परयोषिति च स्पृहा।
सुजनबन्धुजनेष्वसहिष्णुता,
प्रकृतिसिद्धमिदं हि दुरात्मनाम्।।

–
भर्तृहरि

गसल निठुरता
हद गहिरोर
पोरे–पोर।
पोंछ उठवले हरदम सगरी,
सींघ लड़ावे के तत्पर।
सकल उधामत चाहे करि लऽ
जीति ना पइब कबो समर।
अनकर माल–मवेसी, धनि पऽ
निरलज आँखि उठावे,
सुजन बंधु सन इरिखा पारे,
दुरजन जान सुभावे।

(2)
दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाऽलङ्कृतोऽपि सन्।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयंकरः।।
– भर्तृहरि

पढ़ल–लिखल भल सुकराचारी,
ताने रहे।
कतो बिछंछल मनियारा के
कवन गहे?

(3)
जाड्यं ह्रीमति गण्यते व्रतरुचौ दम्भः शुचौ कैतवं
शूरे निर्घृनता मुनौ विमतिता दैन्यं प्रियालापिनि।
तेजस्विन्यवलिप्तता मुखरता वक्तर्यशक्तिः स्थिरे,
तत्को नाम गुणो भवेत्स गुणिनांयो दुर्जनैर्नाङ्कितः
।।

गने मंदमति धुर विनयी के
ब्रतधारी पाखंडी,
भलमानस के कपटी भाखे,
तेजसवंत घमंडी,
बीर बाँकुरा बड़ निरदइया,
मुनि सनकी घरनाँसी,
दीनहीन भोला मिठबोला,
बड़ बकता बकवासी,
धीर–गँहीर पुरुख अलचारी,
गुनवंता गुनहीना,
कवन सुजन नामी के जग में,
दूसे दुस्ट कभी ना।

(4)

लोभश्चेदगुणेन कि पिशुना यद्यस्ति किं पातकैः
सत्यं चेत्तपसा च किं शुचिमनो यद्यस्ति तीर्थेन किम्।
सौजन्य यदि किं निजैः सुमहिमा यद्यस्ति किं मण्डनैः
सद्विद्या यदि किं धनैरपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना।।
– भर्तृहरि

अउ अवगुन का लोभ भरल जब,
चुगली तब अधमाई का?
का तप, जब बा सत्यवादिता,
मन सुचि तिरिथ घुमाई का?
भलमनसी तऽ कवन आन गुन,
साज–सँवार सुनामा का?
सद् विद्या तब का धन चाहीं,
कवन मरन बदनामा का?

(5)

शशि दिवसधूसरो गलितयौवना कामिनी, सरो
विगतवारिजं मुखमनक्षरं स्वीकृतेः।
प्रभुर्धनपरायणः सततदुर्गतः सज्जनो, नृपाङ्गणगतः
खलो मनसी सप्त शल्यानि मे।।
– भर्तृहरि

दिने धुँआइल चान,
ढलल बय सरम बिहूनी,
राँड़–तलैया जल बिन सूनी,
निपढ़ पुरुख सुन्नर सुभ भेखे,
धन संगरिहा राज हबेखे,
सज्जन लो' बदहाली झेले,
उचरुंग, लंपट, बकवादी जन
राजसभा में खेले।
कइसे नीमन लागी हो,
कबले लोगवा जागी हो?

पटना

कहानी का सुनायीं

मनकामना शुक्ल 'पथिक'

गांव के परिवेश के कहानी का सुनायीं
सभे बा मतलबी केकरा के समझायीं
घर के पड़ोसिया लगावे दरहीं कूड़ा
कहले पे हमके दिखावे लमहर हुरा
धमकी त देत बा कईसे समझायीं
गांव के परिवेश के.....।

संस्कार घर–घर के स्वाहा भईल जाला
ईर्षया के आग में सबे जरते देखाला
सुनि के अनसुनी करे माने नाहीं बतिया
अंखिया में धूल झोके संझिये के रतिया
अइसने मतलबियन के कईसे समझायीं
गांव के परिवेश के.....।

ऐश आ फिजूल में करेला सभे खरचा
मुहवा से कब्भो नाहीं धरम के चरचा
मतलब परेला त सब घरे–घरे जाला
कमवा निकलते उ आंखी ना देखाला
सबके देखाला हरदम अपने भलाई
गांव के परिवेश के.....।

बांधेला सब गांव के गली में गोरू बरधा
खोलि के बहावे सब खोरी–खोरी नरदा
गलियन में कब्जा सगरौ कहां ले रेंगायी
सब चाहत बाटे अपने दरद के दवाई
अब चईत के महीना कईसे बहरे सुतायी

गांव के परिवेश के.....!

गांव के परिवेश के कहानी का सुनायीं
सभे बा मतलबी केकरा के समझायीं

❑❑

सोनभद्र, उत्तर प्रदेश

अहम् के आन्हर सोवारथ में सउनाइल

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

का जमाना आ गयो भाया, आन्हरन के जनसंख्या में बढ़न्ति त सुरसा लेखा हो रहल बा। लइकइयाँ में सुनले रहनी कि सावन के आन्हर होलें आ आन्हर होते ओहन के कुल्हि हरियरे हरियर लउके लागेला। मने वर्णांधता के सिकार हो जालें सन। बुझता कुछ–कुछ ओइसने अहम् के आन्हरनो के होला।सावन के आन्हर अउर अहम् के आन्हरन में एगो लमहर अंतर होला। अहम् के आन्हरन के खाली अपने सूझेला, आपन छोड़ि कुछ अउर ना सूझेला। ई बूझीं कि अहम् के आन्हर अगर सोवारथ में सउनाइल होखे त ओकर हाल ढेर बाउर हो जाला। ओकर सोचे–समुझे के अकिल बिला जाले। मतिए मरा जाले।अइसन आन्हरन खाति केहु आ कतनों नीमन काज कइले होखे भा ओहनी ला आपन करेजों काढ़ि के दे दिहले होखे,उनुका कतनों मान–सनमान कइले होखे, उनुका रसूख ला हरमेसा ठाढ़ रहल होखे, तबो अहम् में आन्हर लो मोका पवते ओहू बेकती के इजत बिगारे में अझुराइए जालन। अहम् में आन्हर लो अपना के सभे ले लमहर विदवान बुझेला लो। ई त सभे पता होला कि अहम् में आन्हर लो के लगे आपन कतना अउर का–का बा। भर जिनगी अहम् में आन्हर लो एने–ओने ताक–झाँक क के भा कुछ जोगाड़–सोगाड़ से जवन किछु जुटावेला, ओहके एह श्रीष्टि के सबसे उत्तम मानेला। भलहीं ओकर कीमत दुअन्नीओ भर के ना होखे।

साहित्यो में अहम् में आन्हर लो के तादात कम नइखे। इहवों अइसनका लो अपना संगे चमचा बेलचा, चेला–चपाटी आ भकचोन्हरन के गोल बना के रहेला। ओहनी के गोल के अइसनका लो एकके इसारा पर लिहो–लिहो करे में लागि जाला। कवनों भल मनई जे आपन जिनगी साहित्य के सुसुरखा में लगा देले होखे, अपना लेखनी का संगही तन–मन–ध्यान से साहित्य के समरिध करे में कवनों कोर–कसर न छोड़ले होखे, ओहुओ के इजत पर रइता फइलावे बेरा अहम् में आन्हर लो बेसरम हो जाला। कुइयाँ के बेंग लेखा अपना के शक्तिमान बुझे वाला एह लो का लगे आपन जमा का होला, ई सभे के जाने के चाही। दोसरा के लिखल पुरान साहित्य के अनुवाद उहो गूगल बाबा से पूछ–पाछ के, दोसरा के लिखलका में थोड़–बहुत हेर–फेर क के, दोसरा के लिखलका पर आपन नाँव चेंप के जवन हासिल होला, उहे एह लोग के मौलिक होला। अइसनका लो दोसरा के लिखलका बांचत बेरा जरिको ना लजाला । ओहिके नगाड़ा पीटत ई लोग डोलत रहेला आ अपना के ओह भाषा–साहित्य के पुरोधा बतावे में जीव–जाँगर से जुटि जाला। उनुका एह काम में उनुकर चमचा–बेलचा, चेला–चपाटी आ कुल्हि भकचोन्हर लागल देखालें। जरतुहाई अइसन लो के नस–नस में हिलोरा मारत रहेला। मोका लगते अपना मुखौटा चमकावे में कवनों स्तर तक चहुंप जाला लो ।

ई प्रजाति अजबे किसिम के होले। एह प्रजाति का चलते उनुका हाँ में हाँ मिलावे वाला उनकरे लेखा लोगन के कुछो अक–बक करे के मोका भेंटात रहेला। अहम् में आन्हर लो के सार्थक आ समरिध काम लउकबे ना करेला। अपने गुन गावे आ अपने पीठ थपथपावे में अइसन लो के समय बीतत रहेला। मने 'सभले बेसी सभे कुछ चाही' के मंतर के जाप आठो पहर कइल इहाँ सभन के सोभाव में भेंटाला।

मनराखन पांड़े आ भुंअरी काकी के अइसनके लोगन के धाह लाग गइल बाटे। उहो लो आ उनुका चमचा–बेलचा लो आंउज–गाँउज बोल–बाल रहल बा। मनराखन त अतना कुछ बोल रहल बाड़ें कि उनुका मनई होखलो पर कुछ लो सवाल उठा रहल बा। एगो खास तरह के बेरा में मनराखन के बोल आ करतूत दूनों देखे जोग होले। सुने में आवता कि उहे वाली बेरा नगिचा रहल बा। हाथी आ टोंटिओ बकलोलई में ढंग से अझुरा गइल बानी। एने–ओने कुछ चिरई–चुरमुन अपने चकर–चकर में लागल बाड़ें। मने एह घरी बकलोलई के बोलबाला बा। सभे एह घरी अपने के कुछ खास देखावे में लागल बा। अहम् में अन्हरन के त बागे नइखे मिलत। अइसन कुछ देख–सुन के कुछ लो मुस्कियो मार रहल बा। अब देखीं, रउवो सभे के मुस्कियाये के मन हो रहल होखे, त मन के मति मारीं। जी भर के मुसकियाईं। अब हमरा चले के बेरा हो गइल बा, फेर हलिये भेंट होखी।

❑❑

बरहुआं, चकिया, चंदौली

जुबान पर चढे आ दिल में उतरे वाला कवि हईं कैलाश गौतम

मनोज भावुक

जुबान पर चढ़े आ दिल में उतरे वाला कवि हईं कैलाश गौतम. कवि रहनी हम नइखीं कहत. कवि हईं कहेतानी. एह से कि कवि त मरबे ना करे. मरियो के अमर हो जाला. भले कैलाश गौतम जी हमनी के बीच में नइखीं बाकिर 'अमौसा के मेला ', 'गुलबिया के चिठ्ठी ', 'बड़की भौजी, 'कचहरी न जाना',' गाँव गया था गाँव से भागा', 'पप्पू की दुल्हन'... .के गूँज–अनुगूंज बड़ले नू बा ? दिल में सीधे उतर जाए वाला एह लोक कवि, जन कवि, गँवई संस्कृति के कवि, आम आदमी के कवि के त साजिशो क के बिसरावल नइखे जा सकत.

आज कैलाश गौतम जी के जयंती ह. उहाँ के जनम 8 जनवरी 1944 में डिग्घी गाँव, चंदौली (उत्तर प्रदेश) में भइल रहे. एम.ए., बी.एड. कइला के बाद शि क्षक बने खातिर इलाहाबाद आ गइनी बाकिर बन गइनी आल इंडिया रेडियो के आकाशवाणी इलाहाबाद केंद्र में ब्वउचमतम. आकाशवाणी से रिटायर भइनी त हिंदुस्तान अकादमी के अध्यक्ष बननी. साहित्य सेवा चलते रहे कि घूमते–फिरत, हँसी–ठिठोली करत, मंच पर खुल के ठहाका मारत आ कवि सम्मेलन करत 9 दिसम्बर 2006 के दुनिया के अलविदा कह देनी.

आहि दादा, अइसे केहू जाला का ? तीने दिन पहिले 6 दिसम्बर के त उहाँ से बात भइल रहे. कहनी कि '' मनोज आइब लंदन. दू तीन साल से टरत हौ, अबकी आइब. बुझाता लंदने में तोहसे भेंट लिखल हौ.'' नगदे आधा घंटा बात भइल कैलाश गौतम जी से बाकिर हम ई का जानत रहनी कि भेंट त दूर फेर कबो बातचीत भी ना हो सकी.

तब हम इंग्लैण्ड में इंजिनियर रहनी. गीतांजलि बहुभाषीय साहित्यिक समुदाय, बर्मिंघ ाम, यूके के कार्यक्रम में कैलाश जी के आवे के रहे. ई बात गीतांजलि के अध्यक्ष डॉ. कृष्ण कुमार जी हमरा से बतवले रहनी. हमरा ओही साल सितम्बर में कलकत्ता में कैलाश जी से भेंट होखे के रहे. ममता कालिया जी बतवले रहनी– ''मनोज आओ. कैलाश जी भी आयेगें.'' दरअसल सितम्बर 2006 में हमरा भोजपुरी गजल–संग्रह ' तस्वीर जिंदगी के '' पर भारतीय भाषा परिषद सम्मान मिलल गीतकार गुलजार आ ठुमरी लीज. ेंड गिरिजा देवी जी के हाथे कलकत्ता में. ओही में आवे के रहे कैलाश जी के. ना अइनी. भेंट ना लिखल रहे. कबो ना भेंट भइल. बस बाते भइल आ बाते रह गइल आ बाते गूँजत बा.

अब देखीं कि कइसन–कइसन बात कइले बानी कैलाश गौतम जी अपना कवितन में आ कइसे कइले बानी ... सबसे पहिले चलीं बड़की भौजी के पास ...

आँगन की तुलसी को भौजी दूध चढ़ाती है
घर में कोई सौत न आए यही मनाती है ।
भइया की बातों में भौजी इतना फूल गई
दाल परोसकर बैठी रोटी देना भूल गई ।।

दरअसल कैलाश जी कविता में जीवन खोजीं, मृत्यु ना, हँसी खोजीं, दुख ना बल्कि दुःख में भी सुख के तालाश करीं कैलाश गौतम जी ...

आजी रँगावत हईं गोड़ देखा
हँसत हँउवे बब्बा, तनी जोड़ देखा।
घुँघटवे से पूछे पतोहिया कि, अईया,
गठरिया में अब का रखाई बतईहा।

उक्त पंक्ति ''अमौसा क मेला'' के ह. इलाहाबाद वाला कुम्भ में अमावस्या के समय सबसे बेसी भीड़ लागेला. एही से कैलाश जी अपना कविता के शीर्षक ''अमौसा क मेला ''र खनी. पूरा कवितवे कमाल के बा. बुझाते नइखे कि कवन अंश उधृत कइल जाय आ कवन

छोडल जाय. ई कविता हम लाइव सुनले बानी भारतीय नृत्य कला मंदिर पटना में, 1995 में. कवि सत्यनारायण जी संचालन करत रहीं. हम दर्शकदीर्घा में बइठ के खूब हँसल रहीं आ थपरी पीटले रहीं बाकिर संकोचवश कैलाश जी से मिल ना सकनी.

कुम्भ के मेला में पहुंचे से पहिले रेलवे स्टेशन पर ट्रेन के भीतर के एगो दृश्य देखीं –

मचल हउवे हल्ला, चढ़ावऽ उतारऽ,
खचाखच भरल रेलगाड़ी निहारऽ.
एहर गुर्री–गुर्रा, ओहर लुर्री–लुर्रा,
आ बीचे में हउव शराफत से बोलऽ
चपायल ह केहू, दबायल ह केहू,
घंटन से उपर टँगायल ह केहू.
केहू हक्का–बक्का, केहू लाल–पियर,
केहू फनफनात हउवे कीड़ा के नियर.
बप्पा रे बप्पा, आ दईया रे दईया,
तनी हम्मे आगे बढ़े देतऽ भईया.
मगर केहू दर से टसकले ना टसके,
टसकले ना टसके, मसकले ना मसके,
छिड़ल ह हिताई–मिताई के चरचा,
पढ़ाई–लिखाई–कमाई के चरचा.
दरोगा के बदली करावत हौ केहू,
लग्गी से पानी पियावत हौ केहू.
अमौसा के मेला, अमौसा के मेला.

अइसहीं '' कचहरी न जाना '' कैलाश गौतम जी के अद्भुत कविता बा –

कचहरी की महिमा निराली है बेटे
कचहरी वकीलों की थाली है बेटे
पुलिस के लिए छोटी साली है बेटे
यहाँ पैरवी अब दलाली है बेटे
कचहरी का मारा कचहरी में भागे
कचहरी में सोये कचहरी में जागे
मर जी रहा है गवाही में ऐसे
है तांबे का हंडा सुराही में जैसे
लगाते–बुझाते सिखाते मिलेंगे
हथेली पे सरसों उगाते मिलेंगे
कचहरी तो बेवा का तन देखती है
कहाँ से खुलेगा बटन देखती है

पप्पू की दुल्हिन एगो नायाब कविता बा. बदलत जमाना पर गजब के चुटकी लीहल गइल बा –

पप्पू के दुल्हिन की चर्चा कालोनी के घर घर में,
पप्पू के दुल्हिन पप्पू के रखै अपने अंडर में
पप्पुवा इंटर फेल और दुलहिया
बीए पास हौ भाई जी
औ पप्पू असू लद्धड़ नाही, एडवांस हौ भाई जी
कहे ससुर के पापा जी औ कहे सास के मम्मी जी
माई डियर कहे पप्पू के, पप्पू कहैं मुसम्मी जी
गाँव गया था, गाँव से भागा ... कविता के शीर्षके बेजोड़ बा आ बहुत कुछ कह देता.
गाँव से भागा
रामराज का हाल देखकर
पंचायत की चाल देखकर
आँगन में दीवाल देखकर
सिर पर आती डाल देखकर
नदी का पानी लाल देखकर
और आँख में बाल देखकर
गाँव गया था
गाँव से भागा।

कैलाश जी के कविता आ गीत आमजन के जुबान पर खूब चढ़ल. खड़ी बोली में आंचलिकता के दर्शन करावे वाला अइसन दोसर केहू कवि ना भइल. 'बाबू आन्हर माई आन्हर' जइसन गीत फकीरी आ कबीरी स्वभाव के बिना कहाँ संभव बा. बेलाग लपेट के साँच कह देवे के ताकत रहे कैलाश गौतम जी में –

सिर फूटत हौ, गला कटत हौ, लहू बहत हौ, गान्हीभ जी
देस बँटत हौ, जइसे हरदी धान बँटत हौ, गान्ही जी
बेर बिसवतै रूवा चिरई रोज ररत हौ, गान्ही जी
तोहरे घर क' रामै मालिक सबै कहत हौ, गान्हीन जी।

व्यंग्य त कमाल के करत रहीं कैलाश जी –

बिना रीढ़ के लोग हैं शामिल, झूठी जै–जैकार में
गूंगों की फरियाद खड़ी है, बहरों के दरबार में
खड़े–खड़े हम रात काटते, खटमल मालिक खाट के
क्या कहने इस ठाठ के

कैलाश जी विलक्षण प्रतिभा के धनी रहनी. नवगीत से लेके जनगीत तक उहाँ के अभिव्यक्ति अद्भुत रहे. हिन्दी नवगीत के उहाँ के ग्रामीण संस्कार दिहनी. लोकभाषा में अइसन धारदार कविता लिखे वाला कहाँ केहू लउकत बा? असली सम्मान त इहे नू ह– जनता के दिल में बसल.

वइसे कैलाश जी के उत्तर प्रदेश सरकार के सर्वोच्च सम्मान यश भारती आ प्रसिद्ध ऋतुराज सम्मान के अलावा अखिल भारतीय मंचीय कवि परिषद के ओर से शारदा सम्मान, महादेवी वर्मा साहित्य सहकार न्यास के ओर से महादेवी वर्मा सम्मान, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के राहुल सांकृत्यायन सम्मान, लोक भूषण सम्मान, सुमित्रानन्दन पंत सम्मान जइसन

अनगिनत सम्मान से सम्मानित कइल गइल बा.

कैलाश जी के जिनगी भर के कमाई बा – 'सीली माचिस की तीलियाँ '(कविता संग्रह), जोड़ा ताल '(कविता संग्रह), 'तीन चौथाई आन्हर ' (भोजपुरी कविता संग्रह), 'सिर पर आग '(गीत संग्रह), 'तंबुओं का शहर '(उपन्यास), 'आदिम राग' (गीत–संग्रह), 'बिना कान का आदमी' (दोहा संकलन), कविता लौट पड़ी, अउर 'चिन्ता नए जूते की '(निबंध–संग्रह).

वर्ष 2017 में कैलाश गौतम जी के बेटा कवि श्लेष गौतम के संपादन में 'लोक भारती प्रकाशन' से

'कैलाश गौतम समग्र' तीन खंड में प्रकाशित हो गइल. श्रीनरेश मेहता, श्रीलाल शुक्ल, डॉ धर्मवीर भारती, प्रो दूधनाथ सिंह, प्रो सत्यप्रकाश मिश्रा आ डॉ बद्धिनाथ मिश्रा जी के भूमिका के साथ देश के नामचीन संपादक–आलोचक के लेख आ कैलाश गौतम जी के लगभग समग्र गद्द व पद्द, लगभग 1500 पृष्ठ में प्रकाशित बा.

साँच पूछीं त कैलाश गौतम जी के तमाम गीत–कविता लोग के दिमाग पर छपल बा आ जुबान पर बसल बा काहे कि ओह में आम जिंदगी के सीधा अउर सच्चा प्रतिबिंब बा.

❑❑

❍ **ग्रेटर नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश**

एगो भोजपुरिया क्रांतिकारी संन्यासी : दंडी स्वामी विमलानंद सरस्वती

रवि प्रकाश सूरज

जदि भगवान बुद्ध के 'लाइट ऑफ एशिया' कहल गइल बा त उनकरा जिनगी प आधारित भोजपुरी के पि हलका महाकाव्य 'बउधायन' भोजपुरी साहित्य के जोत कहाई, अंजोर कहाई. 'बउध ायन' के बारे में हवलदार त्रिपाठी लिख रहल बानी कि इ पूनम के चनरमा ह आ बाकी किताब तरई अइसन बा.

इ साल हमनी के भोजपुरी के पहिलका महाकाव्य 'बउधायन' आ भोजपुरी कर पहिलका कहानी–संग्रह ' जेहल के सनदि' के रचनिहार दंडी स्वामी विमलानंद सरस्वती (पूर्वाश्रम– अवध बिहारी सुमन) के जनमशताब्दी मना रहल बानी जा. स्वामी जी के जनम बिहार राज्य के मंगराँव (बक्सर) में 1921 इ. के मकर सकरात के दिने भइल रहे. एगो खेतिहर परिवार में जनम होखला के बादो इहाँ के मेधावी छात्र रहीं. बचपने से महापुरुसन के जिनगी, देस के राजनीतिक–सांस्कृतिक इतिहास पढ़ला के इहाँ प बहुत प्रभाव परल. राजनीति आ साहित्य दुनो देने झुकाव रहे– 1938 ई . में तत्कालीन शाहाबाद जिला के छात्र संगठन के मंत्री इहाँ के मना. नीत भइनी. ठीक एक साल बाद 1939 ई. में कांग्रेस पार्टी के किसान आन्दोलन से इहाँ के सक्रिय जुड़ाव हो गइल आ ओही साले बक्सर में हिंदी साहित्य परिषद् के स्थापना कर दिहनी. सुराज के लड़ाई में स्वामीजी अपना–आप के झोंक दिहनी आ नतीजा इ भइल कि 1940 ई . में जेल के जतरा करे के परल. जेले में इहाँ के भेंट नागार्जुन जी से भइल. नागार्जुन जी इहाँ के भोजपुरी भासा में कलम चलावे के उपदेस दिहनी. स्वामीजी के हिरदा में माईभासा के अइसन बरियार प्रेम उपजल कि इहाँ के भोजपुरिये में लिखे के प्रतिज्ञा ले लेनीदृ 1942–43 ई. से जवन कलम भोजपुरी के सेवा में चले के चालू भइल उ अनवरत चलत

भोजपुरी के बारे में स्वामीजी लिख रहल बानी – "एकरा मीठापन आ मोलायमी का आगा सबकरा आपन माथ नवावे के परी. महतारी के दूध पिए का साथै हमन का जवन भासा सिखलीं जा आजुवो ओकरा में उहे सवाद बा". उहाँ के मत रहे कि आमजन के शिक्षित करे के बा त ओकरा के ओकर मातृभासा में पढ़े दिहल जाव. आगा उहाँ के लिखतानी दृ " ...पढ़ावे के सबसे सहज उपाय रोज क बोलचाल वाली भासा बा. जनता के हित खातिर जनता के भासा में लिखल जरूरी बा.

1948 ई. में भोजपुरी कहनिन के पहिलका संग्रह 'जेहल के सनदि' छप के आइल आ जनता हाथों–हाथ लिहल. एह संग्रह में भोजपुरिया समाज के यथार्थ के चित्रण रहे. संउसे कहानी जनवादी बिचार के बाड़ीसन. भोजपुरी के संगे हिन्दियो में ले खनी बराबर चलत रहलदृ 1946 ई. में हिंदी साप्ताहिक 'कृषक' आ 1948 ई. में काव्य–संग्रह 'मकरंद' के प्रकाशन भइल. सहजानंद सरस्वती आ राहुल सांकृत्यायन के सान्निध्य में स्वामीजी कांग्रेस आ किसान आन्दोलन में सक्रिय भाग लिहनी. राहुल जी राजनीतिके ना साहित्यिको मीत रहीं. राहुल जी आ नागार्जुन जी के संगे मिल के कई गो किताबिन के सम्पादन भइल.

देस आजाद भइल आ 1950 ई. में भोजपुरी के पहिलका साप्ताहिक 'कृषक' बक्सर से छपे शुरू भइल. 'भोजपुरी कहानियां' पत्रिका में उपन्यास 'जिनिगी के टेढ़ राह' धारावाहिक रूप में छपे लागल. जुलुम के आगा कबहूँ माथ ना नवावे के आ जनता के सेवा खातिर जवन संकल्प ले के स्वामीजी राजनीति में उतरल रहीं ओकरा में दलगत राजनीति के दलदल देख के मन में घिरिना उपजे लागलदृ 1952 ई. में स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में राजपुर–रामगढ़ से चुनावो लड़नी बाकी सफलता हाथे ना लागलदृ 1953 ई. में देस भरमन के मवका मिलल आ 1954 ई. में बक्सर में स्वामी सहजानंद सरस्वती आश्रम आ विद्यालय के स्थापना कइनी. राजनीति के बेवसाय में बदलत देख के जवन घिरिना मन में उपजल रहे ओकर नतीजा इ भइल कि पद–मरजादा के लतिया के शांति के बिचार से संन्यास के गेरुआ कपडा धारन कर लिहनी. संस्कृति आ अध्यात्म के ग्रंथन के नजरि से देखलो–समझल साधू समाज में प्रवेश के कारन रहल. स्वामीजी संन्यास के शुरूआती जिनगी के अनुभव साझा करत लिखले बानी कि साधुओ समाज में रंगुआ सियार बाड़े आ काहिलन–ठगन के भारी मेला बा. बाकिर स्वामीजी के मन दृढ रहे, आत्म. विश्वास के कवनो कमी ना रहे आ इहाँ के आध्यात्मिक साधना आउर लोककल्यान के आपन लक्ष्य मान के आगा बढे प्रण कइनी. आध्यात्मिक आश्रम में ढुकला के बादो इहाँ के अन्धविश्वास–पाखंड आ कर्मकांड से दूर रहीं.

आध्यात्मिक ग्रन्थन के अध्ययन के दौरान भगवान् बुद्ध के विलच्छन तप–तेयाग, परोपकार–सेवा से स्वामीजी एतना प्रभावित हो गइनी कि बुद्धदेव के जिनगी प महाकाव्य रचे खातिर कलम उठवनीदृ 1960 ई. में महाकाव्य 'बउधायन' के रचना आरम्भ भइल जवन 12 साल बाद 1972 ई. के सावन के अंजोर में पूरा भइल. एहि बीचे 1964 ई. में स्वामीजी राजगुरु मठ, शिवाला घाट, वाराणसी में आ के स्थायी रूप से रहे लगनी. एह दौरान आश्रम के देने से कई गो आध्यात्मिक जनोपयोगी ग्रन्थन के प्रकाशन भइल. महाकाव्य' बउधायन' में लगभग ४०००० पंक्ति बा जवन 31 गो सर्गन में विभाजित बा. 'बउधायन' पूरा होखला के बादो क्यों गो कारन से एकरा छपे में देरी भइल. २५ जनवरी, 1980 ई. के बिहार के भोजपुरी अकादमी में एकरा के छपे के एकरारनामा भइल. हालाँकि एकरारनामा होखे के बेर 'बउधायन' के मुखबन्ध (भूमिका) लवटा दिहल गइल. 'बउधायन' के मुखबन्ध के एगो अलगा पोथी के रूप में 'बउधायन–बोध–दीपक' नांव से 1980 ई. में राजगुरु मठ, शिवाला से प्रकाशन भइल. स्वामीजी लिखले बानी कि एह मुखबन्ध के पढ़ल महाकाव्य के समझे खातिर जरूरी बा. संउसे साहित्य जगत में बहुते कम अइसन ग्रन्थ होई जेकर भूमिको एतना विस्तृत लिखाइल बादृ 1983 ई. में छपे के साथे महाकाव्य 'बउधायन' भोजपुरिये ना बलुक पूरा साहित्य संसार के अचरज में डाल डेल्स. कई गो विश्वविद्यालयन के सिलेबस में त शामिले भइल, एकरा प विद्वान लोगन के टीका–टिप्पणी लिखाये लागल. डॉ कृष्णदेव उपाध्याय एह महाकाव्य के दर्सनोशास्त्र के ग्रन्थ मानत लिखले बानी कि हिंदी त छोड़ीं, कवनो भारतीय भासा आ अंग्रेजी में अइसन कवनो ग्रन्थ नइखे. स्वामीजी एह ग्रन्थ में बुद्धदेव के जीवन–चरित त लिखलहीं बानी ओकरा से आगा बढ़ी के उहाँ के बौद्ध धरम के कुल्ह सम्प्रदायन के दार्शनिक विवेचन, तत्त्वज्ञान के व्याख्या, धरम प्रचार, बौद्ध संगीति आदि के बारे में लिखले बानी. बौद्ध धरम के अलावे एकरा में भोजपुरी क्षेत्र के कला–संस्कृतियो के अजगुत बरनन बा. डॉ विवेकी राय एह महाकाव्य के बौद्धधरम के विश्वकोश के संज्ञा देत

कह रहल बानी कि बुद्ध भगवान् के धर्मचक्रप्रवर्तन जइसन इ महाकाव्य भोजपुरी के साहित्य चक्र प्रवर्तन कर रहल बा. अपना भीतर इतिहास, दर्शन, काव्य, भासा आ संवाद के अजगुत शिल्प समेटले शायदे अइसन कवनो महाकाव्य लिखाइल होई. डॉ उदय नारायण तिवारी 'बउधायन' महाकाव्य के भोजपुरी साहित्य के 'इलियड' कहले बानी. 'बउधायन' महाकाव्य आजुओ बौद्ध धरम के अध्ययन खातिर महत्वपूर्ण ग्रन्थ मानल जायेला.

दंडी स्वामी विमलानंद सरस्वती जी एकर अलावे हिंदी–भोजपुरी साहित्य में अनेकन गो रचना कईले बानी जवना में प्रमुख बाकृ'जिनिगी के टेढ़ राह' (उपन्यास), आत्मकथा, 'देवा कि दिव्य विभूति' (सहजानंद सरस्वती प आधारित गाथा–काव्य), पत्रन के संकलन, 'ब्राह्मण कौन' आदि. स्वामीजी के संउसे रचना–संसार त दूर अबहीं ले भोजपुरी साहित्य के अनमोल थाती 'बउधायन' के ठीक से मुल्यांकन नईखे भइल. अइसहूं स्वामीजी के व्यक्तित्व आ कृतित्व बहुआयामी बा जवना में एगो स्वतन्त्रता सेनानी, कवि, कहानीकार, दार्शनिक, इतिहासकार, आध्यात्मिक संत सभके दरसन हो जाई. हमरा से पूछब त हम कहब कि स्वामीजी एगो भोजपुरिया क्रन्तिकारी–संत रहीं.

राजगुरु मठ, शिवाला के पीठाधीश्वर दंडी स्वामी अनंतानंद सरस्वती से एगो मुलाकात

दंडी स्वामी विमलानंद सरस्वती (अवध बिहारी सुमन) के व्यक्तित्व–कृतित्व के बारे में जानकारी के उद्देश्य से वारणसी के शिवाला में राजगुरु मठ के जतरा भइल. ओहिजा मठ के पीठाधीस आ संरक्षक अनंतानंद सरस्वती महाराज से भेंट भइल आ लमहर बतकही भइल. ओकर प्रमुख हिस्सा इहाँ दे रहल बानी . **हम** एह साक्षात्कार खातिर स्वर्गानन्द महाराज के बिसेस रूप से आभारी बानी. अनंतानंद महाराज के जनम बक्सर जिला के धूम राय के डेरा गाँव में भइल रहे. इहाँ के वाराणसी आ लखनऊ से पढ़ाई कईनी. पत्रकारिता में उच्च शिक्षा प्राप्त करके इहाँ के आध्यात्मिक संसार के देने मुड़ गइनी आ संन्यासी के रूप में 2011 के बाद शिवाला आश्रम में सेवा दे रहल बानी.

हमः स्वामीजी परनाम. हम आज अपना के विमलानंद महाराज के कर्मभूमि एह आश्रम में आ के अपना के ध न्य मानतानी.

स्वामीजीः आसिरबाद. राउर स्वागत बा, बताईं राउर का प्रयोजन बा?

हमः इ साल विमलानंद जी के जनमशती साल ह. हम उहाँ के व्यक्तित्व–कृतित्व के बारे में जाने के चाहतानी.

स्वामीजीः जी जरुर, हम कोसिस करब कि रउवा के जानकारी दिहीं, पूछीं.

हमः स्वामीजी एह मठ में कब अइनी आ एहिजा आ के उहाँ के कवन–कवन रचना कइनी?

स्वामीजीः स्वामीजी 1964 ई. से एह मठ में निवास करे लगनी आ इ कुल्ह किताबिन के रचना (किताब हमरा हाथ में देत) एहिजे से कइले बानी.

हमः 'बउधायन' के अलावे आउर कुछ ग्रन्थ लउक रहल बा.

स्वामीजीः जी, ' उधायन' एहिजे पूरा भइल रहे आ मठ के परम्परा से जुड़ल कुछ जनोपयोगी किताबो बा.

हमः राजगुरु मठ के बारे में कुछ बताईं.

स्वामीजीः इ मठ आदिगुरू शन्कराचार्य के स्थापित कइल परम्परा में बा एक–से–एक संत एह परम्परा में भइल बानी जवना में स्वामी सहजानंद सरस्वती, विम्ल्नंद सरवती से त सभे परिचित बा.

हमः विमलानंद जी के संन्यास लेवे के का कारन रहे आ उहाँ के परिवार–विवाह आदि के बिसय में का जानकारी बा?

स्वामीजीः परिवार आ बियाह आदि के बिसय में कबो जानकारी लेवे के कोसिस ना भइल आ संन्यास लेवे के पाछा त आध्यात्मिक झुकाव जरुर होई बाकि बिसेस कुछ ना कहल जा सके.

हमः एह मठ के मुख्य कार्य का बा धरम प्रचार कि लोककल्यान?

स्वामीजीः धरम प्रचारो त लोकेकल्यान नु ह. भारतीय संस्कृति आ परम्परा के रक्षा करे के जवन मिशन शन्कराचार्य ले के चलल रहीं मठ ओकर प्रसार कर रहल बा. एकर अलावे मठ के देने से लगातार साहित्यिक–सामाजिक गतिविधि होत रहेला.

हमः मठ के दासा त बहुते खराब बा लागता कि कुछ निर्माण के कार्य चलता (मजूरा–मिस्त्री के ओर ताकत).

स्वामीजीः एह मठ के दासा त आउर खराब रहे. हम एहिजा 2011 ई. के बाद अइनी त गते–गते अपना प्रयास से एकरा के सहेजे के काम में लागल बानी. (तनिकी सा रूक के) विमलानंद महाराज के रहते इ मठ आ सम्पत्ति विवाद में फंस गइल रहे एकरा के कुछ नगीचे के लोग हड़पे के पूरा प्रयास कईले. हम जब अइनी त एकर मुक्ति के लमहर लड़ाई लड़नी. (कुछ कागज हमरा देने

बढावत) देखीं, इ सब कानूनी कागज बा. नकली कागज बना के मठ आ धन हड़पे के खूब प्रयास भइल.

हमः इ त विमलानंद जी के वसीयतनामा बुझा रहल बा.

स्वामीजीः जी, स्वामीजी के वसीयते के जाली नकल बनावल गइल रहे. स्वामीजी के लिखल किताबो प अधिकार करे आ हेर–फेर करे के प्रयास भइल बा बाकिर फिलहाल अब सब धरोहर सुरक्षित बा. बहरी के लोग के पता ना होई बाकी सभके जाने के चाहीं कईसे स्वामीजी के धरोहर बर्बाद करे प कुछ लोग लागल रहे.**हमः** जी हम देख रहल बानी कि सब किताब बहुते पुरान बाड़ीसन. का एकनी के रीप्रिंट के कवनो बिचार मठ के देने से बा?

स्वामीजीः देखीं, पहिला काम सहेजे के ह जब उ हो जाई त संवारे के काम बा. मठ त रहे लायक ना रहे. हॉल, कार्यालय सभके ढलाई हो रहल बा रउरा देखते बानी. बिच–बिच में कुछ संकटो आ जायेला . सब कुछ बन जाये त लाइब्रेरी आ किताब छपवावे प लागे के बा.

हमः (किताबिन से भरल रेक देखत) लाइब्रेरी त बहुते समृद्ध बा. हम कामना करतानी कि स्वामीजी के धरोहर जल्दिये सभके सोझा आवे.

स्वामीजीः विमलानंद जी के धरोहर इ कुल्ह किताब बाड़ीसन, आजुवो एह मठ में कई गो छात्र–शोधार्थी लोग आवेले. बाकिर स्वामीजी के व्यक्तित्व–कृतित्व प बढिया शोध कार्य होखे के बाकी बा . भोजपुरी साहित्य से सरोकार रखे वाला लोगन के ध्यान देवे के होई.

हमः सहजानंद सरस्वती, विमलानंद सरस्वती आ आउर कुछ जवन एह परम्परा के संन्यासी लोग बा उ सभे खेतिहर समाज आ आन्दोलन से जुड़ल बा.

स्वामीजीः खेती त जिनगी के आधार ह. खेतिहर खुस त राष्ट्र खुस. लगभग सभे खेतिहर परिवारो से रहे त जाहिर बा कि खेतिहर समाज के कल्याण खातिर सोची.**हमः** भोजपुरिया समाजो मूल रूप से खेतिहर समाज बा. आज के भोजपुरिया समाज प राउर कवनो टिप्पणी.

स्वामीजीः खेतिहर आ खास क के यूपी–बिहार के खेतिहर त अब मजूर बन गइल बाड़े. खेती–बारी त दूर के चिरईं होखत जाता. इ दु खद इस्थिति बा. सहजानंद सरस्वती, विमलानंद सरस्वती आदि संत लोगन के साहित्य आ वाणी से जनकल्यान सम्भव बा. भोजपुरी समाज के कुछ व्यक्ति आ समूह में जवन अहंकार के भावना बइठ गएल बा उहे गड़बड़ी के मूल कारन बा. भोजपुरी के साहित्यकार लोग के आगा आ के राह देखावे के चाहीं.

हमः बहुत बहुत धन्यवाद स्वामीजी.

स्वामीजीः आसिरबाद. स्वामीजी के कुछ किताब हम रउआ के दे रहल बानी आ रउआ 14 जनवरी के समरोह में आमंत्रित बानी.

(विमलानंद जी के किताबिन में लिखल जानकारी आ अनंतानद महाराज से बतकही प आधारित)

❑❑

(लेखक मैथिली–भोजपुरी अकादमी दिल्ली सरकार में सदस्य बानी आ बिहार समाज विज्ञान अकादमी के कार्यकारिणी सदस्य बानी)

ममता सिंह

चुनाव

आ गईल बा चुनाव
आपन जिम्मेवारी निभावे के बा
चली करी हम सब मतदान
आपन देश बचावे के बा
जे रक्षा करी हमार देश के
उनका वोट देवे के बा
चिंता ना बा ई महंगाई के
देश के इज्जत बचाने के बा

कउनो देश से डरेम ना
हमनी आपन देश मजबूत करे के बा
जेकरा ना बा शानो शौकत तब काहे
उनका से डरे के बा
देश के खातिर मेहनत करी
जे उनका सिर्फ जितावे के बा
लोकतंत्र के पर्व आ गईल
सज धज के बाराती बने के बा

एक वोट से बदलेम हमनी
आपन ताकत दिखावे के बा
सब काम काज छोड़ के
वोट डाले जाए के बा
मिलल बा मौका हमनी के
इतिहास हमनी के बदले के बा
जाति धर्म से ऊपर उठकर
आप नेता चुने के बा ।

❑❑

❍ नोएडा , उ0 प्र0

महागल्प

डॉ मुनि देवेन्द्र सिंह

दुन्नो सूतपकड़ संगे
(पहिल : इतिहास किसोर
दोसर : हिन्दी शिशु)

ई ओ दिनन क बतकही ह जभ बउध धरम क पसार पूरुब से पच्छिम ले अपना चुंडी प रहल।भारत के पूरुब देस चीन क समराट, ईसा जोसुआ के दिब आरोहन के साठ बरस बितले अधिआइल रात मे एठे सपना देखलस कि चीनी राजदरबार में दिबमंडल के निच्चे बड़का पगोडा के बिसाल अंगना में सोनउल चम ख क एगो महापुरुख उतरत बा ।माथा प सोना क मु खुट, गला में बैजनती क माला अउर ओकरा काने में बड़हर–बड़हर बाला झूलत रहलैं ।ओकर ऑखि राजा के एखटख निहारत रहलीं ।राजा देखलस कि ऊ देबपुरुख अपना बावां हाथे में सोना क चमख वाला एठे पिटारा लिहले बा आ दहिना हाथे के दोसरकी अँगुरी से ओके आपना ओरि आबे क सनेस देता।एही बिच्चा राजा क आँखि उघरि गइल अउर फिन ऊ मय–राति जगलै रहि गइल ।भिनसहरै राजजोतसी लोग सपनफल घोखि के बतवलैं कि पच्छूं देस भारतबरस क महत देब गउतम सिद्धार्थ किछु अनबूझ गिआन देबे खातिन रउआं के गोहरावत हउवैं ।राजा अपना बुद्धि ाजनन के गउतम क उपदेस आ फोटू लेआबे के भारत पठवलस।

बुधिजन स भारत आके एकरस भारत में डगरत बउध बिचारन आ दरसनन के रटलैं अउर राजा के मनमाफिक धरमपरचार खातिन इहवां से महाभिख्खू कस्यप मातंग के ले के चीन गइलैं।उन्हने स चीन में बउध धरम क हल्ला कइले रहलैं।चीन तभ्भे भारत क चेला बनल आ तभ्भे उहां बहुतै भिख्खू–जुटान आ बिहारो सिरिजलैं।उहवैं एठे राज पिंगयांग परदेस क रहबासी फाहिआन रहल जे ए सपना के चार सौ बरिस बितले एकदम से उहै सपना देखलस ।ओकरो के देब गउतम सिद्धार्थ ओहीतरे दोसरकी अँगुरी से संकेतिआ के बोलबले रहलैं। फाहिआन पोटरिअन के चमख से मगन रहल।बड़ा सांसत से अपना देस से चलि के ऊ सुगलिंग परबत लांघि के बगइचा परदेस चहुंपल जेकरा दक्खिन में भारतबरस ह । अखीर में पोटरिअन के हेरही में ऊ महापथी तच्छसिरा चहुंपल जहवां तथागत आपन मूड़ी काटि के भुखाइल शेर के दे दिहले रहलैं। कहल जाला एही खातिन ओ ठवर क नावं तच्छसिरा पड़ल ।बाकिर बाति एतनिए ना रहलि ।तच्छसिरा क महाभिख्खू दिपांकर बिभास ओके किबदनती क चिन्हारथ समुझवले रहलैं कि उहां गउतम सिद्धार्थ क सकल बड़गिआन एगो पोटरी (तच्छ)में बन ह। खखाइल सिंहे हीनमन धरम ह ।महाबुध हर जुग में अपना महागिआन क दान कइके हीनमन धरम के उबारेलं जेसे मनइन क कलिआन होखेला ।एही से उनकरा के तथागत कहल जाला ।फाहिआन ए चिन्हाट के बूझि भउंचकल आ ऊ ई चेति के जोसिआ गइल कि कहीं ऊ पोटरी स भेंटा जइहैं त केतना बड़वार गिआन भंडार ऊ अपना देस में ले जा पाई। बाकिर ई त ओकरा अनरजिउ क बाति रहल।ऊ अपना सपना आ ओकरा भित्तर के पोटरिअन क भेदि केहू से ना जाहिर करै ।

सामना त ऊ लोगन इहै परगट करत रहल कि ऊ किछु बिसेख बउधगरनथन के हेरे खातिन एतना लाम देस से आइल ह ।बकिर बहुत हेरलहू के बादो ऊ पोटरी स ना भेटइलीं ।हां, ई जरूर भइल कि मथुरा– साकेत–श्रावस्ती जेतवन– कपिलबस्तु होत ऊ गउतम बुद्ध के जनमथान लुम्बिनी कानन गइल ।

एकदिना सकराहे उहां पोखरि में नहात बखत एठे पुरनिआ–ठाठर बउध भिख्खू फाहिआन के एगो मोटरी में बान्हल समान दे के कहलें कि एके लेके अपना देस जा।मोटरी खोलले प ओके भोजपत्र–पन्नन प लिखल एठे असललिखर खनी मिललि कटलि–फटलि पुरान–धुरान ।ओकरा पहिल पेज प एगो कटल मूड़ क फोटू बनल रहल जेके निहार के ऊ हदसि गइल। जे ऊ तथागत के जनमथली प मिलल रहल ए खातिन ऊ सहेजि के धइ लिहलस अउर पा. टलिपुत्र के पच्छूं दस जोजन लामा अनालय नावं के ठवर प उठउआ रूपि में बनलि सरायं क परमुख साधना कराबेवाले पुरनिआ भिख्खू के ई कहि के दे दिहलस कि तीन सौ बरिस बितले बनारस से गरजपति पुर होखि के जाएवाला एगो चीनी भिख्खू एहर से जभ बेकनछेद जाईं त 'कुण्डल वन' बीज आखर बतबले प ओके दे दिहल जाई। आ आगा चलि के इहै होखबो कइल ।

हिन्दी शिशु : सत्तों–अठ्ठों सदी क निच–लाम बिच्चा रहल ,बतकहिओ तभ्भै क ह ।चीन देस में तंग बंस क सासन रहल आ उहवां पछिलका केतनिए दसकन ले ई चरचा जोर मरले रहल कि ऊ अनबूझअसललिखरखनी स कहवां बाड़ीं स?पाछा कई हजार सालि से ओ असललिखरखनिन के हेरे आने गरहन क रहबसिओ पिरथी प आबत–जात रहलैं ।मिसिर क पिरामिड हे के, चाहे सीबा क खड़हर कभ्भो न कभ्भो सभकर लागि ए हेराइल असललिखरखनिन से रहबे कइल ।नजका रेखिन क जालि होखे, लंका क तिरकुट पहाडं होखे, कइलास परबत होखे, आकि तिभ्भत क सम्भल गिआनगंज, असललिखरखनिन क खोजि–बीन सगरों रहल ।फाहिआन, हेनसांग, इतसिंग, अल बिरूनी, इबनबबूता ओन्हनिए के हेरे निखसल रहलैं आ तनी पाछा बेनिस क घुमक्खड़ मारकोपोलो रेसम पथ प ओन्हनिए के हेरे चलल रहल ।कोलम्बस आ बासकोडिगमओ के ओही कुल्हिन क सपना आबत रहल बाकिर ए सपनन के बहिरउत ई पोटरी स ना जानी केतना अकार में ढलि बीतलेखि के पन्नन में बिसभोरि गइलीं ।सतरहबीं सदी में जभ रतन बेवपारी टरवनिअर भारत आइल रहल, पुदुचेरी के बरह्म मन्निर में ऊ ए असललिखरखनिन क चरचा सुनले रहल ।

भारत चहुंपले प ई असललिखरखनी स हेनस. ांग के कई सनूखिन में बन चिथिर–बिथिर हाल में मिलल रहलीं जिन्हनिन के लेके ऊ चीन पलटि गइल रहल ।बाकिर, खाली एतनिए ना भइल ।हेनसांग ओ असललिखरखनिन क कई ठो नकल बनववले रहल जवनी में ले किछु त ओकरा घुमक्खड़िए के बेर हेरा–फेरा गइलीं स आ किछु के नलन्दा में ऊ अपना बड़का गुरू शीलभदर के ठेघा आइल ।

इतिहास किसोर : कहल जाला ई असललिखरखनी स बयार के सनूखिन में बन हईं जिन्हनिन के कउनो मानु ख–लेखि अंगिल मनुजीउता में पाई ।उन्हनी क सर–सूरति केहू के ना पता ।कभ कइसे ऊ स कउना–कउना बोली आ लिपिअन में अउर आ खर–संकेतन में ढला के लखन्त मनुजीउता में जम्मै पिरथी के केवना–केवना बेपथ ठवरिन में चहुपलीं कहल कठनर ह ।ओन्हनी क आजु–अभ क सकल–सूरति का अउर कइसन ह––केहू ना जानत ।बयरिओ में इहे बतिआ उधिआत रहल कि इहै सोलहों असललिखरखनी स ओ बिधा क अधार हईं जेके आगा जा के भारत में षोडसी बिधा कहल गइल ।सांच संवाचल जाव त पनरह असललिखरखनी स कउनो पेसल निच–उंच आगा–पीछा गनती में ना ठाढ़ हईं, बाकिर, हेरेले प एगो सहजोड़ क झलको लउक जाला ।असल में सोरहवीं असललिखरखनी में इन्हनी क कलिका हईं स जिन्हनिन के केहू ल खबे ना कइल ।कहल जाला ए असललिखर खनिन के उघरले प ई उघरत जालीं अउर उघार कर देलीं मानुख क अनचित आगतिओ।

हिन्दी शिशु :अगते,ढेर अगते जभ महादीप दहा के चाहे छिनकटा के एकदोसरा से एतना लामा ना निकस गइल रहलैं तभ दोसरा गरहन से आबे वालन परानी पिरथी के एहर से ओहर ले करत रहलैं आवाजाही।इहो सुनल गइल ह कि सनी क एठे बड़वार चनरमा तातिनिअम से निकस के सतरिखी भागि लिहले रहलैं एही असललिखर खनिन के लेके ।उहवां एगो अत बिकस सभिता तारक जुधिआइल रहलि। मुआ दिहल गइलैं सगर जिउ–जनतू बचबै ना कइल कुच्छू ।तभ एठे भागवत कवचि में षोडसी बिधा के कउनो जतन सहेज के सतरिखी हेरत रहलैं कउनो ठेकान जहवां ऊ सभ इन्हनिन के लुकवा पावैं ।कहल जाला बेद मनतरो एही पोटरिअन में लीन होके छन्द बन गइल रहलैं अउर अगते जा के पिरथी प दोहरा के छन्दै में परगट भइलैं ।

अथर्वा, बरह्म क मानस–पूतै रहल सनीशोक क करबइया कबी ।ए सउरमनडल से बहिरउत मनपा खी चहुंप गइलीं स तातिनिअम चनरलोक जहवां दोसरा गरहनन क बनसपती स जिनगी क मध बनि के उभरल रहलीं ।तातिनिअम के बसे लाइक गरह पिरथू बनवलैं ए ही जेकरा नावं प एके पिरथिओ कहल जाला।इहवां जवना नेतिअन से ए लोकि क डुगुरावन आ करबरन होत रहे ओकर निरमान अउर पोथिआव अपनिए ततभवान दि खनामूरति सदासिउ रुदरै कइले रहलैं एही खातिन एके तातिनिअम लोकिओ कहल जाला । अधिआतम गिआन के महाबिकसले इहवां गद–देस क बिकास बरोब्बर होखे लागल आ पद–देस अनपूछ रहि गइल ।एकरा चलते गदमातल देसन में बहुतै नासक जुध भइलैं जवना कारन पिरथी प जनमल सगर मानउता क नास हो गइल ।अखीर में एके पूरै खलास करे खातिन खुदै महाकाल गुसिआ के सरापा दिहलस जवना से बन–आगि में भुजा के ई लोकि भसम हो गइल।जवन बाकी बचि गइल ऊ सदासिउ क आंगछि रहल जवना के माथा प लगा के उहां जिनगी गथे वाली सगरी चेतलि अतमा स पाछा अमरत के एककोखी

बसेरा में चलि गइलीं आ कउनो आन्ह लोकि प जिनगी–बिकस क जोहिआरी करे लगलीं ।
ओही घड़ी परलोकी बिधा (जोग बिधा) में निपुन महाबुध स सिरिसटी रचिआव के आखर बीअन प गहि के सोच–बिचार कइलैं आ ओके पिटारिन में बन कइ लिहल. ।अथर्वा ओन्हनीए में से एठे रहल जवन सभसे अगाड़ी पोटरिअन के बनवलस।ओके खास तउर से
ओ जोन्हिअन के हेरे क काम दीहल गइल रहल जहवां बनसपतिअन आ जनतुअन के रूपि में तरइअन प जिनगी अतिमानस में ढरि जाए के जोगाड़ में लागल रहेला । उन्हनिए क बाद क बिकास अन गरहनन प होत रहेला । एहीतरे पिरथी क उपतउपतरई चनरमा प बिकसे वालन जिउ–जनतुअन क मनबोधै पिरथी प मानुखी मनबोध लेखां बिकसत चलेले ।सदासिउ रुदर
ए चशरमा के धिरवलैं कि ऊ पिरथी प मनबोध के अबतारे में सहजोग करै आ कबिता–देस क फिनसे सिरिजना करवाबे ।तभ्भे से ऊ पिरथीलोकी बसिन्दगन क मनपाखी के उदबोधत रहेला ।

सनीलोकि के जंगरइतन क परधान अधच्छ ततभवान दखिनामूरति सदासिउ रुदर ओके जभ पिरथी प कबिता–देस बनावे पठवले रहलैं त अन सुकबी भला पछुआइल कइसे रहतैं !ऊ सभ श्वेतकेतु, बिरिधिसरवा, सनतकुमार, अबराहम, अलमुसतफा, अगस्त, मारकण्डे, अपाला दीर्घतमा अउर एठे भारती अतमो संगहीं–संगहीं चहुंपलैं ।बजरबिरोचन, मातरिसुआ,,लोपामुद्रा आ मधुछनदो सभ क सभ मनता आ बोधा कबितई–देस क कलपक–अतकलपक रहलैं, ऊ तातिनिअम चनरलोक प संगे–संगे बसत गइल रहलैं । उहवां तारक जुधिन के चलता बड़ा बिनास भइल ।अतझिनकन जुधन क एगो बिचितरै देब–दइत जुध लगलै रहि गइल जवना में सगर मारि गइलैं ।तभ्भे मनथोर अथर्वा भागवत कबच पिटारा बनवलस आ षोडशी तिपुरसुन्नरी कला के मन्तर लपेटि के बन कइ दिहलसि ।ऊ समभाखन रहल ओ जून क जवना के ध्वनीगराम में अथर्वा दरज कइ लिहलसि।फिन ओ उचार के एठे अउरी सुरुज गरह के हेरे बदे अथर्वा सबदगुन धरान करे वाला आयन मण्डल में लोका दिहलस अउर कहाला कि ओही से सम्भू मनुजीउता में पिरथी प भाखा बनलि ।ऊ सकलजेठ पिटारी पिरथी के गरह पथि में जुटि गइल ।

मूल रचना– अथर्वा
मूल रचनाकार– आनंद कुमार सिंह
भोजपुरी भावानुवाद– डॉ मुनि देवेंद्र सिंह

❑❑

❍ **गाजीपुर, उ0 प्र0**

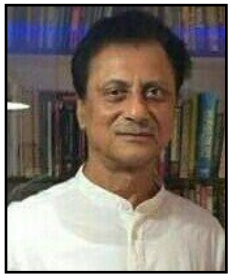

बसंत–फागुन

डॉ अशोक द्विवेदी

धुन से सुनगुन मिलल बा भँवरन के
रंग सातों खिलल तितलियन के
लौट आइल चहक, चिरइयन के!

फिर बगइचन के मन, मोजरियाइल
अउर फसलन के देह गदराइल
बन हँसल नदिया के कछार हँसल
दिन तनी, अउर तनी उजराइल
कुनमुनाइल मिजाज मौसम के
दिन फिरल खेत केम खरिहानन के!

मन के गुदरा दे, ऊ नजर लउकल
या नया साल के असर लउकल
जइसे उभरल पियास अँखियन में
वइसे मुस्कान ऊ रसगर लउकल
ओने आइलबसन्त बन ठन के
एने फागुन खनन खनन खनके!

उनसे का बइठि के बतियाइबि हम
पहिले रूसब आ फिर मनाइबि हम
रात के पहिला पहर अइहे जब,
कुछ ना बोलब, महटियाइबि हम
आजु नन्हको चएन से सूति गइल
नीन आइल उड़त निनर बन के!

रंग सातों खिलल तितलियन के
लौट आइल चहक, चिरइयन के!

❑❑

❍ **बलिया,उ०प्र०**

चिरई जनम

कनक किशोर

हमरा के चिरई जनम से मत उबार चक्रधर
उबारे के बा तऽ उबार लऽ
एह पिंजरा से।

अउर कुछ भले नइखे
दूगो पांख आ अकास त बा
नीला झील के पुकार
अउर कंठ में गीत त बा।

चाउर के दाना के दाने समझनी
महाबाहू !
हमार चिरई जनम
अबकी बेर माफ करीं,
अउर हमरा के अकास वरदान में दीं।

चिरई जनम के नशा
उतरत नइखे पिंजरा में
जब फांक से दिखाई पड़ता चाँदनी रात,
भोरे के अकास,
तब गले में उलझ जाता फरमाइशी गीत,
चोंच से फिसल जाता सोना के थरिया के भात,
समझ आ जाता चिरई जनम के माने।

जानत बानी
पिंजरा के हम खुदे अपनवले बानी,
इहो जानत बानी,
पिंजरा के खिलाफ ई हमार बिना शर्त लड़ाई ह।

अगर तूड़ ना पइनीं लोहा के पट्टियन के
तऽ हे राधा–माधव !
हमरा के फेर से चिरई जनमे दिह
अउर बस अतने कृपा करब,
जबले पिंजरा के तूड़ ना दीं
बेर– बेर असहीं जनम लेत रहीं,
अउर बस एक बेर चिरई बनके
पूरा जिनिगी भोगीं अकास के।

❑❑

मूल– चिरश्री इंद्रसिंह
अनुवाद – कनक किशोर

❍ **राँची (झारखंड)**

गीत

सूर्य प्रकाश उपाध्याय

भइनी सेआन जहीना से संवरियां
मोर हिया बीचे उठे हाय गजबे लहरिया ।

गजबे उफान चाल लगावेला अगन
हाय राम गदरल सोरह के उमिरिया ।

नैना बेकल खाली उनुके फिकिर में
लागे देखी आईं गली–गूचा दिन–दुपरिया ।

तड़पत बानी हम निरहू के बिना
मीन जइसे तड़पेली सोन के अररिया ।

चहऽ – चहऽ सावन लागे झुझुआवन
निरखत बानी हम पिया के डगरिया ।

गहना – गुरिया सिंगार कवना काम के
जिनिगिया भइल अन्हरिया – अंजोरिआ ।

लउट आवऽ पिया मोर अटकल परान
फेफरी परल देखऽ लगावत गोहरिया ।

कमाए गइले माटी निअन धन परदेशवा
उजड़ गइले सोना निअन दिल के नगरिया ।

भरके करबऽ का मन के गगरिया
सब सुख घास जब रहिहें ना मेहरिया ।

❑❑

❍ **रोहतास–बिहार**

खूब पढ़ीं आ तनी सा लिखीं
ए तरे बढ़िया भोजपुरी सीखीं।

टीस

मीना धर द्विवेदी

"महतारी की कोखि से का जाने का भागि ले के जनमल रहनीं। नइहर में नाहीं ढेर त कुच्छु कम्मों त ना रहे। हमार बाबूजी कवनों चीज के कमी ना होखे देत रहलें। बड़ी देखि सुनि के भरल–पुरल घर में बिअहले रहलें कि हमार बबुनिया सुख से रही, बाकिर भागि के ले खा कि छौ भाइन में बर–बँटवारा के बाद जवन खेती–पाती मिलल ओसे गुजर–बसर भर हो जाउ, ऊहे ढेर!" बुधिया खेते की मेंड़े पर बइठि के घास छोलत मनेमन अपनी भागि के कोसत रहे।

"अरी बुधिया!"

सुनि के हाथ रुकि गइल बुधिया के। घूमि के देखलस त सरकारी स्कूल के मैडम जी रहली। बुधिया के हाथ खुरपी छोड़ि के अभिवादन में जुड़ि गइल। आजु उनके देखि के ओकर आँखि चकचोंहिया गइल रहे।

रोजे छुट्टी के बाद एही ओर से मैडम जी अपनी गाँवे जाली आ कब्बो कब्बो दूनू लोग से भेंट हो जाला। तनी बोल–बतिया के ऊ आगे बढ़ि जाली आ उनसे आपन कहि सुनि के बुधियो के मन हल्लुक हो जाला। आजुओ ऊहे भइल। स्कूल से लौटत बेरिया ऊ बिधिया से भेंटा गइली। बाकिर बुधिया देखत रहे कि मैडम जी रोज की तरे आजु कुम्हिलायिल ना रहली। आजु त उनकर मुखमण्डल अँढ़हुल जइसन फुलायिल रहे। साड़ियो टनटन रहे रोज की तरे लुजुर–पुजुर ना रहे। मूड़ी के बार एकदम करिया। लिलारे पर साड़िये के रंग के टिकुली आ ओठवा तनी ढेर लाल रहे। कान्हे पर बेग त देखेले ऊ बाकिर आजु उनकी हाथे में किताब–काँपी ना रहे बलुक झोंपा भर रंग–बेरंग के फूल रहे। ईहेकुल देखि के ओकर अँखि चकचोंहिआयिल रहे।

"ई एतना फूल! आजु कुच्छु हउए का?" बुधिया उनके ऊपर से नीचे ले देखि के पूछलस।

"हँ, आजु विद्यालय में अध्यापिका लोग के सम्मान भइल ह।" मैडम जी मुस्किया के कहली।

"का ह आजु?" बुधिया के अचरज कम ना भइल।

"आजु नाहीं, बिहने ह महिला दिवस। बाकिर रविवार छुट्टी के दिन ह एसे आजुए कार्यक्रम भइल ह।"

"अच्छा...!" कहि के ऊ एक टक्क उनहीं की ओर ताकत रहे। मैडम जी के बाति ओकरी समझ के बहरा रहे।

"अब रस्ता छोड़ु त हम जायीं।" ओके एंगा अपनी ओर ताकत देखि के मैडम जी मुस्किया के कहली।

"ई महिला दिवस का होला जी!" आखिर मन के अबूझपन ओकरी ओठे पर आइए गइल।

"महिला दिवस माने मेहरारू लोग के दिन।"

"हे भगवान् जी ! ई मरद मेहरारू के दिन कबसे बँटा गइल हे! ई त हम पहिली बेर सुनतानी।" अचरज से बुधिया के आँखि बड़हन हो गइल रहे।

"क बेर त कहनी हम कि दू अक्षर पढ़ लिहल कर हमसे पर गाय–गोरू, घास–गोबर में अझुराइल रहेले। कइसे जनबे कि महिला दिवस का होला?" मैडम जी तनी खिसिया के कहली।

"आ जाए दीं। का करे के बा पढ़ि के !" कहि के बुधिया अँचरा से मुँह दबा के खिस्स दे हँसि दिहलस।

"भगेलू ब रोज छुट्टी के बाद आ के पढ़ि जाले। ओकरा के पढ़ि के का करेके बा! ऊहो त ईहे सब करेले न! बाकिर अब रुपया पैसा गिनेले। अपनी नाती के किताब अक्षर मिला मिला पढ़ेले। आजु स्कूल में ओकरो सम्मान भइल ह। बाकिर ई सब तोसे कहला से कवनो फायदा नइखे।" अबकी बेर मैडम जी के तियुरी तनी चढ़ि गइल रहे।

एक त महिला दिवस, दुसरे भगेलू ब के पढ़ल सुनि के बुधिया सनाका खा गइल रहे। अकबकाइल मैडमजी के ताकत रहे। ओकरा के एंगा अपनी ओर देखत देखि के मैडम जी के तियुरी ढील भइल। ऊ बूझि गइली कि उनकर बाति बुधिया के पल्ले अबले ना पड़ल रहे।

"देखु, आजू ढेर के मेहरारू लोग अपनी अधिकार खातिर आवाज उठवले रहे। एहिसे आजु महिला दिवस मनावल जाला आ उनके काम खातिर उनके सम्मान कइल जाला। एही से आजु के दिन मेहरारू लोग खातिर बिशेष ह, बूझि कुछ ?" मैडम जी आपन मास्टरी बुधिया की भाषा में ओकरी पर उड़ेल दिहले रहली।

"त का आजु सबे मेहरुन के समान होला ?" बुधिया नासमझी के बोझा तरे दबाइल पूछि लिहलस।

"हँ बुधिया! सब स्त्री लोग के सम्मान के दिन ह आजु।"

"अच्छा...! हमरो जइसन के?" आँखि पसारि के पूछलस बुधिया।

"हँ, काहें ना! तू केहू से कम है का?

खेत खरिहान, घर–दुआर केतना काम करेले ! आ तोर हाथ के बीनल डलिया, मउनी त केतना सुन्दर होला। मूज रंग के केतना सुन्दर–सुन्दर बेल बूटा, फूल–पत्ती बनावेले ओपर! जानबो करेले कि ई सब के शहर में केतना मोल बा!" मैडम जी अपनी बोली में मिठास घोरले कहली।

जिनगी में पहिली बेर आपन एतना बड़ाई सुनि के बुधिया के साँवर सूरति पर सेनुर जइसन लालिमा पसरि गइल रहे। ओकरा बिसवास ना होत रहे कि ऊ एतना गुनगर हो सकेले। बाकिर मैडम जी कहताड़ी त साँचें होई। अबहिन मन में खुशी बुलबुलाते रहे कि मैडम जी अपनी हाथे में लिहल पुष्पगुच्छ ओकरी ओर बढ़ा दिहली।

"ई का जी! ई त राउर समान ह न !" आपन दूनो हाथ अपनी गाले लगा के दू डेग पाछे हटत बुधिया कहलस।

"ले थाम, ई हमरी ओर से तोर समान नाहीं, सम्मान ह। बुझले ?" हँसि के मैडम जी गुलदस्ता बुधिया की हाथे पकड़ा दिहली।

खुरपी,हँसुआ,कुदारी जइसन लोहा के खेतिहर औजार थामे वाला हाथ में जइसहीं फूल आइल, बुधिया के बुझाइल कि ओकरी चारू ओर रंग–रंग के फूल फुलाइल बा, आ ऊ तितली जइसन मंडरात बिया। हवा में सुगंध बा आ ओकर देहिं महक उठल बा।

"अब तें बताउ, अपनी मरद से काहें ना कहेले कि कुच्छु काम धाम ऊहो क लिहल करें। हम जब दे खेनी तब तेहीं घास काटत देखाले।"

बुधिया मैडम जी के बाति सुनि के एके झटके में खेते की मेड़ पर आ गइल।

"हुंह! ऊ पी के ढिमिलाइल होइहें कहीं। दूगो बैल बाड़ेंसन दुआरे पर, जे ऊहो उनरी भरोसे छोड़ दीं हम त दू जून के रोटियो ना मिली आ भूख पियासि से बैलो मरि जइहेंसन।" मरद के नाव सुनते ओकरी देहिं से महक कहीं ऊड़ि गइल रहे आ सराब बस्साए लागल रहे।

"देखु बुधिया ! पीठ पाछे नाहीं, मरदे के मुँह पर बोलल सीखु। एने ओने घूमल करेलें खेलावन। कहु कि घर के काम में हाथ बटावें।"

"जे घर के कार करिहें त उनकर इज्जति ना घटि जाई ! मरद कहीं घर के कार करेलें !" कहि के बुधिया गुलदस्ता ओही मेड़ पर ध के खुरपी उठा लि. हलस आ खच्च खच्च खच्च अपनी मने के सब कोप ओही दूभी पर उतारे लागल। मैडम जी जानि गइली की मरदे की नाव से बुधिया के बिखि चढ़ गइल रहे। ऊ मेड़ से तनी खेते में उतरि के ओकरी पाछे से निकल गइली। समनवे उनके गाँव देखात रहे। आजु बुधिया से बतिअवला में उनके देरी हो गइल रहे।

"काल्हि के दिन तोर ह, जनले। तोके जवन नीक लागे ऊ करिहे।" कहि के मैडम जी आगे बढ़ि गइली।

उनकी गइला के बाद बुधिया सोचे लागलि, "त का हम बिहाने अपनी मन के सब क सकेनी!" ओकरा के बुझाइल कि महिला दिवस दसहरा, दीया–दियारी आ फगुआ जयिसने कवनो तिउहार ह बाकिर अबले त हम ना सुनले रहनी इ तिउहार के बारे में!

"अरे! अब त अब सुनि लिहले न !" जइसे ओकरी भीतर से केहू कहल। बुधिया के मन के रिसी ध ीरे–धीरे उतरे लागल।

"भागल भूत के लंगोटिए सही। कम से कम जिनगी के एक दिन त अपनी मन मोताबिक जीए खातिर मिलल! एतने ढेर बा।" इहे सोचत ओकर खुरपी तेज हो गइल रहे।

आजु के साँझि कुच्छु अलगे रहे बुधिया के। ओकरा बुझात रहे कि केतना जल्दी आजु के दिन बीते आ बिहान होखे। मन खुश रहे त खेलावन के कोसल–गरिआवल छोड़ि के ऊ आपन मन पसंद गीति गावत छाँटी काटत रहे,

पान खाए सइयाँ हमारो
साँवर सूरतियाँ ओठ लाल लाल
आय–हाय मलमल के कूरता
मलमल की कुरता प छींट लाल लाल...!

गावत गावत ओकरी मन में सावन हरिआ आइल। जा के नादे में हरिअरी मिला दिहलस। भीतर आ के हाथ गोड़ धो के चूल्ही से राखी निकालि के लीपि पोंति के रसोई में जुटि गइल।

बगयिचा से जवन सूखल पतई बीनि के ले आइल रहे ओही से आगी जरा के रसोई बनवलस आ बहरा जा के खेलावन के खाए खातिर कहि अइलस। जल्दी से अंगना में पीढ़ा ध के एक लोटा पानी ध दिहलस। आ रसोई परोसे लागलि। खेलावन बहरा से आ के पीढ़ा पर बइठलें तबले बुधिया परोसल थरिया खेलावन की आगे ध दिहलस।

"इ रोज रोज का घास पात परोस देले रे! हमार पेट त देखिये के भरि गइल। तेहिं खो इ कुल। हमरी गंटई से ना सरकी।" थरिया में साग रोटी देि ख के खेलावन थरिया सरका के ऊठि गइलन।

आ छने भर में बुधिया के खुशी धुआँ की तरे उड़ि गइल। अब त रिसि के मारे ओकरी देहीं आगि लागि गइल।

"अरे त काहें ना जा के तरकारी भाजी ले आवे ला! 'घर में नाहीं आटा आ अम्मा भुजावे लाटा' एतना खाए–पिए के सउक बा, त जा के कुच्छु काम–धाम करे के चाहीं नू ! जब दू पइसा हमरी हाथे धरता तब देखवता ई रोआब ! दिना भर एहर ओहर घूमि के हमके इ गरमी मति देखावा। खाए पीए आ सुत्ते खातिर हम मेहरारू, ओकरी बाद जिनावरो ले बढ़ि के गति हो जाला।" बुधिया रिसी में आपन खून सु खावत रहे बाकिर आज ओकर दिन निक रहे की एतना सुनले के बादो खेलावन चुपचाप बहरा निकल गइल रहलन।

खेलावन त पहिलहीं अपनी सँघतिया बेचन के साथे पी–खा के आइल रहलन। ऊ त सोचलन कि तनीमनी मुँह जुठिया लेब त बुधिया कुच्छु जानि नाहीं पायी बाकिर कहँवा ऊ मुर्गा की टंगरी आ कहँवा ई साग रोटी! ऊ जा के अपनी खटिया पर पसर के सुति गइलन। बिखिआयिल बुधिया सब खैका बैलन की आगे डारि के लोटाभर पानी गँटई के नीचे उतार लिहलस, आ जा के सुत्ति रहल।

पेड़ पालो पर बयिठल चिरई–चुरगुन आपन पाँखि पसारि–पसारि अँगरियात रहे। घर के पाछे पोखरा में जलमुर्गी अपने राग आलापत रहलीसन। गाँव की गली से ले के खेतन की मेड़ ले पदचाप गूँज उठल रहे। राति अपनी अंतिम पहर में वाचाल भइल रहे। बुधियो उठि के पहिले बैलन लगे धुँआरा कइलस आ झाडू बहारू क के नाँद में छाँटी लगा दिहलस। जवन थोर ढेर खेत बचल रहे ओपर एही कुल की भरोसे कुच्छु अनाज हो जात रहे। बैलन के खोलि के नादे पर बान्हि दिहलस बुधिया आ गोबर बटोरि के गोहरउरी में फेंकि के बारी की ओर निकलि गइल।

उजियार होत रहे बाकिर अबहिन ले खेलावन के ओंघी ना खुलल रहे। "ऊठीं न हे!" लवटि के खेलावन के जगावत बुधिया भीतर चलि गइल। राति के सब बाति भुला के आगे बढ़ल ओकर रोज के कार रहे। नहा धो के घर के देबी देवता पुजले के बाद बुधिया हँड़िया पतुकी टोवे लागल। एगो पतुकी में भेली मिल गइल आ दूसरकी में महकुआ चाउर। चउरा के फटकि बीनि के फूले खातिर भें दिहलस बुधिया आ भेली लोढ़ा से कूटि के लोटा की पानी में डाल दिहलस। तबले खेलावानो नहा धो के गमछा पहिनले अँगना में आ गइलन आ रेंगनी से बंडी उतार के पहिने लगलन।

"जा के बजारे से कवनो नीमन तियना तरकारी ले आयीं। आ तनी जल्दी आ जायिब।"

बुधिया अपनी अँचरा से खूँट खोल के एगो गुड़मुड़ियाइल पचास रुपया के नोट निकाल के खेलावन की ओर बढ़ा के कहलस।

"आजु केहू आवता का रे ! कि कवनों तीज तियुहार ह!" रुपया लेत पुछ्लन ऊ।

"नाहीं त ! केहू नइखे आवत।"

सुनि के खेलावन सोचत रहलन कि "काल्हि हम खइले बिना सुत्ति गइनी एहिसे आजु आपन गाँठि खोलले बिया।" ऊ मोछिए में मुस्किअयिलन।

"आजु हम घासि खातिर नाहीं जाएब। रउरे जाए के बा।" बुधिया मुस्किया के अँचरा खोंसत कहलस।

"हम काहें जाएब घासि खातिर? तें का करबे ?" भृकुटी तना गइल खेलावन के।

"आरे आजु मेहरारू लोग के दिन ह नू ! ऊ का कहाला ! महिला दिवस !" उछाह में ओकरी मुँह से निकलि गइल।

ओकर जीउ हक्क दे हो गइल। फेरु ऊ मन में सोचे लागल कि "अब का करीं! निकलि गइल त निकलि गइल। ए आदमी से कवनो आस त बा ना। कम से कम एही बहाने एक दिन के छुट्टी त मिल जाई। केतना दिन से चोरऊँध एगो पचास के नोट ध इले रहनी। ऊहो आजु निकल गइल। पेट ककोरता बाकिर का केरे के बा! अबकी बेर फसल ठीक भइल बा। अँखि बचा के अनाज बेच लेब त हो जाई। अनेरे ना नु एतना जाँगर जोतले रहेनी! ई कुल ना करीं त आँखि देखे भर के पइसा रुपया ना रहे देला ई आदमी। हाथ पर तनी कुच्छु रहेला त बूत बनल रहेला। नाहीं त रोजे कब्बो चना मटर, त कब्बो बथुआ मरसा त कब्बो चौराई पोइ! जवन मिल जाला खेते मेड़े, लेआ के धो बना लेनी बाकिर आपन गाँठि ना खोलनी। काहें से कि गाहे– बगाहे कवनो आकाज हो जाला त ए आदमी लगे कुच्छु ना रहेला। नेवता–हँकारी पानी उतर जा, जे चार पइसा ना रहे हमारी लगे त!" सोचते सोचत जा के ऊ दियरखा से ककही उठा के आपन बार झारे लागल। चोटी पूरि के सीसा के गर्दा अँचरा से पोंछि के मुँह देखलस। सीसा देखले ओकरा केतना दिन भ गइल रहे। टिकुली साटि के फेरू से अपना के निहरलस, आ सीसा ध के चूल्ही लगे आ के बइठि गइल। खेलावन कनखी से सब देखत रहलन।

"पहिले पानी दे हमके।" पैजामा चढ़ावत कहलें बाकिर मन में सोचत रहलें कि "ससुर ई मेहरारुन के दिन कबसे होखे लागल!"

बुधिया जल्दी से उठि के लोटाभर पानी खेलावन के थमा दिहलस। ऊ पानी पियलन आ लोटा बुधिया के

थमा के रेंगनी पर से झोरा खींचि के निकल गइलन।

खेलावन के जाते ऊ गोंयिठा आ पतई लगा के चुल्हि बरलस। तसली में मीठा के रस छानि के चढ़ा दिहलस। तनिये देर में रस खदके लागल तबले चउरो पसा के ओही रसे में डालि दिहलस। चूल्हि में पतई चट्ट चट्ट जरत रहे। पतई के जरत देखि के बुधिया के बुझाइल कि ऊहो त एही तरे जिनगी भर जरते रहि गइल। मरदे के पियला से ऊ कहीं के ना रहि गइल रहे। ओकरा मन परे लागल कि कइसे पाँच बरिस के बेटा मंगरुआ खोंखत–खोंखत परलोक सिधार गइल बाकिर पियला की आगे ई मरद लइका के सुधि ना लिहलन। जेतना बेर रुपया ले के गइलन, पी अइलन आ कहि दिहलन कि बैद जी कहलें हँ, "आदी, तुलसी, पीपर आ मरीचि के काढ़ा बना के पिआ द। खोंखी ठीक हो जाई।" ऊ काढ़ा पिआवते रहि गइल आ एक दिन अपनी खोंखी के साथे मंगरुओ चुपा गइल। सोचते सोचत आँखी से लोर चू गइल। बेटा खातिर ओकर करेजा फाटत रहे।

"जिनावर कहीं के !" एकदम से ओकरी मूँहे से निकल गइल।

तब्बे कुच्छू महकल। चिहुकि गइल बुधिया। दे खलस कि चूल्हि पर रसिआव फफा–फफा के जरि गइल रहे आ तसली से धुआँ उठत रहे। झट दे तसली उतारि के नीचे ध दिहलस बाकिर छने भर में ओकर अँगुरी लेसा गइल रहे। अँगुरी के साथे ओकर करेजो लेसाइल रहे। आँखिन से झर–झर लोर बहे लागल। ऊ हाथ पानी में बोरि के सुसुके लागल। चूल्हि में गोइठा की राखी के भीतर अब्बो आगी दहकत रहे। कुच्छु पतई जरि के भहरा गइल रहे त कुच्छु जरला के बादो आपन आकार ना तजले रहे।

दिन चढ़त जात रहे। आलू कूँचि के बुधिया अपनी अँगुरी पर छापि लिहले रहे। ओसे तनी आराम त मिलल रहे बाकिर आत्मा पर ऊ का छापे! कवन मलहम लगावे कि ऊहो जुड़ा जाउ! खेलावन के देखत देखत हारि गइल त ऊठि के काल्हि के काटल छाँटी बैलन के आगे डालि दिहलस आ सोचे लागल कि "अब साँझि के मेंलवनी का दिआई एकनी के? ऊ आदमी त अबले ना आइल!"

खरामे खरामे दुपहरिया घुसुकत जात रहे। बुधिया के कुच्छू बुझाते ना रहे कि का करे ऊ? अँगुरी में आगि फेकले रहे। केवाड़ी बंद क के सिकड़ि चढ़ा दिहलस आ खाँची, बोरी, खुरपी ले के बगयिचा की ओर चल दिहलस। रीसि में दूख बेयाधि भुला जाला आ का जाने कहँवा से हनुमंत के बल आ जाला। पहिले पतई बिनलस आ बोरी में भरि के बोरी पेड़े से लगा के ठाड़ क दिहलस। ओकरी बाद खाँची खुरपी ले के बगयिचा के ओ पार खेते की ओर जा के घासि गढ़े लागल। अब ना त ओकर अँगुरी दुखात रहे ना मन में महिला दिवस के कवनो उछाह बचल रहे।

साँझि होत रहे। ओकर खाँची भरि गइल रहे। खुरपी घ ाँसी से तोपि के खाँची लिहले ऊ बगयिचा में आ गइल आ एक हाथे पतई के बोरी घिसिआवत, भुनभुनात घरे ओर चल दिहलस। "हमरी जिनगी में एक्को दिन सुख चौन के नइखे। आगि लागो अइसन जिनगी में!"

घरे पहुँचि के फेरू से ऊहे सब कार! दूभि झारल, छाँटी काटल आ फेरू से चूल्ही लगे बइठि के सोचल कि का बनायीं आ का ना बनायीं! भूखि से पेट कुलबुलात रहे। बिहाने से मुँहे एगो दाना ना गइल रहे। एक लोटा पानी हरहरा के पी लिहलस बुधिया। तनी जीउ में जीउ आइल त बहरा आ के खेलावन के राहि ताके लागल। ओसारा में बइठल–बइठल अन्हार होखे लागल रहे। "ई आदमी हमार जिनगी हेवान क के छोड़ दिहले बा!" सोचते रहे कि झोरा लटकवले खेलावन आवत देखा गइलन। बुधिया ठाड़ हो गइल। जैसे खेलावन ओसारा में गोड़ धयिलें, ओकरी नाके जोर से भभक लागल। बीि ख कपारे ले चढ़ि गइल।

"आजुओ ढकोरि अइला? एक दिन पिअला बेगर ना रहि सकेला? तरकारी खातिर रुपया दिहले रहनी हँ। ऊहो पी लिहला? हमार त भागिए फूटल रहे कि तोहरा अइसन मरद मिलल! एसे निक त बाबूजी हमके कवनो नदी नहर में धकेल दिहलें रहितें। ई कुल बिपति त ना भोगतीं हम !" बिखियात बुधिया खेलावन की हाथे से झोरा झटक के छिनलस आ भीतर जाए लागल।

खेलावन के सब नासा उतरि गइल रहे आ भीतर के मरद हउहा उठल रहे। लपकि के बुधिया के झोंटा से पकड़लन आ खींचत अँगना में ले जाए लगलन।

"रुक ससुरी! तोर ढेर मुँह चलता। कल्हिए से ढेर फड़फड़ाताड़े तें। ले, हम तोर दिन बना देतानी। आजु मेहरारुन के दिन ह न! ले, हई ले!" अँगना के आवाज दुआरे ले सुनात रहे आ महिला दिवस के करेजा टीसत रहे।

❑❑

सेनुरिया–जर्मनी के परी कथा

शशि रंजन मिश्र

एगो अमीर आदमी के मेहरारू बेमार पड़ल आ ओकरा लागल कि अब उ ना बाँची त आपन लईकी के बोलवलस आ कहलस कि 'ए बाछी, निमन से रहिह। तहरा के भगवान रक्षा करिहें। हम स्वर्ग से तहरा के देखत रहब आ तहरा नजीके रहब।' ई कह के उ मू गइली।

उ लईकी रोज आपन माई के कब्र पर जाये आ खूब रोवे। एही बीच सर्दी आ गइल आ चारो ओर बरफे बरफ हो गइल त उ आपन माई के कब्र के उज्जर कपड़ा से ढाँक देलस। जब बसंत आइल आ बरफ पिघलल त फेर उ कपड़ा के हटवलस। ओने तबतक ओकर बाप दोसर बियाह कर ले ले।

ओह मेहरारू के दू गो बेटी रही सन। दूनों गोर आ सुंदर त रही स बाकि रही स दिल के करिया। ओकनी के आवते ओह सौतेली लईकी के दिन दुर्दिन हो गइल। उ लोग पार्लर चलावत रहे ओहिजा ले जाये से मना कर देल– 'ई मुरुख हमनी जोरे पार्लर में ना बइठि। अगर एकरा रोटी खाये के बा त अपने कमाए पड़ी आ रसोई के नोकरानी जोरे रहे पड़ी।

उ लोग ओह लईकी के सब सुंदर कपड़ा छिन लेल। मटमईल कपड़ा आ लकड़ी के जूता ओकरा के दे देल लोग। फेर मजाक बनावत कि हई राज कुमारी के देख लोग! ओकरा के रसोई में ले गइल। ओहिजा उ लईकी के खूब बुरा–भला कहल गइल।

उ लईकी के अब खूब मेहनत करे पड़े। ओकरा खूब फजीराहे जागे पड़े आ पानी ढोवे पड़े। उ लईकी आग जोरे, खाय बनावे आ बरतनों धोवे। एतनों पर ओकर सौतेली माई आ बहिन सब ओकरा के हमेशा चोट पहुंचावे के कोशिश करे। उ लोग मटर आ दाल के राख में छींट देस कि उ फेर से चुन बीन के साफ करे। साँझ के उ लईकी के बिछौना ना मिले त चूल्हा के राख के पास सो जाय। ओकर रूप रंग राख आ माटी से गंदा हो गइल त उ लोग ओकरा के चिढ़ावे खातिर उ लोग सेनुरिया कहे लागल।

एक दिन ओकर बाप मेला में जात रहले त पुछले कि तहरा लोग के का चाहीं?

बड़की सौतेली बहिन कहलस– 'सुन्नर कपड़ा'

छोटकी–'हमरा मोती आ जवाहरात चाहीं'

'आ सेनुरिया तोहरा का चाहीं?'– बाप पुछले

'बाबूजी, हमरा के उहे डाली तुड़ के लायीं जवन राउर टोपी के छुवत होखे आ खरोंच मारत होखे।

मेला से उ आदमी दूनों सौतेली बेटी खातिर कपड़ा, मोती आ गहना खरीदलस। जब उ घरे लौटत रहे त अ खरोट के जंगल से गुजरे लागल। ओहिजे एगो डाढ़ ओकर टोपी से टकराइल आ टोपी जमीन पर गिर गइल। उ आदमी उहे अखरोट के डाढ़ तुड़ के अपना जोरे ले आइल। दूनों सौतेली बेटीयन के कपड़ा, मोती, गहना आ सेनुरिया के अखरोट के डाढ़ मिलल।

सेनुरिया आपन माई के कब्र भीरी ओह अखरोट के डाढ़ के लगा देली आ एतना रोअली कि उनकर आँसू से जमीन भींज गइल। अखरोट के पेड़ बड़हन हो गइल। सेनुरिया रोज तीन बेर एह पेड़ के नीचे जास आ रो–रो के प्रार्थना करस। अब एगो उज्जर चिरईं हरमेशा ओह पेड़वा पर आवे आ ई जवन रो–रो के माँगस उ चिरंईया गिरा देवे।

एक बार ओह देश के राजा तीन दिन के उत्सव के मुनादी करवले। एहमें देश भर के सुन्नर–सुन्नर लईकी सब के बोलावल गइल रहे कि राजा के बेटा अपना खातिर दुल्हिन चुन सके। ई खबर सेनुरिया के सौतेली बहिनियनों लगे पहुंचल त उ खूब खुश भइली स।

उ सब सेनुरिया के बोलवली स– 'हमनी के बाल संवारऽ आ ककही करऽ। हमनी के जूता चमकाव आ हमनी के पेटी बान्हऽ। हमनी के राजा के महल में जवन उत्सव होता ओहमें जाइब जा।

सेनुरिया खुशी–खुशी सब काम कइली। ओकरो मन राजा के महल में जाके नाचे के रहे बाकि ओकर सौतेली माई मना कर देली कि तहरा लगे ना ढंग के कपड़ा बा ना जूता। अईसहीं नाच करे जईबु? ई ठीक नईखे।

सेनुरिया रोवत रही आ जाए खातिर पुछत रही। अंत में सौतेली माई कहली कि 'एक कटोरा दाल राख में मिलल बा। अगर दू घंटा में सब साफ कर देबू त हमनी जोरे चल सकेलू।'

लईकी पिछला दरवाजा से बगईचा में गइल आ चिरईं लोग के पुकरलस–

एहो कबूतर एहो पंडूक
आके हरऽ हमार दुख
सौतेली माई के ई चाल
राख में मिलवलस दाल
बढ़िया दाल से कटोरा धर
टूटल दाल से पेट भर

ओकर पुकार पर दूगो उज्जर कबूतर रसोई के ि खड़की से भीतर घुसलन स। फेर पाछे कछुआ आ ढेर चिरईं के झुंड चहकत चहकत पहुंचल आ राख के चारों ओर से घेर लेलस। कबूतरन के इशारा करते सब आपन चोंच से दाल के चुने लगले। एके घंटा में बढ़िया अनाज से कटोरा भर गइल। उ चिरईं सब वापस उड़ गइली सन।

सेनुरिया आपन सौतेली माई लगे कटोरा लेके गइली कि शायद अब जाये के मिल जाय ।

बाकि सौतेली माई कहली–'ना, तहरा लगे कपड़ा नईखे आ तू नाचे के ना जानेलु। सभे कोई तहरा पर हँसी।'

सेनुरिया रोवे लागली त सौतेली माई फेर कहली–'अगर तू एक घंटा में दू कटोरा दाल राख से अलग कर देबू त तू जा सकेलू।' उ सोचली कि ई बहुत कठिन काम बा जवन सेनुरिया से पूरा ना होई।

सेनुरिया फेर पिछला दरवाजा से बगईचा में गइल आ चिरईं लोग के पुकरलस–

एहो कबूतर एहो पंडूक
आके हरऽ हमार दुख
सौतेली माई के ई चाल
राख में मिलवलस दाल
बढ़िया दाल से कटोरा धर
टूटल दाल से पेट भर

ओकर पुकार पर फेर से दूगो कबूतर रसोई के ि खड़की से भीतर घुसल। फेर पाछे कछुआ आ ढेर चिरईं क झुंड चहकत–चहकत पहुंचल आ राख के चारों ओर से घेर लेलस। कबूतर सब के इशारा करते सब आपन चोंच से दाल के चुने लगले। अबकी आधा घंटा बीते से पहिलहीं अनाज से कटोरा भर गइल। उ चिरईं सब वापस उड़ गइली सन। सेनुरिया आपन सौतेली माई लगे दूनों कटोरा लेके गइली कि शायद अब जाये के मिल जाय ।

बाकि सौतेली माई कहली– 'एकर कवनों फायदा नइखे। तहरा लगे एको बढ़िया कपड़ा नईखे आ तहरा नाचे ना आवे एह से हमनी के शर्मिंदा होखे पड़ी।' एतना कह के उ मुंह मोड़ के आपन बेटी लोग जोरे चल गइली।

अब घर में सेनुरिया अकेले रही त अखरोट के पेड़ के नीचे आपन माई के कब्र पर गइली आ रोवे लगली–

ए अखरोट के चिरईं आव
हमार दुख तनी मेटाव
राजा महल हमहूँ जाइब
ओहिजा जाके नाच देखाइब
बाकिर कपड़ा–जूता फाटल
राख पोताइल पवन साटल
हमरा के तू कुछ पईसा द
चांदी सोना रूपा द
कीनब कपड़ा रूप संवारब
राजा के दरबार निहारब

उ चिरईं एगो सोना चाँदी के पोशाक, रेशम आ चाँदी के कशीदा कइल चप्पल सेनुरिया के देलस। सेनुरिया उहे पहिन के राजा के उत्सव में चल गइली। ओहिजा ना उनकर सौतेली माई पहचानली ना बहिन। उ लोग सोचल कवनों विदेशी राजकुमारी होई जवन सुनहरा पोशाक में बहुत सुंदर लागत रहे। उ लोग कबो ना सोंचल कि ई सेनुरिया हो सकेली। उनका लोग के अंदाज रहे कि उ त राख में बइठ के दाल बीनत होई। राजकुमार सेनुरिया के पास अइले आ हाथ पकड़ के ओकरा जोरे नाचे लगले। एकरा अलावे उ केकरो संगे ना नचले। केहु आ के संगे नाचे के कहे त कहस कि इहे हमार नाच के जोड़ीदार हई।

साँझ भइल त सुनारिया जाए के चाहे आ राजकुमार उनका के रोके लगले कि हमहूँ संगे चलब आ देखब कि ई केकर लईकी हिय। बाकि उ हाथ छोड़ा के भाग चलली आ आपन घर के भिरिये कबूतर के दबड़ा में कूद गइली।

राजकुमार ओह घर के मालिक के इंतेजार कईले आ जब उ आइल त कहले कि एगो अंजान लईकी कबूतर के दबड़ा में कूद गइल बिया।

सब बात सुन के उ आदमी सोच में पड़ल कि का उ सेनुरिया हो सकेले ?

उ एगो कुहाड़ी लाके दबड़ा तुड़ले बाकि ओहिजा केहू ना रहे आ जब घरे पहुंचले त देखले सेनुरिया गंदा

कपड़ा पहिरले राख भीरी लेटल बिया। ओहिजे चिमनी में मद्धिम–मद्धिम तेल के दिया जलत रहे। भइल का कि सेनुरिया जल्दी से कबूतर के दबड़ा से पीछे कूद गइल रही आ अखरोट के पेड़ ओर दउड़ गइल रही। ओहिजा आपन सुन्नर पोशाक उतार देली । पेड़ पर के चिरईं सब वापस ले गइल। सेनुरिया आपन पुरान कपड़ा पहिर के वापस रसोई में आ गइल रही।

अगिला दिन उत्सव फेर से शुरु भइल आ सेनुरिया के बाप, सौतेली माई–बहिन सभे फेर से राजा के महल चल गइल। सेनुरिया फेर अखरोट के पेड़ के पास गइली आ कहली–

ए अखरोट के चिरईं आव
हमार दुख तनी मेटाव
राजा महल हमहूँ जाइब
ओहिजा जाके नाच देखाइब
बाकिर कपड़ा जूता फाटल
राख पोताइल पवन साटल
हमरा के तू कुछ पईसा द
चांदी सोना रूपा द
किनब कपड़ा रूप संवारब
राजा के दरबार निहारब

उ चिरईं अबकी आउर सुन्नर कपड़ा देलस। सेनुरिया जब ओह पहिर के राजमहल गइली त सभे खूबसूरती पर हैरान रहे। राज कुमार त आवते हाथ पकड़ के नाचे लगले। केहु आउर संगे नाचे के कहे त कहस कि हमार नाच के जोड़ीदार इहे हई।

फेर साँझ भइल त सेनुरिया भाग चलली। राजकुमार पीछा कइले कि अबकी देखब कि ई केकरा घरे जा रहल बाड़ी। बाकि जब उ घरे तक पहुंचली त पीछे के रास्ते बगईचा में जा के नाशपाती के पेड़ पर चढ़ गइली। राजकुमार के पता ना लागल कि उ कहाँ गइली। ओकर बाप ओहिजा अइले त राजकुमार कहले कि एगो अंजान लईकी एही नाशपाती के पेड़ पर चढ़ल बिया।

बाप सोचले कि का उ सेनुरिया हो सकेले? उ एगो कुल्हाड़ी ला के पेड़ काट देले। बाकि ओहिजा केहु ना रहे। जब रसोई में पहुंचले त हरमेशा लेखा सेनुरिया ओहिजे राख पर सुतल मिलली। अबकियो बार सेनुरिया पेड़ से दोसरा ओरे कूद गइल रही आ अखरोट के चिरईं के पोशाक वापस कर के आपन पुरान कपड़ा पहिर ले ले रही।

तिसरको दिन जब ओकर बाप–माई–बहिन लोग चल गइल त सेनुरिया फेर से माई के कब्र पर जाके अ खरोट के पेड़ से कहलस–

ए अखरोट के चिरईं आव
हमार दुख तनी मेटाव
राजा महल हमहूँ जाइब
ओहिजा जाके नाच देखाइब
बाकिर कपड़ा जूता फाटल
राख पोताइल पवन साटल
हमरा के तू कुछ पईसा द
चांदी सोना रूपा द
किनब कपड़ा रूप संवारब
राजा के दरबार निहारब

अबकी बार चिरईं पहिले से आउर सुंदर पा. `शाक देलस। जुत्ती शुद्ध सोना के रहे । जब उ ई सब पहिर के उत्सव में पहुंचली त सभे हैरान। राजकुमार ओकरा छोड़ केहु संगे नचबे ना करे। केहु आउर संगे नाचे के कहे त कहस कि हमार नाच के जोड़ीदार इहे हई।

फेर साँझ भइल त सेनुरिया जाए के चहली। राजकुमार रोकत रह गइलन बाकि उ एतना तेजी से भगली कि राजकुमार पीछा ना कर पइले। अबकी राजकुमार जाल बिछईले रहले। उ पूरा सीढ़ी पर अलकतरा लगवा देले रहले । जइसहीं उ सीढ़ी से नीचे भगली उनकर बायाँ पैर के जुत्ती अलकतरा में फंस गइल। राजकुमार ओह जुत्ती के उठा लेले । उ छोट, ठोस आ शुद्ध सोना के बनल रहे।

अगिला सुबह उ जुत्ती लेके उहे आदमी लगे पहुंचले काहे से कि दू बार से उ अंजान लईकी ओहि आदमी के घर के पास से गायब होत रहे। उ ओह आदमी से कहले कि तहरे घरे के लईकी हिय आ जेकरा गोड़ में ई जुत्ती सही बैठी ओकरे से हम बियाह करब।

ई सुन के दूनों बहिन खुश भइली स काहे से कि ओकनी के गोड़ सुन्नर रहे। बड़की लईकी जुत्ती लेके घ ार में गइल आ अजमवलस। ओकर अँगूठा बड़ रहे आ जुत्ती छोट। ओकर माई एगो चाकू देली कि 'आपन गोड़ के अँगूठा काट द। जब रानी बनबू त कवन तहरा पैदल जाए के बा!'

उ लईकी आपन गोड़ के अँगूठा काट देलस आ जुत्ती पहिर लेलस। दरद के दबावत उ राजकुमार भीरी गइल। राजकुमार ओकरा के घोडा पर बइठा के ले चलले। जब उ लोग अखरोट के पेड़ से गुजरल त दू

गो कबूतर गावत रहन स –
गुटर गूँ, भाई गुटर गूँ
जुत्ती में लागल बाटे खून
कसत जुत्ती, कटल अँगूठा
दुल्हिन नईखी राजा के जोड़ा

राजकुमार जब लईकी के गोड़ देखले त ओहमें से खून बहत रहे। उ झूठी दुल्हिन के घरे वापस कर देले आ कहले कि दोसरका बहिन के कोशिश करे के चाहीं । उ घर में गइल आ जुत्ती अजम. वलस। ओकर सब अंगूरी त जुत्ती में घुसल बाकि एड़ी बड़ रहे। ओकर माई चाकू देके कहली कि एड़ी काट दे। रानी बनला के बाद तहरा कवन पैदल चले के बा!

लईकी आपन एड़ी से एक टूकड़ा काट देलस आ दरद के पी गइल। राजकुमार ओकरो के घोडा पर बईठा के चलले त अखरोट के पेड़ पर बइठल दूनों कबूतर कहले सन–

गुटर गूँ, भाई गुटर गूँ
जुत्ती में लागल बाटे खून
कसत जुत्ती आ कटल एड़ी
ई दुल्हिन से ना बैठी जोड़ी

राजकुमार जब लईकी के गोड़ देखले त ओहमें से खून बहत रहे। उ झूठी दुल्हिन के घरे वापस कर देले। आ ओकर बाप से पुछले –

'इहो लईकी ना हिय... का तोहरा घरे आउर दोसर लईकी बिया?'

'हमार पहिली मेहरारू से एगो लईकी बिया सेनुरिया... बाकि उ दुल्हिन बने लायक नईखे।' उ आदमी कहलस।

राजकुमार ओकरा के अपना लगे भेजे के कहले त सौतेली माई कहली कि रहे दीं, उ बहुत गंदा बिया। बाकि जब राजकुमार जोर देले त उ लोग सेनुरिया के बोलावल। सुनारिया पहिले आपन हाथ मुंह धोलस आ राजकुमार के आगे आइल। उ आपन लकड़ी के भारी जूता निकाल के राजकुमार के दिहल जुत्ती पहिरली त नाप सही आ गइल। आ जब ड़ा भइली त राजकुमार ओकर चेहरा देख पहचान लेले कि इहे लईकी हमरा जोरे नाचत रही। वह खुशी से चिल्लाये लागल– इहे हमार साँच के दुल्हिन हिय।

सौतेली माई आ बहिन लोग डर के मारे पीअर पड़ गइल। राजकुमार सेनुरिया के आपन घोडा पर बईठा के जईसहीं अखरोट के पेड़ के पास से गुजरले त अबकी दूनों कबूतर चिल्लाये लगलन स–

गुटर गूँ, भाई गुटर गूँ
जुत्ती में नईखे लागल खून
जुत्ती बइठल सही निशानी
इहे दुल्हिन राजा के रानी

एकरा बाद उ दूनों कबूतर पेड़ से उतर के सेनुरिया के कंधा पर बईठ गइलन सन। एगो दाहिना ओर त दुसरका बायाँ ओर।

जब राजकुमार के शादी होखे लागल त दूनों सौतेली बहिन जवन झूठ के पुलिंदा रही सन, उहो अइली सन कि सेनुरिया से मिल के आपनों भाग्य सुध रे। जब दूल्हा दुल्हिन गिरिजाघर में गइल त बड़की बहिन दायें आ छोटकी बाएँ चलल। कबूतर ओहनी के एक–एक गो आँख निकाल लेलन स। आ जब उ लोग गिरिजा से बाहर आइल त छोटकी दायें आ बड़की बाएँ रहे । दूनों कबतर फेर से बांचल आँख निकाल लेलन स। आ एह तरह से दूनों जानी के आपन दुष्टई के सजा जीवन भर खाती आन्हर बन के मिलल।

(जैकॉब आ विल्हम ग्रीम नाम के दू भाई जे जर्मनी रहे वाला रहे लोग। उ लोग परी कथा लिखत रहे। उहे लोग के लिखल कहानी सिंड्रेला 1812 में छपल। बाद में मूल कहानी के अनेक तरह से तोड़ मरोड़ के पेश कइल गइल। भोजपुरी के भावानुवाद मूल कहानी से बा। सिंडर (ब्यदकमत) के माने राख होला जवना के फेंक दियाला। एही से सिंड्रेला बनल जवना के माने उपेक्षित होला। भोजपुरी से भाव जोड़े खातिर सिंड्रेला के सेनुरिया नाम कर दियाइल बा)

❑❑

❍ आरा, बिहार

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

से प्रकाशित भोजपुरी के श्रेष्ठ किताब

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

भोजपुरी साहित्य सरिता

सहित्यांगन

भोजपुरी के एक मात्र मासिक पत्रिका
'भोजपुरी साहित्य सरिता' के सदस्यता के विवरण

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 600	चार बरिस : 2100	आजीवन : 5100

बैंक विवरण : ICICI Bank खाता संख्या – 157701513299

IFSC Code : ICIC0001577 (निखिल गौरव द्विवेदी)

रउरा 9999614657 पर paytm के माध्यम से पेमेंट कS के सदस्या ले सकेनी।

नोट : रउरा पेमेंट के बाद पावती अपना पूरा पता के साथ bhojpurissarita@gmail.com पर ई-मेल करे के पड़ी।